आचार्य श्री प्रवचन

(24.11.2015 से 28.04.2016 तक)

भाग–1

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

संकलन :
मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

'धन की नहीं धर्म की बात करो'

24/11/2015 **सांय 4.30**

रहली पटनागंज की सर्वतोभद्र क्षेत्र के नाम से घोषणा। चारो तरफ से रास्ता है। बीना बारहा गये तब नदी चढ़ी हुयी थी। एक दिन की प्रतीक्षा करनी पड़ी। बुंदेलखण्ड के लोग अपनी आय से कुछ न कुछ निकालते रहते हैं। कार्यकर्ता के साथ मिलकर काम करे। पीछे न चले साथ चले। हम धन की बात नहीं धर्म की बात करते है। पढ़े लिखे युवकों द्वारा खेती में वर्षा आदि से लाभ न होने से उनको रोजगार, कार्य में लगाया है, वे नयी क्रान्ति लायेंगे। आपस में मिलकर चलें। हमे ये बनना है-3, नहीं अपितु हमे ये करना है-3 कहें। जनता के उत्साह को प्रोत्साहित करते रहे। गुरुजी कहते है सागर कितने बार गये ये देखो।

''काल बिना कुछ नहीं''

25/11/2015, रहली **सांय 4.40**

जब काल भी शामिल हो जाता है तो कार्य पूर्ण देखने में आता है। ध्वजा फहराती है पर अपने आ प नहीं हवा न चले तो कुछ नहीं उसी प्रकार काल भी 6 द्रव्य में एक है।

हमें प्रतिदिन प्रतीक्षा करनी पड़ती है। मोह को बढ़ा हो तो प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती पर मोह घटाना हो तो बार-बार प्रतीक्षा करवाते हो। कंवरसाहब की भांति आपको मनाना पड़ता है। वो जानते हैं कि यह अवसर है करने का समय कम रह गया है।

''तापत्रय से बचें''

26/11/2015, गढ़ाकोटा **प्रात: 9.15**

जीव जगत की विवक्षा को आचार्यों ने बहुत गहराई से समझाया। वही चढ़ाना है जो उचित है। धान अंकुरित हो सकता है चावल नहीं। प्रत्येक धार्मिक क्रियाओं को बड़ी सावधानी के साथ करना चाहिये। आचार्यों ने हमे प्रत्येक कार्य हेतू जाग्रत किया है। कैसे दर्शन करें- कैसे पूजन करें। जिन्हें लाडू चढ़ाया उन्हें भूख नहीं लगती। जन्म-जरा-मृत्य= पत्रय कहलाते हैं। तीनों ताप देने वाले है संस्कार जो पढ़े हैं उन्हें देखें अच्छे है या बुरे। ये भोजन नहीं भजन है। 15 मीनिट पर्याप्त है।

'जो चाहो सो पाओ'

28/11/15 **प्रात: 9-30**

भरोसा पक्का होगा तभी मुक्ति मिलेगी। काम किये बिना ही परिणाम चाहते हो। जिस ओर भगवान गये है उसी ओर चलना है। मंगलाचरण पूजन करते जाओ करो कुछ नहीं कैसे पार होंगे। दुनिया की बात चाहोगे तो दुनिया ही मिलेगी। तुम भीतर जाओ।

'देव करते है नमन'

29/11/15 **सांय 4:15**

देव बनकर स्वर्गों में इस (पंचकल्याणक) प्रकार के महोत्सव नहीं होते-यहाँ आकर वे देव इस प्रकार का महोत्सव कर सकते है। पर इस मानव के कारण ही उनको लाभ मिल रहा है। देव हमेशा अधर में लटके रहते है। मानव को सदैव धरती का आधार रहता है। मनुष्य की विशेषता है कि वह अहिंसादि व्रतों में निष्ठ रहते है। शापानुगृह शक्ति देवो में होती है। महापुरुषो द्वारा हिंसा करने वाले को भी क्षमा। अयोध्या-तीन लोक से यहाँ जीव आता है उसकी सदैव जीत होती है उसे कोई युद्ध कर जीत नहीं सकता। उन्हें नींद नहीं आती जो अधर में लटके है। यहाँ आराम भी मिलता है। श्रम भी है। उनके पसीना भी नहीं आता है। आपका वे कुछ भी नहीं बिगाड़ कर सकते। आपको अपने ही पाप कर्म का फल मिलता है। देवावितस्स पणंभत्ति--एक माला लेकर फेरना शुरू करो सब आ जायेगे। आप सभी ऐसे भक्त बनों-कि भगवान बनने में देरी नहीं लगना चाहिये। किसी भी स्थिति में इण्डिया नहीं कहना। यह भारत हैं-भारत के नाम से। हम विमानवासी एवं वाहन वाले नहीं यहाँ से जाने में समय लगेगा।

'भावना दूसरो के कल्याण की'

1/12/15 **प्रात: 9-40**

मंच पर प्रतिनिधि मण्डल है। ये निधि नहीं प्रतिनिधि है। निधि तो सामने बैठकर पूजा कर रहे है। आपको चयन करके भेंजा है। मुख्य निधि तो वे है जो आज गर्भ में आये है। जंगल में बैठकर भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सकता है। पर में लगा हुआ है। कोई संदेह नही पर के कल्याण की भावना विरले ही कर सकते है। विरला भारत में बहुत नाम आता है। आयोजन का प्रयोजन दृष्टि में रखते हैं? हमारा प्रयोजन अपने कल्याण के साथ-साथ दूसरे का भी कल्याण हो जाये ऐसी भावना रखो। इस नश्वर जीवन को कोई अविनश्वर बना ही नही सकता पर के साथ संबंध रखते हुये भी अपना कल्याण कर सकते है। सामने वाला स्वाहा बोलता है तो अर्घ में मूल्य बढ़ जाता है। अनर्घ की प्राप्ति हेतु अमूल्य चढ़ाते हो। पर का कल्याण पहले हो तो मेरा नंबर आ जायेगा। हटना ठीक नही हट सकते नहीं हट करना ठीक

नहीं। जमीन से ऊपर उठने वाला कभी गिरता नहीं। सह्य खेलकर आने वाला घोटाले में आ जाता है। सबका भला उसमें मेरा भी भला हो जायेगा। कितनी भी कठिनाई क्यों न आ जाये उनकी दया-अनुकम्पा-करूणा में कमी नहीं हो सकती ये स्वभाव है आप सबको व्यस्त देखकर मुझे प्रसन्नता होती है। रोजी-रोटी मिल जाये- 3 तंत्र ही काम शेष रोजगार अपने आत्म कल्याण का भी होना चाहिये। मूल जमीन है। उससे जुड़े रहना परम आवश्यकहै। माता-पिता बेटा हो- चलना हो-दौड़ना हो गैर लाइन न जाये। दुखियों के दुःख मिटाने की भावना करने से अपना दुःख स्वयं ही भूल जाता है। भगवान के चरणो की छाया में ही सुख मिल सकता है। हार-मुकुट पहने हो। भूख के समय हार मुकुट नहीं। दूर से नमोऽस्तु।

'क्षयोपशम या क्षायिक'

2-12-15 **प्रातः 10 बजे**

पाण्डाल नहीं गये 2-3 बार बोला। शोर लग गयी है अभी नहीं जाना। तर्क नहीं वैराग्य चाहिये। प्रत्यक्ष संकेत हो परोक्ष नहीं। स्वतः प्रमाण वाला ही संकेत है। अवधिज्ञानी को नमस्कार किया गया है पर किस अवधिज्ञानी को-जो रत्नत्रय से संयुक्त हो। जिनसेन स्वामी ने यह बताया। क्षयोपशम सम्यग्दर्शन धारी मुनिराज है और क्षायिक सम्यग्दृष्टि श्रावक-तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने वाला, बारह भावना भाने वाला वह श्रावक उन मुनिराज को आहार देगा। वे मुनिराज उसकी विनय/विधि/आदर को देखेंगे/आप 28 मूलगुण देखे हम 7 गुण देखेंगे। प्रश्न-दर्शन ज्ञान चरित्र में पहले दर्शन को क्यों रखा-गुणो की अपेक्षा यह क्रम है।

'कारण बिना कार्य कैसे'

3/12/2015 **प्रातः 9-15 बजे**

वैद्य वही जो रोग को हटाने का उपक्रम करता है। वात-पित्त-कफ के माध्यम से रोग होता है यही मात्र कारण होता है- आयुर्वेद (प्रा.चि.)में। परन्तु ऐलोपेथी वाले इसे स्वीकार नहीं करते। वे रोग होना अकारण मानते है। अपने यहाँ कारण के बिना कार्य की सिद्धि नहीं होती है। न्याय का सूत्र है- कारण बिना कार्य कैसे। ''प्रज्ञाप्त काल'' आधुनिक युग में इसे मनचलापन कहते है। बच्चा ही मनचलापन करता है। पर बड़े भी करें तो क्या होगा। बच्चो को तो समझाने का प्रयास किया जाता है- वह जो चाहता है उसकी पूर्ति नहीं करता। वात-पित्त-कफ का प्रभाव मन पर भी पड़ता है। आयुर्वेद का यह सिद्धान्त बहुत बड़ा है। मन को संयमित रखेंगे तो त्रिदोष की विषमता स्वतः दूर हो जायेगी। हमारा भी कल्याण हो जाये। कल्याण चाहते है- पंच कल्याण नहीं। मांगना भी नहीं, नहीं तो निदान हो जायेगा। पंचकल्याण नहीं भगवान का समवशरण मिल जाये तो भी कल्याण हो जायेगा जिसकी मांग की जाती है वह जल्दी नहीं मिलता है। शक्कर एवं गुड़ में बहुत अंतर है। शक्कर चक्कर द्वार है। गुड़ की प्राप्ति अलग ही प्रकार से होती है।

प्राचीन चिकित्सा में जिससे बचना है, इस बात का पहले ध्यान रखा जाता है। तप में कल्याणक का अर्थ निहित है। उन्होंने ऐसे कार्य किये जिसका फल उन्हें मिला। माँगना नहीं है मात्र फल की ओर दृष्टि रखो। कर्म करोगे तो फल तो मिलेगा ही। स्मरण में करने से भी कर्मों की निर्जरा होती है। कर्म को बलात् उदय में लाकर नष्टकर दिया जाता है। कर्म को बलात् उदय में लाकर नष्ट कर दिया जाता है। कर्म को गौण करने से कुछ नहीं होगा। आप अपना कर्त्तव्य करते जाइये जिसका अर्जन होगा वह तो होगा ही। रोग कर्मोदय से होता है। जो शक्कर नहीं खाता–उसे भी मधुमेह होता है। जानवरों को भी होता है। भावो के माध्यम से बंध एवं निर्जरा दोनो हो सकती है। तप कल्याण से निर्जरा नहीं तप से निर्जरा होती है। आज प्रातः ब्रह्मचारियों ने दीक्षा के लिये उपवास माँगा। कितने चतुर है। कर्म निर्जरा में चतुराई दिखाओ तो हम माने। इन कल्याणकों में देवी–देवता आते है, इसलिये कल्याणक कहा है और कोई अर्थ नहीं है। ''इच्छा निरोधः तपः'' इससे स्पर्धा कर सकते है। हम तो स्पर्धा का समर्थन करते है, जिस दिशा में कदम उठाओगे उसी से काम होगा। इच्छा निरोध से स्पर्धा करो। मां बेटे की नटखट को जान जाती है। उनका कल्याण हो जाये– अतिशयोक्ति नहीं वे तीर्थंकर है। हमारा कल्याण तो तप से ही होगा। दीक्षा का उपवास नहीं मांगना– हम ना भी नहीं ओर हाँ भी नहीं कहेंगे। आप जाने। ऊँ नमः।

'विवाह संस्कार कैसे हो'

5/12/15 **प्रातः 9:40**

* गहनता को ओर गहन नहीं सरलीकरण करके प्रस्तुत करना चाहिए
* समस्यायें आती है–समय पर समाधान भी होता है, हम हमेशा शतरंज चाल से चले–दक्षिण में बुद्धिबल कहते है न्याय में तर्क–व्याप्ति आदि से प्रमाणित किया जाता है।
* हमारे संत पहले से ही सारी समस्यायें सुलझा चुके है। गुफाओं में बैठकर। अकेले बैठते है पर अकेले सोचते नहीं है। ऋषभदेव ने आहार लिया। मेरे द्वारा इनका कल्याण कैसे होगा यह बताया। आधार पूर्वजो का लेना। वे भले की बात करते है। 4 अक्षर की इस कविता ने मेरा मंचन कर डाला। किसी भी अन्य ग्रन्थ में जैन धर्म का उल्लेख क्यों नहीं, गौ संक्षरण की बात का क्यों नहीं। वीरसेन महाराज ने धवला में कहा– या श्री सा गौ। श्री लक्ष्मी कौन सी गौ। व्याकरणाचार्य भी है श्री स्त्री में भी पुर्लिंग में भी। सो स्त्रीलिंग है। विवाह की बात करते हो– महापुराण में विवाह एवं बच्चो के संस्कार की बात क्यों आयी। ''दुःख निवृत्ति प्रवीचार'' पीड़ा के अतिरेक में न स्व का कल्याण न पर का कल्याण। पहले इस पीड़ा को हटाओ। स्वदार संतोष व्रत भी ब्रह्मचर्य है। अब नाभिराय ग्रहस्थ नहीं रहे वानप्रस्थ आश्रम में आ गये। आगे वृषभ जाने वे ही सब कुछ करेंगे। संतान के बिना धर्म कभी आगे बढ़ नहीं सकता। डेम नहीं बनाना। प्रवाह बनाना है। पानी आगे न बढकर ऊपर बढ़ने लगा है। संग्रह सीमित होना चाहिये परिग्रह नहीं होना चाहिये। वर्षा आ जाये तो डेम खोलो बिना विवाह– प्रवाहित हुआ क्या–

पवित्र मानव जीवन का रहस्य है कृषि जीवन। वे सूत्र वेत्ता थे और सूत्र सृष्टा भी थे। छोटी सी पुस्तक–चोटी के विद्वान भी नहीं पढ़ सके है। कृषि करो– बैल–कहाँ से– या श्री सा गौ। एक विद्वान ने कहा पति–पत्नि दोनो को अकेले माने। दम्पत्ति–दमित पति इति दम्पत्ति– दमित किया गृह मंत्री श्रमण ही एकांकी हो सकता है। आप तो डबल ही होंगे। पाँच तीर्थंकर ही बालब्रह्मचारी अपवाद है। पर 19 विवाहित। बीज बोओ फल लेओ। फिर बीज बोओ ये प्रवाह चलते रहना चाहिये–धर्म का प्रवाह तभी होगा। जो निर्देशक का काम लिये बिना चल सकता है चले अन्यथा मिलकर सहयोग ले। बूंद–बूंद के मिलन से जल में गति आ जाय– 1–9 तक मात्र ईकाई में ही संख्या है। 1 से 9 तक ही संख्या है। गुरुजी–व्यक्ति का निर्माण करो संस्कार के माध्यम से। आधार। आगम सहित चले तो सब ठीक होगा। क्षेमं सर्व प्रजानां। हम तो राजा नहीं महाराज है। कन्या+आदान नहीं कन्या+दान ठीक है। दान ऐसे ही थोड़े सोच समझकर दूँ, दूसरा भिखारी थोड़ी ही है। पिताजी को बुलाकर लाओ पहले देखलो की आप योग्य है या नहीं। विदेशी पद्धति का अनुकरण करने वालो क्या जानोगे भारत की विवाह पद्धति को महापुराण को खोलिये। विवाह क्यों एवं विवाह के बाद भी कैसे रहना सब कुछ दिया है। विदेश में एक व्यक्ति ने 80 बार विवाह किया क्या है भारत में एक ही बार विवाह होता है। उसे चाबी दी जाती है। या श्री सा गौ। मूकमाटी में वर्ण संकर नहीं वर्ण लाभ हो। दूध में पानी हो, अकुआ का दूध न हो। कन्या फोकट में भी मिल जाये तो भी नहीं लेना। हाथी फोकट में भी मिले तो नहीं लेना। शीलवती हो। सीता की तरह मुझे छोड़ा वैसे धर्म को नहीं छोड़ना। प्रजा का रक्षण करना राम का कर्त्तव्य है। मर्यादा भंग नहीं हो जाये।

आओ करे क्षमा

7–12–15 **प्रातः 10.00**

प्रत्येक कार्य में गलती होना स्वभाविक है, वर्तमान में 33 नं. वाले को भी उत्तीर्ण कहा जाता है। कार्यकर्त्ताओं के उत्साह के लिये एवं आगे बढ़ाने के लिये गलती बताना जरूरी है। गलती होना स्वभाव है पर जानकर नहीं करना है। जल ठण्डे स्वभाव वाला होता है– अग्नि के संपर्क से वह गरम हो जाता है। गरम पानी भी अग्नि को बुझाने की सामर्थ्य रखता है। कार्यकर्ता भी गरम हो जाता है, पर उनका मन्तव्य समझ लेना चाहिये, वे गलती भी कर सकते हैं पर भाव गलती करने का नहीं होता? कार्यकर्ता के गलती करने पर महाराज गुस्सा हो जाते है। क्यों ठीक है न। कान भी पकड़ना पड़ता है, पुचकारने मात्र से काम नहीं चलेगा। कान में पांइन्ट भी होते है। पहले के राजा–कौन कान पकड़े, हाँ छेद कराते है तो पकड़ में आता है। उनके कुण्डल हमेशा कान खेंचते है। बड़े राजओं को भी यह चेत्तावनी होती है। आपस में क्षमा करे– क्षमा माँगे यही सही समापन समारोह है।

'लकडी या कंकड'

9-12-15 **प्रात: 9-30**

छोटा सा भी कंकड़ क्यों न हो किनारे पर खड़े होकर छोड़ दिया और वह डूब गया। बहुत बड़ी लकड़ी का लठ् छोड़ दिया छोड़ दिया वह जाकर तैरता रहता है। सम्यग्दृष्टि जीव बहुत सारा परिग्रह होते हुये भी उसके प्रति निरीह रहता है, इसलिये दुर्गति का पात्र नहीं होता। सम्यग्दृष्टि के अभाव में आशा और मोह होने से थोड़ा सा भी परिग्रह उसे डुबा देता है। आप क्या बनना चाहते है। लकड़ी या कंकड़। सोच लो।

'नीचे गिराता है निदान'

10-12-15 **प्रात: 9-30**

एक-एक दिन कम होता जा रहा है। कल संस्कारो की बात की थी। 16 स्वप्न के संकेत नाभिराय के द्वारा मरूदेवी को हो चुके है। वर्तमान में आनंद का अनुभव करना चाहते है। जो चाहते है वे गंभीर रहते है। तटस्थ, चिरस्थायी, अनंत सुख मुक्ति की उपलब्धि तभी होगी। अलौकिक का अर्थ यही है जो संसारी को न हो। आकुलता न हो तभी परिपक्वता होती है। प्राथमिक दशा में होता है। तटो पर लहरे टकराती है पर गहराई में जाने के बाद लहरे समाप्त हो जाती है। सागर में हमेशा लहरे होती रहती है- यह स्वभाव है, पर सागर कभी तटो का उल्लंघन नहीं करता है। तीन शल्य माया, मिथ्या और निदान। जिससे बचना होता है उसे हमेशा-हमेशा सामने रखना चाहिये। सेठ-साहूकार आदि को बाग-बगीचे होते है बावड़ी (स्वीमिंग पुल) होता है। 8-10 सीढी चढ़कर बीच में कूदना होता है। जितना ऊपर उछलेगा वापस उतना ही नीचे जायेगा। इसी प्रकार संसारी प्राणी चमकीले पदार्थो को देखकर ऐसा सोचता है कि हमारी पूजा/तपस्या आदि का फल ऐसा मिले। इतना ही मिलेगा ये निदान शल्य है। फिर वहाँ से पाताल में जायेगा। पंचेन्द्रियों के विषयों को आपको छोड़ देना चाहिये। ''नहिं शुभस्य उपलब्धि-इच्छा मात्र स्यन'' सांसारिक सुख-दु:ख मिलना साता-असाता कर्म पर निर्भर है। दु:खी तभी कर पायेगा जब आपका असाता का उदय हो। सुखी भी तभी होंगे जब साता कर्म का उदय हो। प्राय: पुराण ग्रन्थों में पढने में आता है कि जो इस प्रकार का निदान करे है वे धरातल में चले गये। चाहने से नहीं मिलता। पूजा-भक्ति का उद्देश्य कर्मों की निर्जरा हो। मोक्षमार्ग की भावना हो। चक्रवर्ती पद भी निदान के माध्यम से ही मिल सकता है। पर बाद में नरक भी जाते है। निदान से चक्रवर्ती बने बाद में दो चक्रवर्ती नरक भी गये। हलधर आदि का पद, तीर्थंकर, सौधर्मइन्द्र आदि का पद निदान के माध्यम से नहीं मिलते। कुछ ऐसे पद जिनके लिए कर्त्तव्य करना ही जरूरी है। देव लोगों सुन रहे हो क्या? वहाँ बहुत चमक है। वे अधर में है धरती का आधार नहीं-तपस्या का आधार नहीं है। जो कमाई की है- उसको खर्च करने गये हो पर...। आज जो Loan पद्धति है वैसा नहीं। वहाँ भी पूजा-पाठ खर्च नहीं है। इच्छा निरोध: तप: बच्चों को भी स्वीमिंग पूल का उदाहरण सुना देना। वैयावृत्ति, दान, तप-भक्ति आदि कर्त्तव्य से हमे कुछ मिल जाये ऐसा भाव कभी नहीं करना चाहिये। हमारे संतो ने उपकार किया पर आप हमारे ऊपर निदान नहीं करना।

अहिंसा परमो धर्म की जय

'कुँए का पानी'

11-12-15 **प्रातः 9-15**

आज वर्तमान में जो गतिविधियाँ होती है- वे पहले नहीं होती थी। वो क्या था। प्रातः काल रोज जल्दी उठना- पानी भरना। कोई नदी कोई बावड़ी कोई कूप से लाना। हम कूप की बात करना चाहते है। ऊपर से घड़े को ड़ाला- गले पर रस्सी बांधकर। ज्यों ही पानी तक घड़ा पहुँचता है- हिलाने से कुछ नहीं होता- थोड़ा सा छोड़ उठाया त्यों ही लुड़क गया-पानी भरने के लिये 2-3 feet रस्सी ढ़ीली छोर देते है। घड़ा भीतर तो जायेगा ही नहीं रस्सी जो हमारे हाथ में है। विश्वास है। अब दो हाथ तक तो पता ही नहीं चलता ज्यों ही पानी को 1/2 अंगुल भी ऊपर आया कमर टेडी हो गयी, सामने नहीं अब पीछे झुकेंगे। पीछे की ओर तनाव रखकर रस्सी को खीचेंगे। धीरे-धीरे पूरी शक्ति लगानी पड़ती है। पहले वह वजन कहाँ चला गया था जब पानी में था। पहले 20 kg वजन कहाँ चला गया था। पानी में हवा नहीं है। हवा के ऊपर ही भार का पता चलता है। पहले इसीलिये भार ढोने में जलयान का प्रयोग होता था आज पेट्रोल का प्रयोग होता है। मछली आदि भी जल में रहते है वे अल्प वायु से अपना काम चला लेते है-आप लोग भी हवा में आये की बस हवा लग जाती है। उपरील बाधा लग जायेगी। विदेशी हवा से आप लोग बच जाओ। भारतीय भीतरी प्राण वायु को लेते है। उपरिल हवा का मतलब भूत लगना है। आप लोग भूत से बचना चाहते है। जिनके पास था- फेंक दिया अपने आप बच गये। ज्यादा हवा में आओगे तो दिक्कत होगी। पहले के लोग संग्रह करते थे पर परिग्रह नहीं रखते थे। संग्रह का अर्थ अलग है- परिग्रह नहीं होना चाहिये। Exp.एक किसान 10 feet पानी (सुबह वाला)। पानी उतना ही उसने सोचा पानी को भूत लग गया इसी को भूत कहते है। परिग्रह है। दूकान चलाते हो तो उसी अनुपात में निकालना तो पड़ेगा। नहीं निकालोगे तो ऐसे (पूजा-पंचकल्याणक का ईशारा) निकालना पड़ेगा। हम बाहर लाना नहीं चाहते- होश-हवास बनाकर रखो। पानी में हवा तो है, पर वह घड़े पर दबाव नहीं ड़ाल पाती है। जैसे ही बाहर आया मालूम चल जाता है-''कितने पानी में है आप''। मूर्च्छा से बचिये। परिग्रह न हो पाये। ये भी अतिशय है रहली का। जन्म कल्याणक को आता नहीं। शोर में मेरा क्या काम। परन्तु यहाँ माल बिक गया इसलिये हम यहाँ आ गये। मछली के पानी में प्राण सुरक्षित रहते हे आप रहो तो प्राण चले जायेंगे। ऐसे ही मछली बाहर आयेगी तो प्राण चले जायेंगे। क्यों छोटे लड़के को दूध पिलाओ तो छोटी चम्मच से पिलाया जाता है। प्राण वायु की मात्रा ज्यादा होने से वह प्राण लेवा हो जाती है। पानी का दूसरा नाम कोषकारों ने विष भी लिखा है। अतिमात्रा में एवं अतिअल्प मात्रा दोनों में मछली या आप के प्राण निकल जाते है। ज्यादा नहीं देंगे बस इतना ही। नहीं तो परिग्रह हो जायेगा। मध्यान्ह मे फिर देख लेंगे। समय तो आज आप ही देंगे कल से हमारा समय आ जायेगा।

'दूध और घी की अनुभूति'

12-12-15 **प्रातः 9-30**

सुनो- आत्मा इस शरीर में है जैसे लकड़ी में अग्नि, तिल में तेल और कनक पाषाण में स्वर्ण की भांति। इसमें कोई अविश्वास नहीं। कुछ लोगो को अपने घर का श्रद्धान है। भ्रम है कि चारित्र की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि अनुभूति तो हो ही चुकी है। ऐसा है तो दूध में घी का अनुभव कर लो। थोड़ा सा दूध ले लो और सूँघ लो। अनुभव अलग है और श्रद्धान अलग है। फिर भी घी मान रहे हो तो हम पूँछते है आप लोग घी की आरती क्यों दूध की आरती उतारो। दूध में घी का अनुभव होना और श्रद्धान होना अलग है रागानुभूति है। आत्मा झलक रही है। छलक रही है। श्रद्धान त्रैकालिक होता है, अनुभूति वर्तमान ही हुआ करती है। अभी तो आत्मानुभूति छलक रही है। दूध में मुख नहीं दिखेगा घी में मुख दिखेगा। भ्रम को दूर कर दो। दूध में घी है यह श्रद्धान है पर अनुभूति नहीं। पार्टी बदल लो तभी अनुभूति होगी।

फेरी-फेरे काटने वाली'

14-12-15 **प्रातः 9-40**

आज भगवान ने वह पा लिया जो पाना था। सिद्ध भगवान हो गये। अरिहन्त से बड़े है पर अरिहन्त से हमे ज्ञात हुआ इनके बारे में। कर्म रज नष्ट हो गई। आयुकर्म का एक प्रदेश भी शेष रहे तो भी संसार में रहेंगे। फेरी है-फेरे को काटने वाली है।

रविवारीय प्रवचन

20-12-15 **दोपहर- 3-30**

बाडा वही है पात्र चयन के समय जगह नहीं भी हो ऐसा क्यों पैसा हजम-मेला खतम। मेला के बाद ऐसा ही होता है। पुराण-पुरुष कभी पुराने नहीं होते। वे तो हमेशा-हमेशा युगीन समस्याओं का समाधान देता रहता है। युग पर ऐसे व्यक्तित्व की छाप होती है- जो पुराण होते हुये भी नवीन बनी रहती है। पुराण कभी पुराना नही होता। रामायण का प्रसंग है। उस कथा का भाव/ कथ्य आज भी प्रासंगिक है। क्योंकि किसी भी रूप में वह राजा नहीं होते हुये भी जनता की भलाई का उद्देश्य होता है। उद्धार हो ऐसी भावना पुराण पुरुष रखते है। सिंहपुर से चांदपुर के बीच में मुडैरी पड़ी- डोंग रिया एक गांव पड़ा। कार-बस- मोटर साइकिल वाले नहीं जा सकते है। वह तो महाराजमार्ग है। अनंतपुरा वाले भी सोचते रहे कि महाराज कहाँ गये। चांदपुर में मुकाम हुआ- सुबह बिहार हो गया। अबकी बार सुबह पहुँचने की भावना थी। मार्ग में एक विशाल वट वृक्ष जैसा आम का वृक्ष था। उसके नीचे 500 गैया भी बैठ सकती है। जिसने लगाया होगा उसके भाव होंगे फल-छाया, विश्राम आदि ले सकें। जब घास भी सूख जाती है तब

जानवर भी उसके नीचे बैठ सकता है। उस किसान के भीतर वह विशालता थी। पुराणपुरुष ऐसे ही होते है उनके विचारो में कभी संकीर्णता नहीं होती विशालता होती है। आम के पेड़ लगाने वाले के लिए कहावत– न तो उसे छाया न उसे फल खाने को मिलेंगे। ऐसे विशाल वृक्षों के नीचे देवगण भी रमते है। स्वर्ग में अमरावती नंदनवन है वहाँ भ्रमरो का मन नहीं उन्हें भी जंगल के पेड़–बगीचे आदि अच्छे लगते है। कोठी की छव फाड़कर सेठ केयहाँ नहीं बरसते हाँ छप्पर फाड़ के देता है– ये तो सुना है। छप्पर किसान के पास है। होगा। रहली वाले भी छप्पर वाले ही है। पुराण पुरुषो ने इस कथा प्रसंग को अपने अनुसार रखा। रविवार को आज बाजार का दिन–हमारा भी बाजार का दिन है। अपने–अपने माल की गुणवत्ता है। उधार देते ही नहीं। सब नकद लेते है। सागर–दिल्ली वाले भी हमारा माल लेने आते है। जीवन व्रत क्या है– उसे पढ़े। प्रसंग है कृतांत वक्र जाओ सीता रानी को यात्रा कराके ले आओ। हम बार–बार कहते है– हम जब यात्रा में ही है तो फिर कौन सी यात्रा का विकल्प है। अंतः वह यात्रा झूठी नहीं थी। आप लोग–सुबह जाओ–मध्यान में जाओ– अंथऊ को लोटकर आओ। आने के साथ ही जाने का टिकिट भी साथ लेकर आते है। हम लोगों की मंजिल तक पहुँचने तक यात्रा चलती ही रहेगी। घोड़े तैयार–सब लोग समझ रहे है यात्रा शुरू–घोड़े भी सोच रहे होंगे। कृतांतवक्र भी सोच रहा होगा। धूल उड़ गयी– आसमान में उड़ गयी। पीठ भी धीरे–धीरे छोटी होती गयी ओर दिखना बंद हो गयी। राम को अच्छा लगा। ये प्रसंग बना–सब अपना ही रोना रोते है। लो प्रसन्नता का विषय–अब कोई विकल्प नहीं। जनता में किसी प्रकार से गलत सोच न आये यदि ऐसा होगा तो कर्त्तव्य से विमुख होने की संभावना रहती है। यह विशेष अंग–प्रसंग है। यात्रा के बहाने भयानक जंगल में पहुँच गये– दिन में भी अंधेरा रहता है। मनुष्य का आवागमन नहीं–पशु पक्षी सिंह चीते आदि का राज वहाँ पर है। मातेश्वरी–राजा की आज्ञा ही मेरा जीवन/ मेरा प्राण है। राजा की आज्ञा ही सब कुछ है। आँखों में पानी। आप लोग यात्रा पर वहीं जहाँ व्यवस्था हो। बड़े बाबा के यहाँ आदि व्यवस्था न हो तो हम तो नहीं आ सकते। ऐसी वह यात्रा– बोलने की बनी नहीं। मैं जा रहा हूँ। राजा की आज्ञा है। ठहरो। अभी यात्रा कहाँ हुयी । बहुत समझदार थी वह रानी– राजा कितने थे पता नहीं। हर घड़ी में वह स्थिर रही। मुँह से उफ तक नहीं निकाला कभी उसने। शरीर–धैर्य की पूरी ताकत लगाकर, आप चढे हो पहाड़ पर– मुख से निकलता है– अब दौबारा तो नहीं आयेंगे यहाँ। कुछ लोग– खिचड़ी बनाकर रखते है जैसे– अमृत का कोठा खुल गया हो। सीता इन सब से बेखबर–क्यों नहीं, पति की आज्ञा थी– यात्रा पर जाओ। गर्भ में एक है या दो शिशु। सोनाग्राफी तो थी नहीं। लड़का है या लकड़ी। तद्भव मोक्ष गए। सीता से भी पहले मोक्ष जानेवाले। अपने–अपने कर्म का फल भोगे, संसार एक खस टट्टी सिंचता एक ले रहा बहार। वातानुकूलित जगह बैठा है। एक व्रती बाहर एक बार का भोजन लेकर भी कर रहा है। कर्म का उदय ऐसा ही है। यह सिद्धान्त प्रत्येक व्यक्ति की खुराक है। ऐसी खुराक वाला कभी भी दुःख का अनुभव/ दीर्घ श्वास का अनुभव नहीं करेगा। इसका अनुभव उसे ही जो तीर्थ यात्रा करेगा। ऐसा तीर्थ जहाँ से फिर वापस नहीं आना पड़ेगा। अब आगे क्या है जो हमने किया है। वही तो सामने आयेगा। अच्छा नहीं लगता है तो अब अच्छा बोतें चले जाओ। जीवन कैसा मिलेगा जो है उसे स्वीकार करो। जो परिश्रम को दुःख का कारण मानता है उसको सारी बीमारियाँ होती है। हार्ट, पेट सब गड़बड़। श्रम करने से पूरा शरीर ठीक कामकरेगा। आप विश्राम करें पर हार्ट (हृदय)को विश्राम न करने दें। मैं जागूँगा तब रूकेगा। ऐसा नहीं जैसे तुम्हारे बाप का नौकर हों।

इस यात्रा का अनुभव मात्र सीतारानी ने किया। राम–लक्ष्मण ने इस यात्रा को नही अनुभव किया। राम राज्य है। कैसा राम राज्य। अपनी पत्नि को जंगल में भेज दिया। एक घर को नहीं संभालना था। वसुदेव कुटुम्बकम धरती पर सभी एक ही परिवार के सदस्य है। तभी राजा राज्य का संचालन कर पाता है। सिंहासन पर बैठने मात्र से राजा नहीं। सिंहासन मात्र इसलिये की ऊपर से देखने पर पता चल जाता है– कि कौन कहाँ–कहाँ है। किसान शाम को मेड़ पर चढकर सिंहावलोकन करता है– फसल चारो ओर खड़ी है– दाना भरता जा रहा है। महाराज वर्षा नहीं तो ठण्ड तो ले आओ। आप जॉकिट खालेंगे तब तो। आप लोग तैयार ही नहीं थे। 24 घण्टे सर्दी का मौसम है। आटा (माल) भरपूर मिलता है। गृहस्थ को सोचना है। कर्म जो हमने किये है उसे प्रतिक्षण अनुभव करना है। सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है। इस प्रकार कृतांतवक्र आज्ञा चाहता है ऐसा कहते ही सीतारानी कहती है– मार्मिक प्रसंग है– इसी बीच वह कहता है– यह कैसी आज्ञा–कब तक पालन करता रहूँगा। आपकी तो अवज्ञा हो रही है। हां आपकी बात पहुँचा दूंगा– ''जैसे मुझे छोड़ दिया–वैसे कभी धर्म को नहीं छोड़ना।'''प्राण जाय पर प्रण न जाय–यही रीत रघुकुल से ही आयी। जो प्रण प्रजा के लिए ले रखा है वह कभी टूटना नहीं चाहिये। आज भी चल रहे है– पाँच वर्ष में मंत्रीयों के चुनाव। कोई भी हो चाहे राष्ट्रपति भी हो तो भी शपथ। High Cout या Suprim Cout व जज से खड़े होकर। आप घड़ी नहीं है पर धूप घडी तो है। अंथऊ सुरक्षित है आपकी। रविवार को यह छोटा सा प्रसंग रखा। जब तक आशा है तब तक वह कृतांतवक्र काम करता रहेगा। पदमपुराण जैनियों के यहाँ। पदम राम का नाम सीता–पद्मनि राजा–रानी। मात्र सीता ने ही नहीं राम ने भी कष्ट अनुभव किया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम।

''तुमरे बिन मेरा कोई नहीं''

22.12.2015 **प्रातः 09:30**

अभी पूजा में एक लाइन आपको बहुत पसंद आयी होगी। मुझे भी आयी। वो है 'तुमरे बिन मेरा कोई नहीं'' ये अन्दर से हो। बाहर से नहीं। सिद्ध प्रभु ही परिपूर्ण हे शेष सब किसी न किसी की शरण में है। अरिहंत को भी अभी सिद्ध बनना है। हम भी प्रभु से यही कहते हैं– तुमरे बिन हमरा कोई नहीं। गुरुजी से लेकर आचार्य कुन्दकुन्द तक सबका अध्ययन किया तो पाया कि इनके सिवाय कोई भी इस जग को पार कराने वाला नहीं है। मैं भी अभी प्रभु से यही कहता हूँ कि तुम ही मेरे सब कुछ हो।

भक्ति ऐसे करो कि आँखों में पानी आ जाये, राग के कारण नहीं अपितु प्रभु के अनुराग के कारण। आबल्या जिनदेव..... प्रतिदिन भावना करो जब तक संसार से पार न होउँ हे प्रभु तेरे चरण सदैव मेरे हृदय में रहे। डूब जाओ भक्ति में कर्म निर्णय अवश्य होगी। इससे सस्ता साधन दुनिया में ओर कोई नहीं। हम सो हि सभी यही भावना करते हैं, तुमरे बिन हमरा कोई नहीं।

ईर्यापथ के पहले पुरी–मैत्री की बात की। उत्पादक एवं उपभोक्ता के बीच में कोई तीसरा नहीं आना चाहिये। यही मायाजाल है, वायादा व्यापार कालाबाजारी करते हैं। महात्मा गाँधीजी की पुस्तक में खेती–पशुपालन–हथकरघा ये तीनो बताये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''हमको क्या–इनको हमारा ध्यान है''

23.12.2015 **प्रातः 09:30**

प्रातः 09:30 पर आर्यिका गुरुमती–मृदुमती जी संघ सहित 52 आर्यिकाओं का गुरु से मिलन। पूजा के बाद गुरुमती जी द्वारा गुरु की शरण जो आ गया–भावना पर गुरुजी ने कहा–कल एक लाइन तुमरे बिन हमरा कोई नहीं बुंदेलखण्ड भाषा में बहुत सारगर्भित है। आज भी भजन गाया हम भी यही कहते हैं– हमको क्या–इनको हमारा ध्यान है। सब एक–दूसरे का ध्यान रखेंगे तो बेड़ा पार हो जायेगा। अध्यात्म में जीने वाले आप सभी ध्यान की बात करो। प्रभु से प्रीति रखो। पाप से भीति करने वाले सदैव आदर्श का ही ध्यान करता रहता है।

सांय 04:30 श्रावकों के आधार पर ही धर्म आगे बढ़ता है। इस काल में हम अपने को पुरुषार्थ से बचा सकते हो तो बचा लेना। कालह्यास की ओर है पर लुड़कता नहीं है। अभी मैं उन्हीं को समय देता हूँ, जो मैं को सामने रखता है। Love वाली पुस्तक–सभी बच्चियों को इसे बतायें–समझायें। विष तो विष ही है। घटनायें आप बतायें–इस प्रकर से कि उनमें शिक्षा आये। पुरुषार्थ–भाग्य की सीमा इन दोनों के बीच में आपका जीवन है। क्योंकि आपके साथ कर्म का उदय सदैव लगा है। पुरुषार्थ की भूमिका नहीं है तो

कषाय/ पाप बंध और सत्ता फिर उदय में यही क्रम चलता रहेगा। तत्व के चिंतन में मिथ्यात्व का उदय भी हो तो बाधा नहीं। चाहे पंचमकाल हो या चतुर्थकाल हो। पुरुषार्थ ही सब कुछ नहीं– बिना पुरुषार्थ भी कुछ नहीं हो सकता। प्रोषधोपवास के समय स्वाध्याय करें। चिंतन करें।

विदेश में बौद्धधर्म का प्रचार ज्यादा क्यों। जैन धर्म भारत में भी छोटा होता जा रहा है, चिंता का विषय है, आप सभी की नैतिक जिम्मेदारी है पंचम काल आदि कहकर अपने आपको मुक्त मत करो पुरुषार्थ करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''जिसका ओर न छोर''

24.12.2015 **चतुर्दशी रहली धर्मशाला** **प्रातः 09:30**

दोहा – क्षेत्र–काल को देखूँ जब..... जिसका ओर न छोर। कौन आगे–कौन पीछे। सर्वज्ञा होकर भी न आदि है न अंत है। अल्पज्ञ ने जब कभी भी सर्वज्ञ से पूछा कि बाताओ पहले कौन। सर्वज्ञ ने अल्पज्ञ से कहा–पहले सर्वज्ञ बन जाओ पता चल जायेगा। सारी अशान्ति दूर हो जायेगी। है। क्या बतायें जिसको करना था वो तो छूट ही गया बाकी सब उलझ गये समस्याओं में शंकाओं में। प्रश्नावलियों का ग्रन्थ लिखने जा रहे हैं गुरुओं की वाणी को समझने का प्रयास ही नहीं कर रहे हैं।

''सर्वज्ञोऽनादिमध्यान्तः'' आचार्य समन्तभद्र स्वामी कहते हैं, प्रभु में आपको इसलिये नमस्कार नहीं कर रहा कि आप बड़े है, आपके पास अपार शक्ति है, वैभव है अपितु इसलिये नमस्कार कर रहा हूँ कि आप में दोष–आवरण की हानि हो गयी है। आप स्वीकार करो या न करो, हमारे नमस्कार करने से (आपको) हमारी भूख तो अवश्य शांत हो ही जायेगी। यह रहस्य की बात है जो आचार्य समन्तभद्र ही कर सकते हैं। सर्वज्ञा का न आदि है न अंत है। हम सब कहाँ हैं– देख लें। अनुयोग द्वारों में श्रुतावलोकन करते समय कुछ ऐसी मार्गणायें है जो निरन्तर हैं, सांतर नहीं है। क्षेत्र–काल के अन्तिम छोर तक पर्यायें नहीं। दोनों द्रव्य के विषय में जब कभी भी हम सोचते हैं तो यही विचार आता है, इसके बाद दृष्टिवाद ओर–ओर लगता है काल के बाद भी ओर–ओर क्षेत्र के बाद भी ओर–ओर लगता है। इस रहस्य को सुनने के बाद प्रश्न के बाद प्रश्न न हो और उत्तर भी न हो। हम लोग छद्मस्थ अवस्था में रहकर सर्वज्ञ के बारे में सोचते है। सर्वज्ञा एक जानने का मार्ग है, पान का मार्ग है। यही सारभूत है। दोनों छोर नहीं है, इस प्रकार बताने वाला ही मार्ग है। महत आकाश है, उसके स्वरूप को जानने वाले सर्वज्ञा है। उनके अलावा कोई नहीं। हमारे भीतर भी सर्वज्ञ है, इसको बताने वाले भी वही सर्वज्ञ हैं। अब हमारे जानने योग्य कुछ रहा ही नहीं उसको पहले ही अनंतों ने जान लिया। हम आत्मा को जानना चाहते हैं इससे पहले अनंत आत्माओं ने जान लिया। अस्तित्व की जानकारी तो हो गयी फिर अपूर्व क्या रहा।

सर्वज्ञ ने बताया कि अपनी अनुभूति तो अपने आपको ही होगी। ऐसे अनानुभूत तत्त्व को प्राप्त करना

है, सर्वज्ञत्व को नहीं। **''सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि निजानंद रस लीन''** जिस किसी भी सर्वज्ञ को पूछा जाये क्या उन्होंने हमें जान लिया, हाँ पर हमारे सिद्धत्व के बारे में उन्हें अनुभव नहीं। सब लोग अपनी–अपनी थाली में खायेंगे। हमारी थाली में कोई दूसरा अनुभव भी नहीं परोस सकता है। ऐसे उस आत्म तत्व का स्वयं ही अनुभव करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''बाहर के नहीं भीतर के अतिशय को देखो''

25.12.15 **पटनागंज रहली –** **प्रातः 10:15**

शिलान्यास समारोह

अतिशय भक्तों के लिये होते हैं। बाहर में होते हैं– भीतर में नहीं वे तो वेदी में बैठे हैं। बार–बार जीवन उद्धार करने वालों को जीर्णोद्धार की आवश्यकता नहीं पड़ती। जीर्ण शरीर होता है, उसका उद्धार होता है। भगवान के अतिशय से कुछ कम लोग परिचित होते हैं, ये बाहर जो अतिशय घटित होते हैं, भगवान के मानना गलत है। भगवान का अतिशय है– अनंत चतुष्टय से युक्त होना है। जिनके नाम मात्र के स्मरण से ही भक्ति होती है, वे धन्य हैं। हम सब एक–एक कदम रखते हैं, एक कदम धरती पर रहता है। दोनों पैर ऊपर हो जायें तो अतिशय हो जायेगा। हमारे यदि दोनों पैर ऊपर उठ जायें तो चक्कर आने लग जायेगा। जो धरती से ऊपर उठ गये हैं, ऐसे भगवान ने आत्म तत्व को हासिल कर लिया। भारत में आजादी के 70 वर्ष के बाद भी अभी स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है। यान (यंत्र)– ऊपर उठने की बात आयी। पराश्रित होने की बात नहीं सिखाता। यान हमें स्वाश्रित होने का पाठ सिखता है। स्वालम्बी बनें। अब किसी की आवश्यकता नहीं भगवान के लिये।

आज सर्दी होने के बावजूद भी आप आये, प्रबंध करके आये हैं। जहाँ प्रबन्ध होता है वही पर बन्ध होता है। बंधातीत होने के लिये इनकी शरण में आना ही होगा। पटनागंज ऐसा प्राचीन क्षेत्र है जहाँ एक से बढ़कर एक प्राचीन प्रतिमा है। यहाँ से कहाँ–कहाँ गये हैं (भक्त एवं भगवान)। सर्वप्रथम तो सिद्धालय में जो भगवान बने हैं, उन्हें याद करता हूँ। मूकमाटी में लिखा याद का मतलब दया। स्वयं पर दया और पर पर दया, किन्तु तभी जब सच्चे मन से याद करो। उसही–उसही करने से कुछ नहीं होगा। साँची–साँची कहो तभी। मात्र सांचा न हो। भगवान का सांचा हो और उनकी ही सांची हो। यहाँ आने के उपरांत ऐसा लगता है– सब कुछ छोड़ देने के लिये तैयार हो जाते हैं। ये ही तो इस जगह का अतिशय है। हम सोही अतिशय के कारण आये हैं। हम अतिशय नहीं है। वहाँ ऐसा हुआ– वहाँ ऐसा हुआ पर यहाँ की गुणवत्ता अलग क्वालिटी है। यहाँ जवान भी है– बुर्जुग भी है। अर्थात पटनागंज (यंग) और पटना बुजुर्ग। दो बार बुजुर्ग गये थे। ये यंग है।

भगवान तो भगवान होते हैं, जो जोड़ा है, उसे यथायोग्य लगाते चले जावें ताकि आप बुजुर्ग है, आने

वाली पीढ़ी भी कुछ सीख सके। समय हो रहा है। आचार्य श्री तुरंत कहते हैं– नहीं उसके (आहार) लिए नहीं–जो कार्य हाथ में लिया है, उसको ध्यान में रखना जरूरी है। (शिलान्यास) पहले भी आये पर अभी हम चलाकर आये हैं। बीच में गढ़ाकोटा हो आये–दूसरे प्लेटफार्म वाले भी लाभ ले लिये। जो कुछ होगा वह व्यस्थित होगा। वीतराग की जहाँ साधना की जाती है कण–कण पवित्र हो जाता है। राग–वासना से अपवित्र होता है। भक्ति का मन सदैव बना रहे। दिल की धड़कन की ओर न देखें। दिल की पहचान हो जाये तो धड़कन भी रुक भी जाये– कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। हार–जीत की पहचान नहीं जितना है तो दूसरों के दिल जीतने का पुरुषार्थ करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

"चित्र–चित्त को भटकाता है"

26.12.2015 **रहली** **प्रातः 09:30**

पूजन शुद्ध बुंदेलखण्डी में हुयी। आप लोग जब कभी भी आँखों से इधर–उधर देखते हैं, वह अपनी आँखों में आ जाता है, पदार्थ अपने स्थान पर ही रहता है, किन्तु हमने उसे अपनी आँखों में बुला लिये हैं, यही पागलपन है। बाकी सब ठीक–ठाक है। पहले हमने सुना था–चित्त नहीं लगता। अब चित्त नहीं लगता या चित्र नहीं लगता। चित्र मन को अच्छा लगता है, चित्र चित्त को चिपका देता है और युगों–युगों तक भटकाता है। चित्र उसी चित्त से बनाता है। नेत्रेन्द्रिय का विषय है वह चित्र।

पूजन को कहा इस करिया को काला कर दो। पहले से काला है उसे क्या काला कर दें। सफेद में विकार नहीं–काला में भी कोई विकार नहीं, विकार दोनों मिलने पर आता है। ब्लेक एण्ड व्हाइट। दोनों जब मिल जाते हैं तो चित्र बन जाता है। क्या चाहते हो, आप सब समझ लो। यही संसार है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

आवों चलें ग्राम की ओर

27.12.2015 **मुहली** **प्रातः 11:15 बजे**

शहर से ज्यादा सुखी होना हो तो गांवों की ओर आ जाओ। हमारा मन भी शहर से भर गया, सो अब गाँव में आ गया। सुन रहे हो न शहर वालो। आज मैं ने देखा – एक किसान प्रातः जल्दी उठा। नहा–धोकर पिछवाड़े में गया। बिल्कुल ताजा–ताजा एक टोकनी भर ले आया। आप लोग क्या कहते हो – जाम/अमरूद नहीं बिही। सड़क के बीचो–बीच तौलिया बिछ दिया, सब बिही उस पर डाल दिये। प्रतिज्ञा करने लगा उत्तम पात्र की वह धोती पहना किसान ठण्ड में। जब पात्र नजदीक आया तो खेत के सुंदर फूल–सरसों के फूल बरसाने लगा। धन्य हो गया वह। सोचा एक–आध लेलेन्गे पर दिगम्बर साधु

की चर्या से अनभिज्ञ होतु हुये भी अपनी भक्ति से अक्षय पुण्य का संचय कर लिया। भक्ति का यहीं कमाल है।

'इसी तरह सिंहपुर से सवेरे–सवेरे निकले। एक ग्रामीण पांव छूकर प्रक्षालन करना चाहता था लोगों ने कहा अभी नहाये तो हो ही नहीं। गुरुदेव सामने नजदीक आ चुके थे। आव देखा न ताव पुरी गुण्ड कपड़ों सहित सिर से पांव तक डाला दौडा–दौडा गिला ही आया कड़ाके की ठण्ड में – गुरु के पांवों का प्रक्षालन कर धन्य–धन्य हो गया। ये है कमाल श्रद्धा का।' (चाँदपुर प्रवचनांश)

कुछ लोग कह रहे हैं – धोखा दे दिया। हम कभी भी किसी को भी धोखा नहीं देते और न ही धोखे में रखते हैं। हाँ वह स्वयं ही धोखा खा ले तो हम क्या करें। बारात जाने के बाद विवाह में रुकना अच्छा नहीं माना जाता। वैसे भी मैं सदैव कहता हूँ कि उपयोगिता को हमेशा ध्यान में रखें। मैं अपने जीवन में सबसे अधिक कीमती समय को मानता हूँ। एक–एक क्षण कीमती है, उसे व्यर्थ मत खोना। यह उस क्षेत्र का अतिशय ही मानों की इतने कम समय में सुव्यवस्थित पंचकल्याणक एवं क्षेत्र के जीर्णोद्धार की भी योजना बन गयी। अब सोना नहीं है। हम इसलिये विहार कर दिये ताकि कार्यकर्ताओं को जो करना है वह करें। वे सक्रिय हो एवं कार्य समय पर पूरा कर सकें। यहाँ मुहली में लगभग छः बार आ गये, ये तो जंक्शन जैसा लगता है। बोरिया–सर्रा–सनाय सब पास ही पास है। आप लोग विचार करो – निवेदन करो। परन्तु एक गांव के कई मार्ग होते हैं, हम कहाँ से कहाँ की ओर मुड जायें आप देखते ही रह जायेन्गे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

आहार ही औषधी

28.12.2015 **सिंहपुरी–स्कूल में** **प्रातः 07:00**

शरीर अन्न का कीड़ा है फल–सब्जी का नहीं। रामदेव बाबा अन्न नहीं लेते। वो ड्राइफूड इतने ज्यादा। काजू बादाम आदि। मुनिराज या व्रती को नहीं लेना चाहिये। अन्न से भी भारी गरिष्ट होते है। शरीर की प्रकृति समझकर आहार लेने वाला सदैव सुखी रहता है। प्रसादसागर जी– फल–सब्जी मसाले–ये हैं स्वास्थ्य के रखवाले। वो दूर रहकर भी पास बरसते है, हम पास आकर भी दर्शन को तरसते है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

फतेह हो गयी

29.12.2015 **तारादेही** **प्रातः 9 बजे**

जब भक्ति का अतिरेक होता है, तो जो मांगना है वो भी भूल जाते है। शीतकाल वाचना की बात कर रहे हो, अभी हम आये क्यों हैं? उसकी बात नहीं कर रहे हो। गाँव के लोग बहुत होशियार होते हैं – शीतकाल के लिए रुकेन्गे तो हमारा काम तो हो ही जायेगा। दुकान जहाँ होती है, ग्राहक को वहाँ आना ही पड़ता है, तारादेही न जाने कितने बार आये और गये लोग – 12/13 बार हो गया। प्रत्येक बार पेट्रोल डाला – प्रवचन किया और विहार कर दिया। रात्रि मुकाम एक बार भी नहीं हुआ। किन्तु इस बार ऐसा नहीं है, पूरा संघ का लाभ मिलेगा सबको।

जीवनमें संस्कारों का बहुत महत्व है। संस्कार आप किसी भी कीमत खरीद नहीं सकते हैं। संस्कारों को हम इसी तरह से धार्मिक अनुष्ठाान द्वारा प्राप्त कर सकते हैं साथ ही एक–एक पल को अच्छा बना सकते हैं। समय–समय पर चाहे किसी भी धर्म का हो धार्मिक अनुष्ठाान होने से संस्कारों में दृढ़ता आती रहती है, इस बार तो अभी कुछ दिन पूर्व मार्ग में यहाँ के लोग आये थे एक लाठी वाले दद्दा जी भी थे। उसी समय अचानक हमें दो छींक आ गयी। उन्होंने तुरंत लाठी उठाते हुए कहा – महाराज फतेह हो गयी। आपको 2 छींक आयी। मतलब पता चला 'एक नाक छींक – सारे काम होवें ठीक' बस उन बुजुर्ग दादा जी की भावना आप सभी का उत्साह, हम लोग तारादेही आ गये। पर हमारे आने से यहाँ बहुत लोग बिना बुलाये भी आयेन्गे आप उन लोगों की व्यवस्था कर पायेन्गे। लोग – जी महाराज – 5 लाख भी आ जायेन्गे तो हम सब कर लेन्गे। बहुत अच्छा। कुछ लोग तारादेही के शिवनगर में जा बसे, लेकिन अपना पैतृक आवास नहीं छोड़ा, ये अच्छी बात है। शहर की गंदगी से तो गाँव स्वच्छ एवं साफ रहते हैं। यहाँ प्राणवायु शुद्ध मिलती है। अर्थ अथवा पढ़ाई हेतु जाने के लिये मना नहीं, परन्तु गाँव को कभी छोड़ना नहीं। मन्दिर भी राजाशाही तैयार हो गया। बहुत मेहनत से आप लोगों ने बनाया है, अब भावना करो। माला फेरो अच्छे से पंचकल्याणक भी हो जाये। आप लोग थोडे में अभिमान करते हैं। आपकी तो छोड़ो हम भी यहाँ आये – कैसे पता है। यदि वो आगे रस्ता बताने वाला हमें जहाँ की पगडंडी पर ले जाता उधर ही चले जाते। उस पर विश्वास करते गये। वो कहाँ ले जा रहा है– हम नहीं जानते थे। जंगल में एक साथ दो–तीन पगडंडी – वो तो जानता था पर हम नहीं अतः ज्ञान का अभिमान नहीं।

तिगडम है दुःखदायी

30.12.2015 **तारादेही** **प्रातः 9.30 बजे**

कोई व्यक्ति जो अपना इष्ट फल चाहता हो और वह उसे दिख रहा है, तो बहुत रोमांस होता है। अभी मात्र दिख रहा है, मिला नहीं है, मुँह में पानी आ जाता है। जब तक प्राप्ति नहीं होती तब तक प्राप्ति की इच्छा होती है। प्राप्त नहीं होता तो पहले मुँह में पानी आया था, अब आंखों में पानी आ जाता है। गया हाथ से वह फल।

पूजन में जन्म जरा मृत्यु विनाश के लिये जल का मंत्र बोला गया। जनम नहीं हुआ – सब रोते रहते है। महाराज आशिर्वाद दें बस संतान हो जाये। तीन अलग–अलग से लगते हैं, इन्हें तापत्रय कहते हैं पर तीनों एक है। गुरुजी – इन्हें तिगड़म कहते है। राजस्थान में तिगडम शब्द चलता है। इन तीनो से तिगडम से अच्छे–अच्छे नहीं बच पायें। समाधान नहीं है। है पर हम उसे स्वीकारते ही नहीं है। मन–वचन–काय से यह व्यवधान है, दुःख है। समाधान नहीं है – ऐसा दृढ़ श्रद्धान होना चाहिये। श्रद्धान कैसे करे। दिख तो रहा है पोषक फिर शोषक कैसे माने। आँखो के आगे मोह का पर्दा आ जाता है तो सही दिखता ही नहीं है। संसार तो भरा हुआ है, फिर आप कह रहे कि खाली है, तिगड़म है, दुःखदायी है। मोही व्यक्ति कहता है कि महाराज हमें तो आपके वचनों में ही तिगड़म लगती है। क्यों वास्तव में ऐसा ही क्या? दृष्टि में जब स्थिरता आ जाती है, तो हम कुछ पहुँच सकते हैं, वहाँ पर।

कुछ पीलिया हुआ अब पांव आड़े–तिरछे रखने लगा, ऐसा ही मोह का नशा है। जो अपने में स्थिर हो गये वो चले गये, अस्थिर वाले हम यहीं पर है। जब कभी भी हम स्थिर होना चाहेन्गे तो धीरे–धीरे आत्मा परऐसे ही संस्कार को लाना जरूरी है, पर इसे आसान मत समझना। विद्यार्थी समझता है मैंने तो पूरा पढ़ लिया। पारायण कर लिया पर परीक्षा के समय पेपर देखते ही – अरे ! ये तो बहुत कठिन है। ऊपर–नीचे सभी प्रश्न देखता है। अब मन को समझाता है, उसकी मन में स्थिरिता है तो मन से कहता है, मुझे इसी कक्षा में नहीं रहना, सारी कक्षायें पास की – ये भी पास करना है, घर पर ओर भी काम था – वो छोड़ा क्यों की मुझे पढ़ना है। यदि छोड़ दूंगा तो ओर अधिक कठनाई हो जायेगी।

मन वाला होता है, वह मतवाला हो जाता है। आप सब लोगो के सामने भी पेपर है। मतवाला नहीं किमतवाला बनों। उस मन को कीमतवाला बनाकर रखो मतवाला नहीं। अभी एक शहर का बालक (पंकज–पारस का बेटा, दिल्ली) बोली बोल रहा था। सामने वाला ही आगे बढ़ पाता है। कितनी बारसमझता है, जितनी बार समझाओ उतना ही कम है। कुछ लोग कह रहे हैं, ये सब सपना सा लग रहा है। मुकाम नहीं किया कभी, परन्तु 10–15 दिन भी सपना ही है।

जब तक पूर्ण विकास न हो यही काम में आयेगा। तीन प्रकार से पानी को हमेशा याद रखना – मुख में पानी, आंख में पानी एवं मृत्यु पर पानी।

''भगवान को देख सकते हैं – दिखा नहीं सकते''

31.12.2015 **तारादेही** **प्रातः 9.30 बजे**

आप लोगों ने भगवान की भक्ति करने का संकल्प ले लिया। प्रश्न ये है कि भगवान का ही पता नहीं तो भक्ति किसकी और भक्त कैसा? जो भी हो हम तो भक्ति करेन्गे। भगवान को देख सकते हैं, दिखा नहीं सकते। जैसे मैं भगवान को देख रहा हूँ, ऐसे ही आप भगवान को देख लो। साधन बता दो। साधन बता तो सकते हैं। पर दे नहीं सकते। भक्ति के माध्यम से भगवान को भक्त देखता है। भक्ति दे नहीं सकते। जब वह व्यक्ति भगवान की भक्ति करने लग जाता है तो बहरा भी, गूंगा भी वाचाल हो जाता है। बोलने की–सुनने की क्षमता नहीं पर बोलने–सुनने लग जाता है। बारीक अक्षर को भी पढ़ लेता है। जोर से क्यों बोल रहे हो – सुनने में नहीं आ रहा है। अंधा भी देखने लग जाये – वह है भक्ति का कमाल। जिनके पास पुण्य है – वे ही सुन रहे हैं। भक्त कहता है – मुझे उठा कर खड़ा कर दो, मैं अपने पांवों के बल खड़ा होऊंगा। एक दद्दा लगभग 80 किलोग्राम के हैं, दो उठाने वाले 50–50 किलोग्राम के हैं। जब भक्ति होने लगी तो वो नाचने लगे। 80–85 किलोग्राम वाले 80–85 वर्ष के भी है। भक्ति के कारण पैरों में थिरकन आ जाती है। भले ही उठाने के लिये आप सहारा दो। भगवान है या नहीं बताने की आवश्यकता नहीं, भक्त बता देगा भक्ति के माध्यम से। आम का पेड़ लगाने वाला यह नहीं सोचता कि इसके मोर, इसके फल, इसकी छाया मुझे मिलेगी या नहीं। पर उदारता–उपकार की अपेक्षा से वह बस उस वृक्ष को सींचता रहता है। आप लोग हिम्मत वाले हो। तब तक खूब भक्ति करो जब तक शक्ति है। जब शक्ति नहीं हो तो उनके हाथ लगा दो, जो भक्ति कर सकते है।

भगवान का पंचकल्याणक होने जा रहा है। उठ नहीं सकते – पर अभी जो दद्दा नाच रहे थे, 85 के ऊपर 85 किलो से भी अधिक होन्गे, उन्हें देखकर जवान में भी नाचने के भाव आ जायें। भगवान को दिखा नहीं सकते, देख सकते हैं, होनहार भगवान तो हमारे पास विद्यमान है। जो भगवान बन चुके उनकी क्या जय, जो होने वाले हैं उनका जय जयकार होना चाहिये। लोगों द्वारा गुरुजी की जय–जयकार – आप भी होने वाले भगवान है। आचार्य श्री प्रत्येक जीव में भगवान बनने की क्षमता है। इसलिये सबसे अच्छे नाते बनाये रखो। सबके साथ वात्सल्य बनाये रखो। मिलजुलकर कार्य करते जाओ।

कुछ हट के – ''इष्टोपदेश में हमेशा इष्ट ही होगा हितोपदेश में अहित हो सकता है।''

''परेशान कर दो परिषहो को।'' स्वर्ग में जाओगे तो ढूंढते रह जाओगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''मोक्ष स्वयं में महा है—महामोक्षफल क्यों''

01.01.2016 **तारादेही** **प्रातः 09:30**

अभी आप लोगों ने पूजन की। अष्ट मंगल द्रव्य चढ़ाये। एक—एक मंगल द्रव्य चढ़ाते समय कामना की। फल चढ़ाते समय एक विशेषण लगाया था। प्रश्न का उत्तर तो जरूरी था। ''महामोक्षफलप्राप्ताय'' मोक्ष स्वयं में महा है, महामोक्ष क्या है। मोक्ष छोटा भी होता है क्या, यदि ऐसा मानेंगे अर्थात महा विशेषण लगाने से यह सिद्ध होगा। भावों में ऐसी कामना हो चुकी है और बड़ा मांगो और बड़ा मांगो। भगवान के सामने माँग रखी— उनको सोचना तो पड़ेगा कि कौन सा मोक्ष मांगा है।

जब माँ के गर्भ में तीर्थंकर आते हैं तो देवी—देवता के भी राग—रंग छोड़कर अध्यात्म के परिणाम हो जाते हैं। ऐसा क्यों होता है, जिन्होंने अतीत में उस अध्यात्म की आराधना की थी। सोचो तीर्थंकर का जीवन अलग, माँ का जीवन अलग, देवी—देवताओं का जीव अलग फिर भी सारा वातावरण अध्यात्म का हो जाता है। (पाण्डाल) यहाँ कौन बैठता था पर अभी सब बैठे हैं। महाराज थोड़ा पूर्व संकेत दिया करो, जिससे हमें व्यवस्था करें सो और अव्यवस्था हो जायेगी। हमारी बात सदैव मानो। मेहमान सपरिवार आये तो। तीर्थंकर कभी अकेले नहीं आते उनका समवशरण साथ आता है। भूमि पूजन आदि हो जाता है। उठ जाओ आपके यहाँ तीर्थंकर आ चुके हैं। परिणामों का यह परिणाम है, साक्षात् जहाँ रहता है, वहाँ आँखों पर विश्वास नहीं हो पाता है, आँखे मलने लग जाते हैं। भावों का चमत्कार है यह। सारे के सारे देवी—देवता पागल बन जाये तो आप महापागल हो जायेंगे। महापागलाय नमः बोलेंगे। असंख्यात् देवी—देवता सबके हाथ में अष्टद्रव की थालियाँ क्या अद्भुत दृश्य है। परिणामों का वैत्रिय है, हम यहाँ क्यों आ गये, साक्षात् तीर्थंकरों का सानिध्य छोड़कर। सब लोग भूल जाते हैं। पर वे मात्र महाविभुति को ही देखते हैं। ऐसे क्षण महाविभुति के पुण्य से ही प्राप्त होते हैं। इनको गाँठ—बाँध कर रख लेना गाँठ अच्छी तरह से बंधी है या नहीं देख लेना। इस समय जो बोओगे वह फसल के रूप में तैयार होकर आयेगी। फिर फल भी उसमें मीठा—मीठा लेगा। हाँ धरती का सम्पर्क न छोड़ियो। अन्यथा वहाँ से टपकना पड़ेगा। पूरक परीक्षा देने फिर से आना पड़ेगा। मैं तो नया साल मानूंगा नहीं आप मानो तो मानो। जिनके परिणाम सुधर चुके हैं अथवा सुधर रहे हैं उनको ढूंढ़कर उनकी ही शरण में जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दर्पणवत् स्वभाव हो मेरा''

02.01.2016 प्रातः 09:30

उनके साथ हमारी तुलना हो ही नहीं सकती, उन जैसी निर्मलता हमारे पास है ही नहीं। उनकी निर्मलता से हम अपने जल को निर्मल बना सकते हैं। उनका कहना है मैं भी तुम जैसा ही मलीनता को दूर करने से यह प्राप्त होता है। वर्तमान में हमें सुख नजर नहीं आता, अब ज्ञात हो गया मैं भी उनके समान बन सकता हूँ। आप सब ने दर्पण देखा है। दर्पण जैसा तो अभी हम बन नहीं सकते, बस दर्पण का लाभ लेना है। मेरे पास कहाँ–कहाँ खोट है दर्पण को देखकर यह ज्ञात कर सकते हैं। पर जब कोई दूसरा खोट निकालता है तो गुस्सा क्यों आता है। हमारा स्वभाव कैसे बना यह समझ में नहीं आता। दूसरा कहता है तो आग लग जाती है, दर्पण देखने पर आग क्यों नहीं लगती बल्कि उसे संभालकर रख लेते हैं और बार–बार देखने का भाव होता रहता है। इससे सिद्ध है कि प्रभु या महाराज के समान दूसरा कोई कार्य नहीं कर सकता। रागी होने के कारण उसका उद्‌बोधन नहीं चाहते हैं। समकक्ष व्यक्ति इसलिये नहीं सुहाता है। काम चलाऊ–इसलिये कहा। बार–बार मन में विचार आयेगा तभी प्रत्येक श्वांस में यह आयेगा तब विश्वास दृढ़ बन पायेगा। पहले की अपेक्षा हम निर्मल हो गये, पर अभी पूर्व निर्मल नहीं हो हुये। गुणग्राही बनने पर दूसरे पर गुस्सा आना बंद हो जाता है। जिनसे प्रयोजन सिद्ध होता है उन पर गुस्सा नहीं करते। वह अपने मतलब का है। मैं भी वही जीव हूँ, ये भी वही जीव हूँ, विशालता आने पर ऐसा होगा। प्रभु में और मेरे में भेद नहीं है, तो मेरे में और इनमें भेद कैसे हो सकता है, यह बात जब दिमाग में आ जायेगी तो समझना पंचकल्याणक सार्थक हो गया। हम एकेन्द्रिय या कीट–पतंगों से भी राग–द्वेष–मोह–मत्सर भाव नहीं रखते। हम भी है, इस श्रद्धान को मजबूत करें। पंचकल्याणक साधन है, इस साधन को कभी छोड़ना नहीं। मैं भी भगवान बन सकता हूँ, इसलिये सभी साधर्मियों से तालमेल बनाकर रखना चाहिये। अज्ञानी अपने आपको कोसता रहता है, पश्चाताप करता रहता है, मैने ठीक नहीं किया। पर जब ज्ञान होगा तभी उस अज्ञान के समय का मालूम चलता है। दूसरे को नहीं कोसना है। जब तक भगवान नहीं बने तब तक एक–एक क्षण मौलिक क्षण है, उसका उपयोग करते जाओ। दुनिया की गणित में लगे हो, अपना गणित लगाओ। अपना गणित नहीं चलाओ। राग को घटाओ गुण को गुणा करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''वीतरागता का लड्डू''

03.01.2016 **प्रातः 09:30**

महावत हाथी को स्वस्थ रखना चाहता है। पर शुरु–शुरु में वह सीधे लड्डू नहीं खाता है अतः वह उस लड्डू को घास के बीच रखकर खिलाता है। हाथी घास में जो लड्डू है खा लेता है। ठीक उसी तरह गुरु जब तक तत्त्व का सही ज्ञान नहीं होता तब तक गुरुदेव कहानी किस्से सुनाकर उस ओर ले जाते हैं। बचपन में ऐसा ही होता है, गुरुओं के सामने बच्चे ही है। बड़े–बड़े आचार्य इस तत्त्व को सरलता से रखते हैं। नाचों को भगवान के सामने, गाँओ तो भगवान के सामने गावो, बाजे बजाओ तो भगवान के सामने बाजे बजाओ। किसी भी तरह से एक बार वीतराग दृष्टि हमारे पास पहुँच जाये। आत्मा तो कहीं दिखती नहीं। वीतरागी प्रभु को देखने से लगता है वे भी हमारे जैसे ही है यह ज्ञान होते ही वह भी प्रभु बनना

चाहता है। जब दो–चार बार घास के बीच में रखकर लड्डू खा लिया तो बाद में वही हाथी सीधे ही लड्डू भी खिलाया तो खा लिया। शुरु में तो घास के बीच ही रखकर खिलाया जाता है।

समवशरण में जाओ या किन्हीं सामान्य महाराज के सामने जाओ तो वे भी इसी प्रकार से समझाने का प्रयास करते हैं। एक बार समझ में आ जाये तो जैसे हाथी सीधे लड्डू को खा लेता है ऐसे ही गुरु भी तत्त्व परोसते हैं। आज गुरु वही बताते हैं, जो सर्वज्ञ देव ने बताया उसी वीतराग तत्त्व की ओर ले जाने वाले हैं। भगवान हो गये। भगवान कौन हुये? जो आचार्य, उपाध्याय और साधु थे। वे भी आपके बीच में से ही निकलकर हुये हैं, निकले तो आप के बीच से ही हैं, पर अब आपके नहीं रहे, अब हमारे महाराज नहीं रहे, सबके महाराज हो गये। दक्षिण वाले भी समझे (लगभग 100 से ऊपर दक्षिण के लोग आये थे) एवं उत्तर वाले भी समझे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दान करे कैसे?

04.01.2016 **प्रातः 09:30**

जिसका निमित्त जब आता है, तभी वह कार्य हो पाता है, दूसरा उसमें सहयोग दे नहीं सकता। मित्र ने कहा– वह इस कार्य में जरूर तुम्हें सहयोग देगा, लेकिन मौके (समय) पर जाना आवश्यक है। आप लोग भी मौका देखते–रहते हैं। इसीलिए नाके पर दुकान होती है। अब वह जाता है। उनका नाम बता दिया। योग ही ऐसा था वह व्यस्त था, कुछ भी हो–मौके पर जाना आवश्यक है। उस समय जाकर सामने बैठ जाता है, हम आपके पास आये हैं–धीरे से बोलता है। अनिवार्य काम से आये हैं। उनकी प्रसिद्धि तो थी ही, ज्यादा विचार करते नहीं थे। उनका काम ही ऐसा था सहयोग देना है तो देना है। एक कटोरा था– न सिकोरे (मिट्टी) का, न पीतल, न चाँदी न सोने का था। बहुमूल्य रतन आदि जड़े हुये थे। ये ले। स्वामी! देर क्यों कर रहे हो? ये हाथ तो बांया हाथ है। उस हाथ से दे दो। इस हाथ का उस हाथ को पता लग जाये–मना कर दे तो क्या करेंगे। ये बाँया हाथ है– दाँये से शुभ माना जाता है। शुभ वही है जिससे काम हो। ''शुभस्य शीघ्रं'' रोज इस कटोरे को में देखता रहता हूँ। मौका चूक रहे हैं आप लोग। आप लोग बहुत चतुर हैं– दोनों हाथ लगा लो। वे धर्मराज, युधिष्ठिर थे।

भविष्य का शुभ संकेत है– दान। जब कभी भी ऐसा अवसर आये, शक्ति अनुसार दें, ज्यादा विचार न करें। जिस समय भाव हुआ नहीं तुरंत कर लो। छोड़ क्या रहे हो–उसे भी देखो। जो हमारा है ही नहीं उसको क्या छोड़ना अज्ञान के कारण यह स्थिति हो रही है। जब छोड़ना निश्चित ही है तो पहले ही क्यों न छोड़ दे, चक्रवर्ती की तरह गांठ के ऊपर गाँठ लगाते जा रहे हैं। आज तक जो गांठ खुली ही नहीं, उसको खोलने में पसीना आ रहा है। दुनिया एक तरफ हो जाये होने दो हमें तो उस तरफ जाना ही नहीं है, यही मोक्ष मार्ग है, उसी में चलते जाना है।

परिक्रमा पथ अच्छा बन गया है, वे घूमते रहो। पगडंडी अच्छी क्योंकि वह सीधी जाती है। सर्रा की तरफ से जंगल में पगडंडी से विहार करके आने में कई भटक जाते हैं– हम तो नहीं भटके। आप क्यों भटके? गाड़ी से आ जाते–नहीं–महाराज नहीं आ सकते हैं। तन–शरीर भर उपयोगी काम करने वाला है, रातदिन कर्मों को काटने का परिश्रम करो। इस हाथ से इस हाथ में आ जाता है तो काल की ओर भी देखने लगता है। देऊं या नहीं देऊं। मन भी पलट जाता है। मन कभी बुढ़ा नहीं होता, सदैव जवान बना रहता है, जवान नहीं देता है– कभी दूसरे को। जो नहीं मानता वही मन है। लड़का घर से बाहर निकाल देगा ये ही मन है– जिसके अधीन रहते हैं। मन संकल्प लेने के बाद भी कितने ही बार वापस लौट जाता है। प्रमाद आ जाना ही मन का लौटना है। मुनि महाराज सोचते हैं कि मैं कैसा हूँ गुणस्थान में ऊपर उठने के बाद बार–बार नीचे गिर जाता हूँ। अंग ही नहीं है इस मन का, इसलिये पल में कहीं का कहीं पहुंच जाता है, विजितमना बनना चाहते हो तो, उसकी बात मानो नहीं यही तरीका है। भगवान सामने है– गुरुओं की शरण ले लो, तभी मन को जीत पाओगे। भयानक जंगल है, सहारा लेकर मन को जीतो। इस प्रकार वह व्यकित युधिष्ठिर की बात मानकर कटोरा ले लेता है ओर जीवन भर की दरिद्रता दूर कर लेता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''त्याग और तपस्या की महानता''

05.01.2016 **प्रातः 09:30**

धीरे–धीरे सभी स्वर्गों में, जहाँ सभी अहमिन्द्र होते हैं, पूछताछ कर ली गयी। हमने भी शोध कर लियां बाद में ज्ञात हुआ यह वस्तु केवल मध्यलोक में वहाँ भी पूरे मध्यलोक में नहीं मात्र ढाईद्वीप में है, पूरे ढाईद्वीप में नहीं–मात्र मनुष्यलोक में, मनुष्यलोक में भी भोगभूमि में नहीं मात्र कर्मभूमि, कर्मभूमि में भी मलेच्छखण्ड में नहीं मात्र आर्यखण्ड में मिली। आर्यखण्ड में भी घर में नहीं–घर से जब बाहर निकला, जब दीक्षित हो गये तो देवलोक से देवतागण भी चरणों में बैठ गये। चरणों में भी उन साफ सुथरे मुकुटों को भी धूली में मिला दिया। ''सौ धूली मस्तक चढ़े–भूधर मांगे एह''। तीन लोक के नाथ धूल में आने पर ही बनते हैं। भूल में आने से नहीं बनते हैं। आजकल बच्चों को पहले ही धूल से अलग रखा जाता है। देव लोग भी अपने यहाँ की दिव्य केसर को माथे पर नहीं लगाते अपितु प्रभु की चरणों की धूल को चंदन बनाकर माथे पर लगाते हैं। त्याग–तपस्या के कारण भी धूल मस्तक चढ़ जाती है, अहोभाग्य मानते हैं। धूल भी जब चरणों के सम्पर्क में आ जाती है तो उसका भी महत्व बढ़ जाता है। कलशों में जल भरा है वह पूज्य नहीं है पर उनके चरणों में लगते ही गन्धोदक हो जाता है।

मन्दिरों में लिखा होता है, शुद्धजल एवं गन्धोदक। उल्टा भी कर दो बोर्ड को तो भी गन्धोदक पहचान जाते हैं। कलशाभिषेक होने पर ही गन्धोदक माना जाता है। त्याग के कारण राग वस्तु भी वीतरागता की प्रतीक बन जाती है। उसी से कर्मों को काटते हैं। यदि भक्ति के साथ नहीं करते हैं तो

उसका सही फल नहीं मिल पायेगा। ये महत्वपूर्ण है। वीतरागी के चरण पूज्य है। मुकुटबद्ध राजा–अहमिन्द्र आदि सब इससे अवगत है। चरण स्पर्श के परिणाम स्वरूप ऐसा होता है।

देवों के मंत्र फूकने से रोग शमन नहीं पर वीतरागी के स्पर्श मात्र से गन्धोदक मात्र से रोग भी दूर होता है। इस वीतराग के चरणो की कथा का शब्दों में वर्णन नहीं। देव भी तरसते हैं– वे कहते हैं यहाँ तो बरस रहा है फिर क्यों? राग खींचकर वहाँ ले जाता है, वहाँ से वीतरागता को पाने के लिये समवशरण में उतरकर आ जाते हैं, धीरे–धीरे कर्मों को काटकर धन्य मानते हैं। आप उनसे भी आगे बढ़ सकते हैं। समझो मात्र जल में चन्दन घुलने से गन्धोदक नहीं/ रत्नत्रय, त्याग–तपस्या के प्रभाव से ही वह गन्धोदक बनेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''जब जागे तभी सवेरा''

06.01.2016 **प्रातः 09:30**

देखने में ये ही आता है आपने किसी व्यक्ति से पानी लाने का कहा। वह व्यक्ति अपने ढंग से 5 मिनिट में गरम करके ले आता है। कुछ दिन बाद पुनः गरम करके ले आया। उसने कहा उबलना चाहिये। अब वह उबालने का प्रयास करता है, पर आज उबल ही नहीं रहा है। ऐसा कब होता है जब सूर्य का तापमान गिर जाता है। उस समय अग्नि के माध्यम से पानी को उबालना चाहते तो बहुत ही कठिन होता है, आग का प्रभाव ही नहीं पड़ता। जब तापमान अत्यधिक घट जाता है तो आपकी आग का इतना प्रभाव नहीं पड़ता है। उबलता हुआ पानी भी पीना चाहते तो पी सकते हैं। शून्य पर जाने के बाद लोटा से धुंआ निकल रहा है पर आप आसानी से पी रहे हैं। कहीं भूत तो नहीं लग गया है। यहाँ पर दोनों बातों में अंतर कर सकते हैं।

प्रकृति में अन्तर आने पर उबलता पानी भी कुछ नहीं कर रहा और इधर तेज अग्नि से भी गरम नहीं हो पा रहा है। गरमी में थोड़ा सा गरम करते ही पानी उबलने लगता है। आप लोगों की भाषा में सरलता से समझा रहा हूँ। आप अनुकूल न रहे तो अच्छी बातें भी गरम–गरम सी लगती हैं, प्रतिकूल वातावरण होने पर नरम भी गरम लगती है। दद्दा में बोलने के क्षमता नहीं है, पर डाट दे तो आज भी आग लग जाये। कहते हैं न आग उगल रहे हैं। भीतर ईंधन काफी भरा हुआ है, यह ऐसी आग जो भीतर तक घुस गई है। कान ज्यों का त्यों है। जो पहने है वो भी वैसे की तरह है।

भीतर जो क्लेश है वह जल गया है, उसी के द्वारा जो मरहम निकलेगा तभी ठीक हो पायेगा। पौद्गलिक जड़ पदार्थों द्वारा अनुमान लगाया जाता है, उसे देखकर हमारा भी पारा गरम हो जाता है। पारा सबसे भारी पदार्थ माना जाता है। होता है। लेकिन जैसे ही थर्मामीटर को बगल में लगाते हैं–बुखार में यंत्र लगाते ही पारा ऊपर की ओर चढ़ने लगता है। उस गरमी से ऐसा होता है। आत्मा में पारा भरा हुआ

है, क्रोध रूपी अग्नि मिलते ही पारा तुरंत चढ़ जाता है। सब लोगों को समझ में नहीं आता है, उस समय का रूप अलग ही होता है– आइना में उस समय का आप देखें तो ये मैं ही हूँ–हाँ आप ही हैं। कम से कम हमारे पास आकर पूँछ लिया करो, पारा कब ठंडा रहता है।

तारादेही के घर–घर पर, दुकानों पर पंचकल्याणक का प्रभाव है, यदि नहीं है तो 10 पंचकल्याणक करा लो तो भी कुछ होने वाला नहीं है। एक ही में समझो। अग्नि लकड़ी को जलाती है पर कब जलाती है, मौसम का भी प्रभाव पड़ता है। द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव को भी देखा करो। बार–बार अपने तापमान को देख लिया करो। गड़बड़ लोगों के साथ रहोगे तो गड़बड़ होगा ही। थर्मामीटर अच्छे से लगाओ जानत नहीं है–मानत नहीं है–ऊपर से तानत है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''सुन्दर भाव ही धर्म पुरुषार्थ''

07.01.2016 **प्रातः 09:30**

एक घर में एक संतान बीमार पड़ी। घर वाले डॉक्टरों के पास ले जाते हैं, अंत में एक वैद्यजी को दिखाते कहते हैं– अब आपके ही हाथ में है, बहुत डॉक्टरों को दिखाया कुछ नहीं हो पाया अब आपके पास लाये हैं। वैद्य जी– हम भी सेवा करते हैं–ठीक होगा तो देखते हैं। देखकर बोले हमारे पास इसकी दवा विद्यमान है– चिन्ता नहीं करना। दवा कब तक लेना है। हब सब बता देंगे। हाँ धीरे–धीरे प्रयोग करने पर यह काम करेगी। दवा चालू करने से पहले परीक्षा होती है जो रोगी पर आधारित होती है। न माता–पिता पर, न वैद्यजी पर एवं न ही किसी अन्य को यह तो रोगी को ही देना होता है। दवा पक्की है। पुण्य से इनको लग जायेगी। अभी ताली क्यों बजा रहे हो? इस दवा का प्रयोग मैं कर चुका हूँ। परीक्षा हुई– इस दवा का प्रयोग आपके बच्चे के लिये नहीं हो पायेगा। रोग की दवा तो है पर इसका शरीर उसे सहन ही नहीं कर पायेगा। इनको ये भी रोग है–3, इनको सुगर की बीमारी है। शुगर के साथ कोई दवा काम नहीं करेगी।

सब माला फेर रहे हैं। वैद्यजी भी चाहते हैं। खून भी डाल दें, पर स्वयं की योग्यता नहीं होगी तब तक कुछ भी नहीं हो पायेगा। धन बहुत है। पर धर्म धन के द्वारा प्राप्त हो ये नियम नहीं है। काहे से होत है– न काया से होता है न वचन से होता है। सबने सोचा इसमें क्षमता कैसे आये, पुण्य का संचय कैसे ले? आप जाप छोड़ो नहीं– भीतर जो बंधा है– संक्रमण होगा तभी काम होगा। आपका पुण्य जब प्रबल होगा तभी पाप को पुण्य में परिवर्तन कर पायेगा। यह परिवर्तन कब होगा। यह ब्लडप्रेशर या शुगर की बात है। भावों को हमेशा सुन्दर साफ रखने का प्रयास ही धर्मपुरुषार्थ है, बाकी सब बातें हैं। कार्य तभी होगा जब वर्तमान के भाव भी बहुत अच्छे हो। अच्छे भाव नहीं होने से कभी–कभी बनता काम बिगड़ जाता है। भगवान ने वह पुरुषार्थ किया और अपनी यात्रा पूर्ण कर ली। पर याद रहे भक्त बने बिना भगवान भी नहीं बना जा सकता है। हमेशा भगवान को याद रखें। मैं भी भगवान बन सकता हूँ। दोनों ध्यान में रखोगे, तभी काम होगा। भावों को उज्जवल बनाने का यह पर्याप्त अवसर है। नियमावली का पालन करते जाओ। भगवान के भरोसे रहो पर कर्त्तव्य के साथ। दवाई बहुत है पर काम तभी करेगी जब खाते में पुण्य होगा।

''मोह रूपी खग्रास ने घेरा आत्मा को''

08.01.2016 **प्रातः 09:30**

कुण्डलपुर की बात है– चातुर्मास में जब सुबह–सुबह 8 या 9 बजे के बीच की बात है। जब सुनने में आया कि आज सुबह–सुबह ग्रहण लग रहा है। चर्या तो हुई नहीं थी। खुला आसमान था। धीरे–धीरे दिन अस्त जैसा होने लगा। प्रातःकाल धीरे–धीरे संध्याकाल जैसा होने लगा। उस दिन खग्रास ग्रहण था। 'ख' यानि आकाश ग्रास का मतलब सूर्य को ग्रास बना लिया। अभी उदयाचल पर चढ़ना है पर अस्ताचल जैसा हो गया। सुनते हैं इस तरह के वातावरण में तालाब में खिले कमल भी पुनः बंद हो गये क्योंकि कमल सूर्य की रोशनी में ही खिलते हैं, पक्षियों की किलकिलाहट बंद हो गयी। कोइ नहीं कह सकता था कि प्रातः के 09:00 बजे हैं। जब वह ग्रहण लग गया तो सब शांत इसको देखकर लगा कि हम कितने बोने हैं प्रकृति के सामने। आसमान के उस सूर्य के अभाव में सब बंद हो जाता है। सज्जनों की पहचान तब सही होती है, जब सामने दुर्जन आकर खड़ा हो जाता है।

राहु काला होता है, इतना काला कि सूर्य को भी जब बंद कर लेता है तो प्रकाश बिल्कुल समाप्त हो जाता है। प्रत्येक आत्मा सूर्य के समान प्रकाशवाली है। मोह का खग्रास उस सूर्य के आगे आने से स्वरूप को पहचान ही नहीं पा रहे हैं, मोह की कालिमा ऐसी ही है। सब अपनी पहचान बताने में लगे हैं, हम यहाँ से आये–3, हम शिवनगर के हैं, हम तारादेही के हैं, हम जबलपुर से आये हैं, सब यह भूल जाते हैं, जब थोड़ा सा ग्रहण लग जाये तो चहरे का रंग उड़ जाता है।

आप सोच लो। आत्मा की पहचान करो। आचार्यों ने हमें बताया कि जैसे मोह बंधा है वैसे ही इसे थोड़ा–थोड़ा कम भी किया जा सकता है। मिटाने की विधि अलग है और कम करने की विधि अलग है। घर छोड़ दिया। दूसरे ने कब्जा कर लिया। आप नौकर हो गये और कह रहे हैं अब हमें थोड़ा नौकरी पर रख लो। आप अपने स्वाभिमन को देख ही नहीं रहे हैं। अपने स्वभाव परश्रद्वान करो, थोड़ा परीक्षण करो। यह शरीर मेरा नहीं है, यही मेरा परिचय है। कोई भी व्यक्ति शरीर को देखकर अपना परिचय नहीं बतायेगा। तुम कौन हो? ये मैं नहीं हूँ। सबका परिचय एक है। शरीर हम है ही नहीं। यही आत्मा का स्वभाव नहीं। सूर्य स्वभावी आत्मा पर मोहरूपी ग्रहण लगा है। हमें श्रद्वान दृढ़ करना होगा तभी आगे बढ़ सकते हैं श्रद्वान के अभाव में 84 लाख योनियों में कहीं भी जाओ अंधेरा ही अंधेरा है, संवेदन तो हो, ये मैं नहीं हूँ। संवेदन शरीर का नहीं आत्मा का होना चाहिये, ऐसा जो श्रद्वान करेगा उसे ही रास्ता प्राप्त होता है, बाकी सब भटक रहे हैं।

सूर्य को खग्रास ने निगल लिया। आत्मा तो सूर्य से कई गुना प्रकाशवान है फिर भी मोह की कालिमा से वह छिप गया। इस प्रकार समझ में आ गया होगा। हाँ थोड़ा–थोड़ा ही ठीक है, आपसे कोई पूछे रोटी खा लिये। आप क्या कहेंगे। नहीं आप रोटी खा ही नही सकते। रोटी को गैया खा सकती है, आप जब भी खायेंगे ग्रास बनाकर ही खायेंगे। जिनवाणी की बात को भी दर्शन ज्ञान चारित्र का ग्रास बनाकर देने से ही ग्रहण कर पाओगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''संगति का असर''

09.01.2016 **प्रातः 09:30**

संसार में अनेक प्रकार की वस्तु है, अनेक क्षेत्र है, अनेक प्रकार की दशायें है, इन सबके होते हुये भी संतों ने जो सही दिशा में अपने चरण उठा चुके हैं, उनकी बात मान लेने से हमारा कल्याण सम्भव है। परिवर्तन होते रहते हैं, पर उन परिवर्तन मैं हममें परिवर्तन हो ऐसा सम्भव नहीं। छोटा सा उदाहरण देता हूँ–जो प्रतिदिन काम आते रहते हैं। जैसे दूध को जमाना है। जमाने को जमाना बहुत कठिन है। दूध को रोज जमायें बिना दही के दर्शन नहीं, दही के बिना नवनीत के दर्शन नहीं। नवनीत के बिना कुछ देखना सम्भव नहीं। कई बार बादल हो जाते हैं, तो गड़बड़ हो जाता है। पानी–पानी रह जाता है, स्वाद भी गड़बड़ हो जाता है। जो कुशल व्यक्ति होता है, वह जमा देता है, वह कहता है, आप जमान नहीं देना। जामन बिना कैसे जमेगा। जामन दिया तो ऐसा कर दिया। उसने कर्म कराया। एक साफ बर्तन में डाल दिया। बिना जामन डाले दूध अच्छी तरह से जम गया था। क्या डाला? कुछ नहीं डाला। नजर भर डाला–बस उसी से जम गया। जमा तो ऐसा जमा की बर्तन को उल्टा करने पर भी नहीं गिरा। जमाना पलट जाये तो भी दही नहीं पलटेगा। वह मिट्टी की मटकी थी। एक बार दही जमाया–अब किसी जामन की जरूरत नहीं। कालान्तर में भी संस्कार काम करते हैं। अतः सदैव अच्छे व्यक्तियों के साथ रहो।

उस मटकी को किसी भी व्यक्ति को हाथ नहीं लगाने दिया जाता। मिट्टी के बर्तन में ऐसे ही संस्कार होते हैं कि कितने भी बादल हो जाये, सर्दी हो जाये, गर्मी हो जाये सदैव उस मटकी में जम जायेगा। पर उसे रसोई से बाहर नहीं लाना है। वहाँ सत्तरह नहीं चलेगा शुद्ध सोला ही चलेगा। ऐसा जमेगा कि कप्पे के कप्पे ही निकलेंगे। अभी तो जमाने को देखा अब नया जमाना खड़ा हो गया है। पंचकल्याणक कर रहे हो। कोई भी आ जाये उसे पर जमाने का प्रभाव नहीं–अच्छे ही संस्कार पड़ेंगे। अन्य बर्तनों के बारे में हम नहीं कह सकते।

मिट्टी के बर्तन चाहे वह अमीर का घर हो या गरीब का घर हो, कैसा भी मोसम हो वह जम जायेगा, नहीं जमेगा तो प्योर (शुद्ध) दूध रहेगा। इस प्रकार अच्छे व्यक्ति के साथ रहने से सदैव अच्छे संस्कार प्राप्त होते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''चलें भेद से अभेद की ओर''

10.01.2016 **प्रातः 09:30**

अभी आप लोग पूजन कर रहे थे, मैं सुन रहा था। उसमें कोई बाजा बजा रहा था, कोई गा रहा था, कोई नाच रहा था और कोई पूजन में अर्घ्य चढ़ा रहा था। ये सब के सब भगवान के भक्त हैं। हमारे सामने ही क्यों? अकेले भी तो कर सकते हैं। नहीं। दो धारा है साकार–निराकार। गृहीत या अगृहित। अब बताते हैं। एक व्यक्ति है वह मुख से गा रहा है, आँखों से देख रहा है, हाथों से हारमोनियम बजा रहा है, माथे को हिलाकर झूम रहा है अर्थात ताल भी ले रहा है, पैरों से ही नृत्य हो ऐसा नहीं है। यह भी देख रहा है विचार

कर रहा है कि मैं जो बोल रहा हूँ उससे श्रोता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। कुछ रुचि अनुसार न हो तो भृकुटि तान सकता है।

अभेद विवक्षा में ऐसा ही होता है। हम ऐसा ही करते हैं। कई बार आपको विस्तार से अलग–अलग समझाते हैं और कई बार भेद में न समझाकर अभेद में बता देते हैं। आज इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''कैसी हो हमारी दृष्टि''

11.01.2016 **प्रातः 09:30**

अभी आप लोगों ने पूजन के बाद सब लोगों ने एक मांग रखी। ..... मेरा सारा दुःख दर्द हरो। दुःख अलग और दर्द अलग है क्या? आचार्यों ने बताया दुःख क्या है और क्यों है तो दुःख–दर्द का कारण है। दुख दर्द से दूर होना चाहते हो तो इस बात को ठान लो कि यह शरीर ही दुख का कारण है। बाकी सब इसके बाद ही शुरू होते हैं।

इस ओर ध्यान देते नहीं, दुनिया में कहते–फिरते हैं, हमारा दुख हरो–हमारा दर्द हरो। क्या करें राग मानता ही नहीं। सम्भावना जहाँ हो उस ओर ध्यान देना चाहिये। मूल कारण दर्द होने का है–मोह कर्म। जब भी प्रारम्भ करना होगा, यही से शुरु करना होगा, धीरे–धीरे उपशम करना होना आप एक साथ चाहो तो नहीं वश में कर पाओगे। एक उदाहरण के माध्यम से समझ में आयेगा। कुछ बच्चे थे–रास्ते में एक कुत्ते को पत्थर मारा वह कुत्ता उस पत्थर की ओर भागता उसे मुँह में लेता चबाता और छोड़ देता तब तक दूसरा मित्र पत्थर मार देता ऐसे ही तीसरा मित्र भी पत्थर मारकर आनन्दित होता। योग की बात है वे तीनों मित्र जंगल की ओर गये थे। वे लोग एक पेड़ पर चढ़े थे। एक सिंह आया और उसी पेड़ के नीचे बैठ गया। उन बच्चों के पास कुछ पत्थर और रख थे। उन्होंने सोचा यह जंगल का बड़ा कुत्ता है। जब तक जायेगा नहीं तो उतरेंगे कैसे? एक बच्चे ने पत्थर फेंका–सिंह ने सोचा बच्चें हैं। दूसरे–तीसरे ने भी पत्थर फेंका अबकी बार उसने पत्थर की ओर नहीं देखा। ऊपर की ओर देखा। उसकी आँखें–मुँह–दांत बोल रहे थे। वह गाँव का कुत्ता था, यह जंगल का कुत्ता था। जंगल में कुत्तों से उलझना ठीक नहीं हैं। उन बच्चों को अब समझ में आ गयी।

कर्म का उदय है, पर भाव यदि ठीक है तो कर्म बंधन से बच सकते हैं। जो संसार विषै सुख होता–तीर्थंकर क्यों त्यागे। आपका भी अनुराग है, उनको भी अनुराग है। उन्हें संयमानुराग है, आपको विषयानुराग। उनकी सिंहवृत्ति है– आपकी श्वानवृत्ति है। श्वानवृत्ति वाला ही विषयानुराग करता है। गुरूवों की कृपा हो गयी दुनिया की ओर मत देखो अपनी ओर देखो। ..... संयम सो अनुरागे। पूछ लेते हैं, किससे पूछोगे अपनी पूंछ से पूछो। सागरोपम आयु भी यूँ ही बीत जाती है। कर्मों को हम जिस रूप में स्वीकार करते हैं, उसी रूप में उनका उदय हुआ करता है। सर्दी तब तक ही लगती है, जब तक मान्यता

है। सतना वालों को पूछो। पंचकल्याणक में जैसी सर्दी पड़ी, अभी तक कभी वैसी सर्दी पड़ी ही नहीं है। अच्छे–अच्छे व्यक्ति भी प्रातः पाण्डाल में दुपट्टा पहनकर आते वो भी सोले का धुला हुआ।

संकल्प लेकर बैठ जाओ तो सर्दी गायब हो जाती है, विकल्प करने पर ओर अधिक सर्दी लगती है और आगे बढ़ जाओ तो सर्दी में भी पसीना आने लगता है और गर्मी में भी ठण्ड का अनुभव करते हैं। जिन्होंने संयम से अनुराग किया उनके आगे–पीछे चलना ही हमारा कर्तव्य है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''फेर दो''

12.01.2016 **प्रातः 09:30**

तीन–चार समस्याओं का समाधान है, एक ही शब्द में। बचत करना चाहिये। जैसे–बाटी बन गयी वह जल गयी। ऐसा क्यों हुआ। घोड़ा जात्य घोड़ा था पर बीमार पड़ने लगा। तीसरा पान का धंधा करता था। उसकी भी एक समस्या थी (रखेगा–उत्तर दिया जायेगां चौथा और था)। ज्ञान था विद्या थी, उसकी भी एक समस्या थी। सबका उत्तर एक ही है। फेर दो। सर्वप्रथम पान वाले को ले। एक पान में दाग लग गया। सारे सड़ गये। इसका उत्तर है फेर दो। ताश के पत्ते की तरह फेरते रहो तो सड़ेगा नहीं। बाटी जल गयी क्यों–फेर दो तो जलेगी नहीं। घोड़ा जात्य था पर आपके यहाँ आकर बीमार क्यों होने लगा कारण घोड़ा कभी बैठता नहीं, आप काम में ही नहीं ले रहे उसको फेर दो–घुमा लाओ वह चंगा हो जायेगा। अब आपका नं. आ गया। 15 दिन हो गये। रोज सुनते हैं। महाराज याद ही नहीं रहता। मैं कहता हूँ रोज 2–3 बार तो फेरा करो। रात में भी फेर सकते हैं। तभी उसे अपना पाओगे।

जो मिला है, विशुद्ध है, आचरण में श्रेष्ठ है उसे बार–बार फेरते जाओ... अन्यथा समाप्त हो जायेगा। अंतिम समय में सावधान रहना है। ज्यादा कमाने की अपेक्षा जो कमाया है उसे सुरक्षित रखना जरूरी है। वह खिसकता है। कब खिसक जाये उसका पता भी नहीं चलता, इसलिये समय–समय पर उस परिग्रह को फेर दो। लक्ष्मी चंचला होती है। वह एक जगह स्थायी नहीं रहती। पर उस लक्ष्मी को फेरते रहोगे तो नहीं चाहते हुये भी बढ़ती जायेगी। (चरस चलाने वाला रात में आरा नहीं करता–फेरता रहता है तब जाके सवेरे पानी ही पानी हो जाता है।) पंचकल्याणक का अर्थ भी यही है फेर देना। हम भी फेरने आ गये। सही–सही ज्ञान का उपयोग इसी को कहते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''चिंता नहीं चिंतन करें''

13.01.2016 **प्रातः 09:30**

जो चिंता करता है, वह चिंतन नहीं कर सकता। आपस में विचारों में चिंता कराने की क्षमता है, पर अवसर पाकर चिंतन करना है, चिंता नहीं। यहाँ पर बहुत अच्छा विषय मिलेगा। चारों ओर पंचेन्द्रिय के विषय हैं– क्या विषय मिलेगा। सुनो। एक पाईप या नली थी। वह नली स्प्रिंगदार थी अर्थात मोड़ वाली बहुत सारे मोड़े थे। उसके एक छोर पर चिंटियाँ आयेगी– हम नहीं कर सकते सामने जो चिंटियाँ है वे उसे कर दिखायेंगी। विषयों की चिंता सता रही है, दुनिया गुजारा कर रही है, विषयों की ओर आना पड़ता है। अभी तक बता नहीं पाये अब क्या बता देंगे। वह व्यक्ति अनपढ़ उस नली के एक छोर पर धागे के मुख पर कुछ लगा कर रख देता है। बस कहाँ से ढेर सारी चिंटियाँ आ जाती है पता ही नहीं और उस धागों को मुख में पकड़ लेती है जैसे–जैसे पाइप मुड़ा है उसमें चलती जाती है। वह व्यक्ति उसे दूसरी मोड़ पर ले जाता है, वहाँ देखता है। चिंटियाँ धागे के साथ में देखता है। चिंता और चिंतन में इतना अन्तर है। चिंटी को चिंता है अपने मुख में जो कुछ पकड़े है, उसकी। वे चिंटी गंध के माध्यम से उसे खींच लाती है। स्पर्शन ज्ञान से नहीं ला सकती थी। सूत के एक छोर को पकड़कर एक मीटर से भी अधिक को पार करा दिया। आप लोग सुई में से तो पार कर दोगे पर पाइप वह भी मोड़ वाला नहीं पार कर पाओगे। ''संज्ञीनःसमनस्कः'' मनवाला ही चिंतन करता है।

उदास नहीं दास बनना है। रसनेन्द्रिय से भी नहीं पकड़ा प्राणेन्द्रिय से ही पकड़ा। आप सुन रहे हैं? हो । कर्णेन्द्रिय से। मन है तभी गर्दन को हिलाते हैं। शब्द कान सुन रहे हैं पर मन ने उस शब्द के भीतर के अर्थ को ग्रहण कर लिया। कैसे सुन रहे हो– मन से। ''श्रुतम् अनिन्द्रियस्य'' जितनी भी इन्द्रियाँ होती है, सबके पास संज्ञा तो होती है। आचार्य उमास्वामी ने यही कहा कि प्रत्येक जीव के पास चारों संज्ञा होती है, पर मन के पास उस संज्ञा में से अर्थ निकालने की क्षमता है।

अर्थ नहीं निकालोगे तो पुनः एक से चार इन्द्रिय बन जाओगे। इसलिये बार–बार अर्थ लगाया करो। यूँ तो गुजारा सब करते हैं, पर विचारक ही गुजारा कर पाता है। क्या करें हम दुःख के कारण रो रहे हैं, यहाँ सुख के कारण भी रो रहे हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''वीतरागता की सुगंध''

14.01.2016 **प्रातः 09:30**

हमारे सामने दो तरह के जीव दिखते हैं। एक पंखवाला दूसरा भी पंखवाला है। वहीं आसपास में बगीचा लगा हुआ है, गुलाब खिले हैं। गंध भी अच्छी आ रही है। वह भी घूम रहे है।। एक भंवरा है, दूसरा घुमरा (घोमरा) । एक फूल के ऊपर गीत गुनगुनाता हुआ खुशबु का आनंद ले रहा है पर दूसरा वहीं एक मल में जाकर बैठ गयां भंवरे का मात्र यही उद्देश्य है कि मुझे मकरन्द का सेवन करना है। फूल से कोई भी घात न पहुँचे। दोनों के पास गंध का विषय पर एक उस गंध में इतना आसक्त की उसी मल में अपने प्राण गंवा देता है पर दूसरा उसका सेवन दूर से कर रहा है।

ज्ञानी एवं अज्ञानी में इतना ही अंतर है। मिथ्यादृष्टि मल का कीड़ा है तो सम्यग्दृष्टि/ज्ञानी के लिये भ्रमर की उपमा दी जाती है। चारों ओर विषयों की भरमार है। ज्ञानी उन सब के बीच रहते हुये भी संसार का कारण मानता है। वह सदैव गुणों से ही अनुराग रखता है। भ्रमर की भांति वह ज्ञानी जीव विषयों के मध्य रहते हुये भी वीतराग देवशास्त्र गुरू को ही स्मरण में रखता है। अभी तक कहीं नहीं सुना कि भगवान ने अपनी प्रतिष्ठा स्वयं कर ली हाँ भगवान दीक्षित तो स्वयं ही होते हैं, पर प्रतिष्ठा होती अवश्य है, जो भक्त के अधीन होती है। आप लोगों ने अच्छा विचार किया। (तीन भगवान का) अभी आपके हाथों में है, जब आयेंगे तो अपने अनुसार बनायेंगे।

अहोभाग्य/महाभाग्य समझो कि ये सुअवसर आया है। दो भगवान मुस्कान भरे और आ गये। पंचेन्द्रिय विषयों के मध्य रहते हुये भी अपने को सुरक्षित रखना है। घुमरा एवं भ्रमर का उदाहरण याद रखेंगे। राग की ओर नहीं जायेंगे–वीतरागता का पराग सदैव पीते रहेंगे। विषयों के बीच में रहते हुये भी उस आत्मतत्त्व का ही सेवन करना है। चार इन्द्रिय जीव के माध्यम से छोटा सा वक्तव्य रखा बाकी सब तो द्रव्य का परिणमन है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''स्थायी है सफेद रंग''

15.01.2016 **प्रातः 09:30**

एक पात्र में पांच रंगों को लाकर रखा गया। काला–पीला, हरा–नीला, लाल। सफेद नहीं था उसको रंग मानते ही नहीं हैं। कोई भी चित्र बनाना चाहते हो तो दो वर्ण होना जरूरी है, एक वर्ण रहता है तो किसी प्रकार का चित्र नहीं बनता है। नाक, कान, होंठ आदि के लिये दूसरा भी वर्ण आपेक्षित है। एक वर्ण से यदि करना चाहो तो नहीं हो पायेगा।

जल को पूछा गया कि हे जल बता दे तुम्हारा रंग कैसा है। जल ने कहा– जैसा संग मिलता है वैसा ही हमारा रंग हो जाता है। पेपर पर स्याही लगी है– कैसी है नीली है। नीली क्या है? कपोल कैसे–कागज पर गोल बनाओगे तब कपोल होंगे। बीच में जो रह गया वही कपोल। जल की यह कुशलता है जिसके पास रह जाता है, उसको ही ऊपर उठाता है। हमें भी ऐसा ही करना है। दूसरों को ऊपर उठाना चाहते हो तो पहले स्वयं को जल बना लो। आप लोग अभी केसरिया रंग के परिधान पहनकर आये हैं। यह रंग थोड़ा धूप लग जाये तो उड़ जायेगा। सफेद रह जायेगा। सफेद को किसी रंग में माना ही नहीं, जब कि शुक्ल लेश्या से ही परमात्मा बनते हैं।

आज से हमारे रंग में रंग जाओ। हमारी बात मानना शुरू करो। नहीं मानोगे तो पिटाई होगी। बाहर से आयेंगे समय पर सब कार्य करना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''चिपको मत उड़ो''

22.01.2016 **तारादेही** **प्रातः 09:30**

आप लोगों ने एक चीज देखी होगी। गाँव वालों को उपलब्ध होता है, शहर वालों को ये नसीब नहीं होता। सामायिक में बैठा था। एक अकवा का फूल जिसे दक्षिण में बब्बा कहते हैं उड़कर आया। हवा न भी चले तो भी बब्बा उड़ते रहते हैं। एक बब्बा जो उड़कर आया देखा उसका रोम–रोम बहुत मुलायम होता है। बीचों–बीच में एक काला बीज रहता है। ये उस बब्बा का परिचय है। जिधर हवा हल्की सी भी चले उड़ जाता है। अर्कतूल जैसा हल्का होता है न ही लोहपीण्ड जैसा भारी होता है। उड़ता–उड़ता वह बब्बा किसी चीज में फंस गया। आचार्य कुन्दकुन्द ने भी लिखा– ''रत्तो बंधादि कम्मं..... ।

हवा होने के बाद भी वह नहीं उड़ा। बब्बा बन गये हो। आत्मा की क्या स्थिति होती है, इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है। पराये को ज्यों ही हमने स्वीकार किया नहीं, बस चिपक जाते हैं भले ही पराया हमें स्वीकार करे या न करे। बब्बा उससे चिपक गये। जो घर में अनुपयोगी हो गये हैं, फिर भी चिपके हुये हैं। उस अकुब्बा की तरह उड़ते जाओ, उड़ते जाओ अन्यथा कहीं भी चिपक गये तो जीवन पर्यन्त किया हुआ कुछ काम नहीं आयेगा। जो कमाया है शान्तिनाथ के धाम में लगा दो। हमें याद आ गया यहाँ बारी–बारी से पूजन करने की परम्परा बंद होना चाहियें स्वास्थ्य ठीक है तो प्रतिदिन अभिषेक–पूजन करना है।

बड़े बाबा का जिनालय विशाल बना है, कितने भी आकर बैठ जायें जगह कम नहीं रहेगी। 15–20 दिन में एक दिन सामूहिक शांतिविधान भी कर सकते हैं। यहाँ का पुण्य की नामकरण का निवेदन है कर रहे थे– ''शांतिधाम'' नामकरण भी हो गया। अभिषेक–पूजन–जाप–विधान होते रहने चाहिये। भक्ति का माहौल होने से देव लोग भी रमने लगते हैं अर्कतुल का उदाहरण याद रखना। ऐसी देखकर शिवनगर वालों के मुंह में भी पानी आने लगा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''करें उगते सूरज को प्रणाम''

23.01.2016 **प्रातः 09:30**

भानु जब उगता है और जब अस्ताचल की ओर जाता है तो एक रंग आता है। अर्थात आसमान में ललाई छा जाती है। ललाई के साथ भानू के आने से भोर होती है जब वह धीरे–धीरे ऊपर उठता है तो ललाई समाप्त हो जाती है। अब घाम आ जाता है। जो ललाई मुख पर ले रहे थे अब घाम हो गया तो पीठ पर लेलो। फिर वापस अस्ताचल के समय ललाई आ जाती है। पर वह भोर नहीं है, अपितु घोर अंधकार की ओर ले जाने वाली है। दोनों में ललाई है पर बहुत अन्तर है।

जो ध्यान नहीं लगा सकते वे कोमल चर्या कर लें, उसमें भी पुण्य बंध होता है। पुण्यानुबंधी पुण्य बंध की ओर ले जायेगा पंचेन्द्रिय विषयों की सामग्री जुटायेगा। पर एक वह पुण्य है जो पापानुबंधी है। रात में

सोयेगा विषयों में डूबेगा। गृहस्थों के लिये भी भोर की ललाई को ही अपनाना चाहिये। आचार्यों ने विषय से बचने की प्रेरणा दी है। इसलिये भोर हाते ही उठ जाओ। शांतिनाथ के चरणों में शांतिधाम आओ पूजा करो। अभिषेक करो। जाप करो। भोर से सूर्य के दर्शन कर सकते हैं। बाद में वही तपता है तो उस पर देख भी नहीं सकते किन्तु धन्य है वे मुनिराज जो ऐसे घाम में भी पर्वत की चोटी पर जाकर सूर्य की ओर मुख करके तपस्या करते हैं। वे पीछे मुडकर देखते हीं नहीं।

दोनों संध्याओं के बीच वह भानु आता है। कौन सा भानु देखना है यह आप तय करते इतना जरूर है कि दोनों ललाई में बहुत अन्तर है। और भोर का भानु ही अनुकरणीय है विषयों से छुड़ानेवाला है। नँ

इर्यापथ में :– आहार के एक घंटा पूर्व एवं एक घंटा बाद धूप नहीं लेना।

एक छत्र राज था। आचार्य श्री अकेले रहेंगे तो एक ही छत्र मिलेगा। भरत जी घर में वैरागी–लौकान्तिक देव भी नहीं आयेंगे ऐसे में।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''टांके का पानी''

24.01.2016 **प्रातः 09:30**

बुंदेलखण्ड के इतिहास में किसी ने कहा। बहुत बड़ा है बुन्देलखण्ड तो। एक हाथ में गमछा हो एक हाथ में डोर–लोटा हो बस पहचान है कि ये बुंदेलखण्ड है। पंचकल्याणक में दूर–दूर से मेहमान आये। कुछ चले गये और कुछ और चले जायेंगे हम भी उसी में शामिल है। पंचकल्याणक से प्रतिष्ठित प्रतिमा का रोज पूरा–अभिषेक करो। इसके लिये ही डोर–लोहा कहा नल–लोटा नहीं कहा। आप लोग यही कहेंगे– महाराज यह ही तो मांग है। पूर्वजों ने क्या किया। दूर से लाना पड़ता है। इसलिये तो एक व्यक्ति पकड़नेवाला, एक खींचने वाला, एक बाल्टी पकड़ने वाला तो एक वापस भरी गुण्ड लाने वाला इतने लोग तो चाहिये। नल का पानी बीमारी का भी कारण हैं शुद्ध नहीं है। पहले भी टांके होते थे। वह पानी शुद्ध होता है। बीमारी में बहुत लाभप्रद है। मधुमेह, हार्ट, पेट, दाँत, आँखों आदि में वह जल बहुत अच्छा माना जाता है। यदि सात–आठ व्यक्तियों के बीच में एक टांके की व्यवस्था हो जाये तो सारे के सारे तारादेही के व्यक्ति व्रती बन जायेंगे। हमने भी सोचा एक आध व्यक्ति व्रती क्यों बनायें।

घड़ा (कलश) लेकर बाहर निकलोगे तभी पानी मिलेगा। एक बार समनापुर होते हुये यहाँ आ रहे थे। किसी के सिर पर दो किसी के सिर पर तीन कलश ऐसे कई लोग मिले। मंगल हो गया। घर के बाहर निकलोगे तभी मंगल कलश दिखेगा। शहरों में तो यह नियम ही कर दिया है कि आपके मकान में इतनी भूमि में वह कांटा निर्माण से पूर्व ही बनाना है। जल को भूमि में छोड़ेंगे तभी तो पानी मिलेगा। जल नियमन की यह विधि सर्वोत्तम है। वर्षा की कमी तो है नहीं। वर्षा की कमी हो तो जाप करो भगवान की भक्ति करो, शांतिविधान करो, वर्षा तो ऊपर से आयेगी ही। जितने बूड़े–बाढ़े हो गये उनको तो व्रती बनना ही है। यहीं से ऊपर जाता है और कहीं तो जाना है नहीं। इससे शुद्ध पानी ओर कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकता। इस

प्रकार का यह पानी जिसमें हाथ तो लगता ही नहीं, बिल्कुल शुद्ध माना जाता है। स्याही भी इसी पानी से बनती थी। उसी पानी से भगवान का अभिषेक भी कर लो और चौके में आहार हेतु भी उपयोग कर लो। ऐसा भी सुनते हैं, जो जल धरती पर छोड़ा वह जल रिसकर धरती में जाता है। ऊपर से नीचे क्यों जायें भगवान की ऐसी भक्ति करो नीचे से ऊपर आ जाये। क्यों नहीं आयेगा। पानी जरूर आयेगा। हाँ नाममात्र की भक्ति नहीं पूर्ण भक्ति करें हमारा आशीर्वाद भी तभी फलता है जब आपकी भक्ति जोर पकड़ती है। ध्यान रखो। काम तो आपके द्वारा ही होता है, हमारा तो नाम होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''बादल का त्याग''

25.01.16 **तेंदूखेड़ा** **प्रातः 09:30**

आज तारादेही से बिहार करते हुये खेड़ा गाँव में आना हुआ। चातुर्मास में बादल घने एवं काले–काले आसमान में मंडराते रहते हैं। वही बादल जब बरस जाते हैं तो श्वेत एवं धवल–धवल हो जाते हैं। आप सब समझ रहे हैं। यहाँ मन्दिर जी का शिलान्यास करा कर गये थे सुना है वह अब जमीन से बाहर आ गया है। दान करना प्रकृति का स्वभाव है। आचार्यों ने श्रावक के छः कर्मों का उल्लेख करते हुये दो कर्म पूजा एवं दान को मुख्य बताया शेष चार इनमें ही गर्भित हो जाते हैं। आप लोगों ने इस जिन–मन्दिर में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया है। अभी उसमें और दान करना है।

वर्षा होती है तो कड़ी भूमि भी फूलकर नरम हो जाती है, किसान समय पर बीज डाल देता है। उसमें से जो फसल तैयार होती है वह सब के लिये दे देता है। ऐसा नहीं की मात्र अपने ही लिये रखे। सबको बांट देता है। यह क्रम सदैव बना रहे अतः दान करने में कभी पीछे नहीं हटना। गृहस्थी के लिये दान ही ऐसा उपक्रम है जो आपके परिग्रह को/न. में बनाता है। न. का मतलब सब जानते हैं, ज्यादा खोलना नहीं है। न. में जो अपनी लक्ष्मी को करना चाहता है, उसे दान देना चाहिये। बादल का त्याग कभी भूलना नहीं। उसका त्याग महान है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''शरीर को नहीं शरीरी को देखें''

26.01.16 **तेंदुखेड़ा** **प्रातः 09:30**

अभी एक व्यक्ति ने कहा महाराज हम आपके चरणों में कैद होना चाहते हैं। आप कैदी कहलाओगे और हमारे चरण जेल हो जायेंगे। क्या है संसारी प्राणी? अभी जो दिख रहा है वह हमारा परिचय है ही नहीं। जो आप लोग फोटो उतारते हो वह भी मायाजाल है, उस मायाजाल से ऊपर उठना जरूरी है, इस

रहस्य को कोई भी समझ ही नहीं पा रहा है। उसे समझना चाहते हो तो इस उदाहरण से समझे– चूना एवं हल्दी दोनो अलग–अलग हाथ में है, ये दोनों मिलते ही दोनों का अस्तित्व जिस रंग के रूप में देख रहे थे वह गायब हो गया। देखते ही देखते तीसरी वस्तु तैयार हो गयी जिसको रोली बोलते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ये शरीर जो रोली की भांति है– न हल्दी को याद करते है न चूने को। भूल चुके हैं। शरीर पाने के बाद ऐसा ही होता है। स्वरूप को समझना तथा समझने के बाद पाना दो अलग–अलग प्रक्रिया है। इसके लिये हमें हल्दी एवं चूने का अस्तित्व स्वीकार करना होगा। मात्र शरीर को देखने से कार्य नहीं हो पायेगा। हल्दी को ही साबुन–सोडा मानेंगे तो वह कभी साफ होने वाला नहीं है। किसने बनाया रोली को– बनाया किसी ने नहीं दोनों एक जगह रख दिया तो ऐसा हो गया। इसे बच्चों का खेल नहीं समझना। जिनालय का निर्माण हो रहा है, इसमें कहीं भी रोली नहीं रहेगी। आपके घर–दुकान का भी संबंध इससे नहीं रहेगा। बाहर वाले जब आयेंगे तो कुछ नहीं देखेंगे। आलय नहीं देखेंगे जिनालय देखेंगे। उसे समझ पायेंगे तभी अनादिकाल से चल रहे रोली जैसे होली को पहचान पायेंगे–दीपावली जीवन में आ जायेगी। दोनों ही त्यौहार है पर एक को अच्छा मानते हैं, दूसरे से सब बचना चाहते हैं। हमारी दृष्टि में वीतरागता आ जाये। वीतरागी को देखने से हमें वीतरागता का ज्ञान हो पाता है। भगवान को विराजमान करना है। ऐसा का करना है, जिसे देखकर हर व्यक्ति के मुख से यही निकले कि हमारे पूर्वजों ने ऐसा कार्य किया है। मनुष्य जीवन की सार्थकता यही है। कहाँ से आये हैं–कहाँ जाना है। कुछ पता नहीं अतः कुछ कर लो। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। आज के हल्दी–चूने–रोली को भूलना नहीं। रोली को फेंक देंगे तो हल्दी और चूना तो चला ही गया। हल्दी और चूने के बीच जो रासायनिक परिवर्तन हुआ उसे समझना ही भव्यता की पहचान है। आपको इसका भान होना चाहिये। मोह राग–द्वेष का ताला जो चित्त पर लग जाता है तभी बार–बार ऐसी नोबत आती है। बार–बार उस मन को संभालकर स्थिर करने का प्रयास करें। सही स्वरूप मन में आता रहे। जो अपने आपको संभालेगा वहीं मन को भी संभाल पायेगा। इस अर्न्तद्वन्द के समापन करने की प्रक्रिया हमेशा–हमेशा चलती रही। ऐसी भावना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''संस्कार बचायें पूर्वजों के''

27.01.16 **तेंदूखेड़ा** **प्रातः 09:30**

आप लोग जानते हैं, ऊपर से वर्षा होती है सूखी मिट्टी दलदल में बदल जाती है। रिमझिम–रिमझिम पानी बरसता रहता है तो बाहर जाने की इच्छा तक नहीं होती। शाम तक चली। रात में सो गये। सोचा आज तो दलदल बहुत हो गया होगा। सुबह दलदल कहाँ गया। आगे चलने पर और साफ–सुथरा मिला। घर से भी साफ मिला। सोचा थोड़ा पानी गिरा होगा पर रात्रि में तेज वर्षा हुई और वह पानी सारा का सारा लेकर बह गया।

आज लोग 24 घण्टे में धार्मिक कार्य थोड़ा सा करते हैं, तो वह देखने में नहीं आता पर वही धार्मिक

कार्य ज्यादा तेज कर देते हैं तो दलदल छूट जाता है। वर्षा भारी होना चाहिये। दलदल मचाया भी आप ही लोगों ने है। इसे साफ भी आपको ही करना है। आप लोगों को भी मनःपर्यय ज्ञान होने लगा है। विषय कषायों की अपेक्षा तो बहुत उदार हो जाते है, धार्मिक अनुष्ठान में अब करना तो पड़ेगा ही। करना पड़ेगा यही आपकी मानसिकता दर्शा रहा है। अब महाराज नगर में आ ही गये हैं। ऐसा नहीं स्वेच्छा अपनी शक्ति के अनुसार धार्मिक अनुष्ठान किया जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है कि जो व्यक्ति धार्मिक अनुष्ठान को तो देखता है पर उसके फल की इच्छा नहीं रखता वह गृहस्थ होकर भी बहुत आगे का साधक है। और जो मुझे यह मिले–मुझे ये मिले ऐसा सोचता है वह लेनदेन कर रहा है। लेन है तो देन है। भगवान तो वीतरागी है, उनके पास तिलतुष मात्र भी नहीं है, फिर भी आप मांग रहे हैं, अरे मांगो तो कम से कम सोच विचार कर मांगो। एक दुकान तो खुल गयी– दूसरी के लिये महाराज आर्शीवाद दे दो। जिनेश भैया–दुकान भी गाँव में नहीं शहर में खुल जाये ऐसा चाहते हैं। आचार्य श्री. साधु लोग भी गाँवों में रुकने लगे तो शहर में कोई नहीं जायेगा। हम तो खेड़ा में आये हैं पर आज जो खेड़ा है वह बहुत बड़ा हो गया है। अब दो–दो किमी तक भी खेड़ा की सीमा समाप्त नहीं होती।

विकास हो पर उस विकास के साथ हमें अपने संस्कारों को भी सुरक्षित रखना होगा। जो पूर्वजों से आया है उसे सुरक्षित नहीं रखेंगे तो क्या होगा। पहले सोना–चांदी था, जिसका कुछ मूल्य था आज कागज है– रद्दी है। कागज का मूल्य घटता जा रहा है। जबकि सोने–चांदी का मूल्य बढ़ता जा रहा है। पीछे के इतिहास को भी देखो पूर्वजों की दृष्टि कागज के ऊपर नहीं थी अपितु हीरा, माणिक, पन्ना, सोना–चांदी आदि पर थी। विदेशी बहाव में मत बहो। सोचो भारत क्या था। आत्मा की बात करने वालो कभी ये भी सोचो कि हमारे पूर्वज क्या थे। बच्चों को यह पाठ पढ़ाना होगा। आत्मतत्त्व तक पहुंचने के लिये हमें इस ओर देखना होगा। तभी उसे साफ–सुथरा रख सकते हैं। हम कौन थे– कहाँ से आये यह बच्चों के सामने भी रखना होगा। चातुर्मास में कई बार आये हम भी कई बार आये हैं। इस बार फिर से लौटकर आये हैं। मुकाम नहीं किया था पर इस बार मुकाम भी हो गया। जो कार्य हाथ में लिया उसे पूरे उत्साह से पूरा करना। संकल्प को याद रखो। बच्चों पर ऐसे संस्कार छोड़कर जाओ ताकि वे आपसे भी आगे बढ़े। दद्दा सदैव यही सोचते हैं कि नाति की दुकान सबसे बड़ी हो। पूर्वजों की ये ही भावना रहती है। इसी भावना से मन्दिर शीघ्र बनें।

बाधक कारण का अभाव एवं साधक कारण का सद्भाव ही कार्य का प्रार्दुभाव है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''क्षुधा की शांति कैसे?''

28.01.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोग अष्टमंगल द्रव्य से भगवान की पूजा करते हैं। एक–एक अर्घ्य चढ़ाते समय भगवान से कहते हैं, इसके बदले में मुझे यह मिले। आप बोलते हैं क्षुधा रोग निवारणाय नैवेद्यं नि. स्वाहा। क्षुधा रोग कब से आया, क्यों आया, उसके बदले में क्या चाहते हैं। लेकिन आप लोग इस रोग को बढ़ाने वाले ज्यादा है, मिटाने वाले कम है। नीचे की पंगत लगभग सभी लोग इस रोग को बढ़ाने वाले हैं। कितने दिन चढ़ाते–चढ़ाते हो गये। भीतर भी चढ़ाते हैं और बाहर भी चढ़ाते है फिर भी क्षुधा रोग मिट नहीं रहा है। यदि बीमारी बढ़ रही है तो समझदार वही है जो वह दवाई नहीं लेता। विज्ञान ने बहुत छान डाला फिर भी समय पर भूख क्यों लगती है? आज तक पता नहीं लगा पाया। याद करने से भूख लगती है। देखने पर भगवान से कहते हैं एक पेट ओर होता तो अच्छा होता। यदि शरीर में कोई गड़बड़ हो जाये तो कई तरह के विचार आते रहते हैं, जब इतना सब कुछ दिया तो अच्छा पेट भी देते। इस क्षुधा रोग को बढ़ाने की बजाय जो नाश करने में लग गये वे महान है। जिनके पास यह दोष ही नहीं वही तो भगवान है। जिनके पास दोष स्वयं में हो तो क्या उनसे मांगने पर मिलेगा कुछ मिलने वाला नहीं है।

शरीर है तो यह रोग होगा ही कुछ ऐसे भी हैं शरीर है पर भूख नहीं वे भी महान है। पर कुछ ऐसे भी है मुख से ले नहीं सकते, बीमार हैं फिर भी बाइपास करके दिया जा रहा है। स्वाद नहीं कैसा है वह, गरम है या ठण्डा है, आज का है या बासा है, कुछ पता नहीं। अब तो भगवान उठा लो तो अच्छा है। इन सबको जानते देखते हुये भी आज का व्यक्ति अंडरग्राउण्ड में जाकर मुझे ये करना है, मुझे ये करना है विचार कर रहा है। एक बाल को भी इधर से उधर करने की शक्ति है ही नहीं इसके पास। क्षुधा रोग को मिटाने के लिये बम पटक रहा है। उससे कुछ नहीं होने वाला। आकांक्षायें/इच्छायें क्यों होती है इस ओर गहन अध्ययन करना है। अच्छी–अच्छी प्रतिभायें भी इसी ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर रही है। वे कैसा पढ़ालिखापन है। शोध वा कोई न कोई आधार जरूरी है। इसके लिये आज का भौतिकी जीवन जिम्मेदार है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में ये सब नहीं है। अरबों–खरबों लगा देते हैं, इसे खोजनें में पर नहीं खोज सकते। जो मनगढंत है उसे अपनी झूंठी उपलब्धि गिनते हैं, भिन्न–भिन्न परिणाम हमें देखने में आते हैं। वस्तु का कभी उत्पाद–नाश होता ही नहीं, बुद्धि ठीक स्थान पर न होने से यह हो रहा है। अभी उदाहरण रखा–कंठ में रोग हो गया। बाइपास वर्षों तक चल रहा है। वस्तु पहुंच रही है पर जिह्वा देवी की तो आराधना हो ही नहीं रही। शारीरिक एवं मानसिक पूर्ति दोनों अलग–अलग है। दो मशीनों को मिलाना गलत है। मानसिक पूर्ति के लिए शरीर को कष्ट देकर भी पूर्ति करना (शारीरिक पूर्ति) कहाँ तक सही है। ये अबुद्धिपूर्वक कर रहा है या बुद्धिपूर्वक कर रहा है। इसलिये 'क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा' कहा।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''लज्जावान हो हर प्राणी''

31.01.2016 **प्रातः 09:30**

अभी पूजा हो रही थी। गीत भी था संगीत भी था। गीत–संगीत दोनों चाहिये। पर किस अनुपात में चाहिये यह महत्वपूर्ण है। गीत समझ में भी आना चाहिये। आप नहीं समझेंगे तो क्या मैं समझूंगा। कानों में बहुत झन्कार आयेगी तो कुछ भी समझ में नहीं आयेगा। रोगी को भी संगीत के माध्यम से चिकित्सा दी जाती थी। इस तरह के संगीत में तो वह 8 मिनिट में नहीं 8 सेकेण्ड में ही चला जायेगा। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के माध्यम से अनुपात की शिक्षा लेनी चाहिये। भावों के माध्यम से भी प्रभाव पड़ता है। भावों का प्रभाव विज्ञान माने या न माने अवश्य होता है। एक पुरुष मुंह में कुल्ला लेकर पानी फेंक देता है। महिला भी कुल्ला करके थूंक देती है। एक बेल थी लाजवती–लाजवंती। पुरुष के नाम से कोई बेल नहीं होती। स्त्रीवाचक है लज्जवती। पुरुश के पैर से खिलती है और स्त्री के पैर से सिकुड़ती है। पुरुष के भावों में और स्त्री के भावों में अंतर है। ये विज्ञान की मशीन के पकड़ में नहीं आयेगा। पर वितराग विज्ञान इसे पकड़ लेगा। आज सभी उस अधूरे विज्ञान की ओर दोड़ लगा रहे हैं। हम शब्द जो बोलते हैं उसके माध्यम से यदि बटन दब जायेगा आत्मा जागृत हो जायेगी। विषयों में सारा जीवन लगा दिया है, अब जागृत हो जाओ।

आप संगीत सुन रहे हो उसका अनुपात कितना समझने की भी आवश्यकता है। विद्वान अलग वस्तु एवं विज्ञान अलग वस्तु है। माना कि ये विज्ञान में भी है पर क्षेत्र की अपेक्षा काल की अपेक्षा अलग–अलग लगाना है। मानने के बिना गीत भी नहीं संगीत भी नहीं। विज्ञान भी नहीं वितराग विज्ञान भी नहीं। अपने पास लाजवंती रखो। लज्जावान बनो तभी भारत बचने वाला है अन्यथा भारत बचने वाला नहीं है। इस माल को आप सभी लोगों तक पहुंचाओगे, आपका स्वयं पर उपकार होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''शरीर को नहीं आत्मा को देखें''

01.02.2016 **प्रातः 09:30**

छोटे बच्चे फुग्गा से खेलते हैं। वे दो तरह के होते हैं। एक गैस वाला एवं दूसरा रसायन एवं पानी वाला। पानी वाले को जब कभी पानी में डालो तो उसमें भारी हिस्सा नीचे एवं खाली हिस्सा ऊपर रहता है। गैस वाला तो ऊपर ही उड़ता रहता है क्योंकि वह हल्का होता है। यह जीव भी हल्का होने पर ऊपर की ओर गमन करता है। दूसरा जैसे फुग्गे का अस्तित्व हवा से है उसी तरह इस शरीर का अस्तित्व आत्मा से है। आत्मा निकली की यह कोई काम का नहीं रहा। जिस शरीर के नाम के लिये अथवा उसको बनाये रखने के लिये उसके इतने गुलाम हो रहे हो आत्मा के बाहर जाते ही इसे देखना भी पसंद नहीं करते। फिर तो भैया उठा दो; सड़न–गलन चालु हो जायेगा।

और उसे उठा दिया जाता है। एक दृश्य समाप्त। संसारी प्राणी इस दृश्य को जल्दी भूल जाता है।

ज्ञानी इस भूल भुलईयाँ में भी अपना रास्ता पकड़ लेता है। भीतर तत्त्व रहता है। तभी तक फुग्गा की कीमत रहती है। हाँ यह संसारी प्राणी आगे फिर से एक नया फुग्गा बना लेता है। मोक्षमार्ग में नहीं चलोगे तो संसार मार्ग तो है ही। संक्षेप से सुन लो या विस्तार से सुन लो। अभी हमारा नं. नहीं, आयु कभी नं. नहीं देखती।

शरीर जीर्ण–शीर्ण होकर बिखर जाता है, नूतन कर्म बंधते रहते हैं। ज्ञान इन कर्मों को काटने का प्रयास करता रहता है। एक दिन वह पूर्ण सफलता भी प्राप्त कर लेता है। एक द्रव्य ऐसा भी जो दिखता नहीं पर उसके बिना भी हलन–चलन संभव नहीं। हर संसारी प्राणी की जो क्रिया देख रहे हैं उससे जीव तत्त्व की अनिवार्यता हो जाती है। आप सभी पूजन करने आये थे, हम बैठ गये आपने पूजन की प्रवचन भी दे दिया।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''भावों की महानता''

08.02.2016 **प्रातः 09:30**

सबको विदित है एक दीपक से दूसरा दीपक जल जाता है और भी दीपक जल सकते हैं। भावों की प्रधानता से जलते है। द्रव्य का आलम्बन लेने वाला भी महत्वपूर्ण है, दोनों का आलम्बन लेने से भीतर एवं बाहर दोनों रूप का अंधकार दूर हो जाता है। जंगल में चारों ओर सूखा–ही–सूखा है, खेत सूख गये हैं, पर कुछ ऐसे पेड़ भी है, जिन पर नये कोंपल पत्ते–फूल आये हुये हैं, अपनी खुशबु बिखेर रहे हैं, उनको ऊपर से किसी ने पानी दे दिया। भीतर पानी होता है तो और भी पेड़ हरे होते। भावों की यही महिमा है। पतझड़ होने पर भी वह पेड़ हरा–भरा बना रहा।

सब कुछ होते हुये भी अपने भावों को हरा रखो, जैसे भी हो अपने भावों का न गिरने दे। सांसारिक विकृतियाँ इन्हीं भावों से होती है। कम से कम इन सब के बीच में रहते हुये भी भावों को सुरक्षित रख सकते हैं। गाड़ियाँ आती रहती है, जाती रहती है। भले ही आप हाइवे पर रहते हो पर घर से बाहर निकलना होगा। टिकिट लेना होगा, गाड़ी में बैठना होगा, तभी पहुँच पाओगे। ये भाव जब होंगे तभी पर्याप्तक कहलाओगे अर्थात पूर्णता प्राप्त करेंगे।

भावों से वृद्धावस्था में भी जीवन मिल जाता है, अन्यथा युवावस्था में भी प्रमादी बन जाता है। ऊपर के द्रव्य पर नहीं भीतर के भावों पर सदैव दृष्टि रखो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''एकता में एकतान है''

09.02.2016 **प्रातः 09:30**

वादन, गायन, नूतन के साथ पूजा हो रही थी। इन तीनों का योग है। एक भी कम हो तो आनंद नहीं और बेताल ही तो भी आनंद नहीं आयेगा। तीनों में एकता आ जाती है तो एक तान हो जाती है। एकमेक हो जाना ही एकतान है। प्रभु अलग, भक्त अलग, भक्ति अलग इन तीनों में एकता हो जाये तो एक तान हो जाती है। पात्रता के साथ भावों में परिवर्तन आता जाता है। गर्दन आदि से भी नष्त्य कर लेते है। प्रभु तो तीनों लोकों को देखते रहते हैं। सोचते हैं ये लोग एकता के साथ लीन होने जा रहे हैं, वे हमेशा देखते रहते हैं। प्रभु त्रेकालिक दशायें एवं दिशायें सब जानते हैं। अपने द्रव्य को समाहित करते हैं।

यह निश्चित है कि उस भक्ति में ही वह शक्ति है जो भगवान को आपसे जोड़ देती है और अधिक पराकाष्ठा पर पहुँचने पर भगवान स्वयं में उदित हो जाते हैं, यह अकाट्य नियम है। सही पुरुशार्थ का नाम ही सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र है जब तक पूर्णता प्राप्त नहीं होगी तब तक सभी संसारी है, हाँ सिद्ध से नीचे सभी भगवान बनने की ओर है। मात्र सिद्ध परमेष्ठी ही संसार से ऊपर हो चुके क्योंकि अशरीरी है। अभी हम कहाँ हैं ये दृष्टि में रखेंगे तभी क्रम से ऊपर उठ पायेंगे। अब सीधा रास्ता मिल गया है। हमारे भीतर भी योग्यता है जो उनके पास है, बस भक्त बनना है। जो भक्त बनेगा वही भगवान बनेगा। ये भी एक तैयारी है, जैसे कहीं जाना हो तो ड्राइवर को बोल देते हैं, वह तैयार होकर रहता है। मोह, को कम करने की तैयारी प्रारम्भ कर दो तभी मोक्ष धाम को पा पायेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''सुगंध कहाँ''

10.02.2016 **प्रातः 09:30**

कपूर एक ऐसा पदार्थ है जो किसी को गर्मी लग जाये तो शीतोपचार के काम आती है। उसमें स्पर्श रूप रस गंध सब है, पर यदि जला दिया तो कुछ नहीं बचता। क्विंटल से भी जलाने पर राख नहीं बचती। किन्तु प्रकारान्तर से देखें तो सुगन्धी वातावरण से एक बड़े भवन को महका दिया। उस गन्ध का अनुभव अनेक लोग ले रहे हैं। यदि शरीर को तपस्या में लगा देते हैं तो जो हाल कपूर का हुआ वही हमारा होगा। कर्म सभी नष्ट हो जायेंगे। काया भी जल जायेगी। नाम भी समाप्त हो जायेगा। आज महावीर से ऋषभनाथ की तपस्या का फल हमें मिल रहा है। वो तो पार हो गये हमें भी पार लगा रही है। अमूर्तत्व क्या है, यह भी बोध हमें होता है। आज भी उसकी याद भर हमें सुगन्धित कर देती है। सांसारिक गंध में रहकर भी हम उस सुगंध को लेकर आनन्दित हो रहे हैं। एक छोटे से उदाहरण से हम प्रेरणा ले न वो हैं, न उस कालीन कोई वस्तु है। मात्र जिनवाणी का सब सहारा लेते हैं, तो वे सभी बातें हमें याद हो जाती हैं, चाहे तो उस मूर्ति को यहाँ विराजमान कर सकते हैं, ताकि सब लोग उसका लाभ ले सकें। इस बात को सबको बता देना, हमें–तुम्हें तो वह फोकट में मिला है, खरीदना नहीं पड़ा। कपूर बनोगे तभी उन पर उपकार होगा और स्वयं को सुगन्धित कर पाओगे।

करने से ही हल्का हो सकते हैं दो प्रकार के भार हाते हैं एक तो शास्त्रीय भार दूसरा छदामी लाल अरबपति का भार। सब पर भारी है। मोह का त्याग करेंगे तभी ऊपर उठेंगे। आदिनाथ भगवान की काया 500 धनुष फिर भी त्याग के बल पर ऊपर गये। पूजन का अर्थ भी यही है, द्रव्य के माध्यम से भाव लगाते हैं। उन भावों से कुछ त्याग करतें जाये, हल्के हो जायेंगे। समाज का काम मिलकर करें ताकि आनंद भी आये और पूरा भी हो। यहाँ भले ही घर पर भोजन अलग–अलग थाली में पर मन्दिर में पूजन तो सामूहिक एक थाली में कर लेते हैं, अच्छी परिपाटी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''मन बना लिया''

19.02.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोगों को विदित होगा कि दूध को फाड़ने की विधि होती है, बहुत महत्वपूर्ण है दूध को फाड़ना तभी उसका छैना बनता है, उस छैने से व्यंजन बनते हैं। दूध को खरीदकर लाये, वे ही अपने हाथों से उसे फाड़ देते हैं। कभी अपने हाथों से ऐसी गलती हो जाती है कि वह दूध फट जाता है तो दूध भी गया और छैना भी गया और जो निमन्त्रण पर आये थे उन लोगों को भी नहीं दे पाये। हमें विधिवत् फाड़ने का प्रशिक्षण ले लेना चाहिये ताकि पंगत में बैठने वाला भी स्वाद लेकर खा सके। संतों ने हमें वही प्रशिक्षण दिया, आचार्यों ने जो दिया वह बहुत मीठा ही दिया। जिनवाणी भले ही फट जाये पर उसका कथ्य तो मीठा ही है। हम लोगों को अपनी दृष्टि में रखकर क्या खायेंगे, क्या पियेंगे इत्यादी तथा उस दूध को जमाने की सही–सही प्रक्रिया जान लेना चाहिये। जमाने की प्रक्रिया जमाने को दे दी डाली। उस प्रक्रिया का पालन कर आज हम घी का सेवन कर रहे है, उस घी की विधी बताने वाले को कम से कम याद तो करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''आओ जीते परिषह''

23.02.2016 **प्रातः 11:45**

- अज्ञान परिषह एवं प्रज्ञा परिषह संवर के सशक्त हेतु हैं। ये दोनों मजबूत कंधे हैं। ज्ञानावरणीय कर्म ध्रुवोदयी है, इसलिये इन दोनों परिषह विजय से 24 घण्टे शुद्ध कमाई हो रही है। ज्ञान का निग्रह भी इसीलिये कहा गया है। ज्ञान भटकाने वाला होता है।
- ''कच्चे घड़े में, जल न भरा जाता, बिना पकाये''– श्रमणसागर जी
- कच्चा घड़ा है, काम में न लो बिना अग्नि परीक्षा के।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''स्पर्धा करो मोह कम में''

25.02.2016 **प्रातः 09:30**

नदी को पार करना है, नदी में पानी है। पानी भी वेग के साथ बह रहा है। पार करना है। एक व्यक्ति तैरना नहीं जानता, एक व्यक्ति तैरना तो जानता है पर बहाव देखकर घबरा रहा है। जब तैरने वाला घबरा रहा है, तो जो नहीं तैरना जानता उसका क्या हाल होगा। बहाव तेज है, बाढ़ की दशा है। बाढ़ की दशा हमेशा नहीं रहती है। तेज वर्षा होने से नदी में उफान आता है, पर 1–2 दिन में बाढ़ की दशा समाप्त हो जाती है। उसके बाद एक–दूसरे का हाथ पकड़कर, एक–एक पैर धीरे–धीरे रखकर पार हो गये। दोनों तैरने वाला भी नहीं तैरने वाला भी पार हो गये। युक्ति से ठान ले तो काम हो जाता है। इसी प्रकार एक–दूसरे को पार लगाओ।

विकल्पों की भी दशा बाढ़ जैसी ही होती है। जहाँ पानी हमेशा बरसता ही रहता है वहाँ सदैव बाढ़ की स्थिति बनी ही रहती है। आप भी ऐसे स्थानों पर जाते हैं जहाँ विकल्पों की बाढ़ बनी ही रहती है। जहाँ विकल्प ज्यादा हो ऐसे स्थान पर मत जाओ। मन में हमेशा तेजी नहीं रहती जब शांत रहे तब काबू में कर लो। विकल्प का कारण क्या है, हम अपनी गल्ती को स्वीकार नहीं करते। कारणों को छोड़ो विकल्प स्वतः ही शांत हो जायेंगे। वित्त–वैभव आदि का अंबार लगा लेते हैं अब सबकी दृष्टि उस ओर जायेगी, आप उसमें से किसी को देना नहीं चाहेंगे, अब विकल्प शुरू हो जायेंगे। इसलिये उतना ही कमाओ जितने से आपका काम चल जाये। पानी का बहाव सदैव एकसा नहीं रहता। अवसर के अनुसार हर क्षेत्र में काम होते हैं, विकल्प भी जब शांत हो जाये तब पुरुषार्थ करो। कर्म तो उदय में आकर फल देंगे लेकिन उस समय कुछ मत करो। गुरुवेल है और नीम चठ गया। करेला नीम चढ़ा जिनको मधुमेह की बीमारी है, उनके लिये तो ठीक है। जब तक क्षेत्र, काल आदि के गुणधर्म नहीं समझते हैं, तभी तक विकल्प में आते हैं।

फिर भगवान से कहते हैं कि हमें पार लगा दो भगवान। भगवान कहते हैं अपना रास्ता छोड़ो, जिस मार्ग से मैं आया हूँ उसी रास्ते से चले आओ। कुछ लोगों को मोक्षमार्ग में भी जल्दी चाहिये, यहाँ शोर्टकट नहीं चलेगा। यहाँ कुछ करना ही नहीं, बैठना है, कैसे? जैसे भगवान बैठे हैं। भीतरी आँख (मन) को भी बंद कर दो। बोलो नहीं। जो आये हैं, उन्हें भी भगवान बैठे हैं– शांत रहो। बच्चों को पंगत में बैठ गये। पहले भगवान बनो तब मिलेगा। हमारा मन बहुत उत्तेजित है ऐसा नहीं कहना कम से कम मन करेला पर तो न चढ़े। उसी खेत में गन्ना भी है, उसी पर चढ़ जाओ, मिठास आ जायेगा। मैं कठोर हूँ, तभी तो खड़ा हूँ, नहीं तो लोग ही उखाड़ ले जायेंगे। भीतर से तो मीठा ही हूँ।

इसलिये कर्मों के वेग को जो समझता है, वही आगे बढ़ सकता है। किसान की भाँति–हवा का रुख देखता रहता है– तसला लेकर खड़ा रहता है जिधर की हवा रहती है उसी अनुसार भूसा उड़ा देता है। परीक्षा हाल में चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। पेपर में लिखना होगा। यहाँ माता–पिता–गुरुजी कोई नहीं आ सकता है। आता है तो लिख। इस प्रकार हमें नदी के बहाव, कर्मों के वेग, हवा के वेग को देखकर पुरुषार्थ करना चाहिये। स्पर्धा करो–मोह त्याग में स्पर्धा करो। धन–वैभव में तो स्पर्धा करते ही हो। कम

करने में भी ज्यादा देर नहीं लगना चाहिये।

प्वाइंट गिन रहे हो। उसमें भी विकल्प करते हो क्योंकि मोह ही मोह है। इसे कम करना जबरदस्त कार्य है। बच्चे कह रहे हैं बाबा अब आपकी आवश्यकता नहीं, आप बैठो धर्मध्यान करो आप मोह के कारण छोड़ नहीं रहे हो। काम करने जाओ। पसीना तभी आता है जब गरमी होती है। मोह को कम करना ही सच्चा मोक्षमार्ग है। हमारे उदाहरण याद रखना—नीम पर नहीं गन्ने पर चढ़ा देना। मोह जरूर ही कम होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''आवो मांजे भावों को''

26.02.2016 **प्रातः 09:30**

मणीयाँ कई प्रकार की होती हैं, सबका अपना—अपना स्वभाव होता है। एक मणी है पारसमणी। सब मणीयाँ अपना—अपना प्रभाव डालती है पारसमणी लोहे को सोना बना देती है। किसी ने पूछा यह कहाँ मिलती है। ठिकाना हमारे लिये बताया है, दूसरों के लिये नहीं। लोहा सोना बन जाता है, सोना कोयला बन जाता है, मिट्टी सोना बन जाता है।

एक को वह पारसमणी मिल गयी उसने लोहा को छुआ पर सोना नहीं बना। दूसरा व्यक्ति आया वह अपना लोहा छुआया सोना बन गया। उसने कहा तुम्हारा लोहा—लोहा नहीं है, जंग खाया हुआ लोहा है। शुद्ध लोहा चाहिये। पारसमणी भी जंग खाये हुये लोहा को सोना नहीं बना सकती। इसी प्रकार हमारे पारस भगवान भी जंग खाये हुये श्रावक को सोना। भगवान नहीं बना सकते हैं। पानी और हवा के नाम से लोहा जंग खा जाता है। भक्त असली होना चाहिये यहाँ अभी श्रावक द्रव्य तो पूरी चढ़ा दी, मैं भाव देख रहा था। भाव इतनी बड़ी परात जैसे नहीं थे। आजकल ऐसी पुरानी परात नहीं मिलती है। हम सब कुछ मांज रहे हैं लेकिन भावों को नहीं मांज रहे हैं ये भाव यहीं देवशास्त्र गुरु के सानिध्य में ही मांज सकते हैं। अन्य गति में तो इनको मांजना संभव भी नहीं। पारसमणी तो काम करेगी, बस लोहा असली होना चाहिये, जिसे आसन्न भव्य कहते हैं। निकट भव्य के रूप में उम्मीदवार होना चाहिये तभी अपने मन को मांज सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''आम से शिक्षा''

27.02.2016 **प्रातः 09:30**

एक बगीचे में बहुत पेड़ थे, उसमें आम का भी पेड़ था। किसान समझदार था, किसान को समझदार होना चाहिये। आम पर मोर आने को थे। दो वर्ष में एक बार फलता है आम का पेड़। लगातार नहीं। मौर के उपरांत उस डाल पर छोटे–छोटे मूंगफली के बराबर आम हो गये (अमियाँ)। लाखों में संख्या थी, पर उनमें से कुछ धीरे–धीरे बड़े हो गये, सुपाड़ी से भी बड़े हो गये। अभी भी वह किसी काम का नहीं, जब उसका रूप/आकार ओर बड़ा हो गया तब किसान सोचता है कि अब इनको उतारना है। पर वह ऐसे ही नहीं उतारता। समझदारी से उतारता है, जो योग्य है उसे उतारता है। जो योग्य नहीं है, उसे नहीं उतारता। एक–आध आम की परीक्षा कर लेता है कि आचार लायक हो गया या नहीं। बच्चों को ज्ञात होता है कि परीक्षा के योग्य तो है पर बिठायेंगे नहीं, बाद में हाँ कह देते हैं। उस आम की खटाई, रंग भी हरा, अंदर पीलापनं केसरिया ये सब देखा जाता है। ये सभी गुण होते हैं आम में वह किसान उसको पाल में रखकर पकाता है। पाल में उष्मा/गरमाहट पर्याप्त मात्रा में रहती है। अब वह मुलायम भी हो गया। वर्ण से वर्णान्तर भी हो गया।

आम हरा भी रहे पर खट्टा ही हो ऐसा नहीं मीठा भी हो सकता है। हरा है पर मीठा–मुलायम एवं सुगंधी है। जल्दी नहीं करना है। उसके केन्द्र में एक बटन होता है, उसे निकालना पड़ता है। अब नीचे की ओर से दबाना है, उस बटन में क्षर द्रव्य एकत्रित रहता है, बंदर भी खायेगा तो उसे निकालकर ही खायेगा। क्षार द्रव्य के साथ थोड़ा सा अच्छा भी निकल जाये, कोई बात नहीं। ये उदाहरण आप लोगों के लिये है। आपने कमाया, दुकान आपकी, पूंजी आपकी, माल आपका सब कुछ आपका, कमाई आपकी पर क्षार द्रव्य निकाले बिना काम में नहीं ले सकते हैं। समझ में आ गया हो। इसे सब लोगों तक पहुँचा देना। आज ही कोनी से ताजा–ताजा आम लेकर आये हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''जीने से चलना नहीं, नसैनी से चढ़ना''

28.02.2016 **प्रातः 09:30**

संकट की स्थिति में कोई भी बाहर निकलना पसंद नहीं करता, भीतर रहना पसंद करता है। मोक्षमार्ग में चलने की नहीं चढ़ने की बात होती है, गुणस्थान इसी का नाम है नसैनी है। मोक्षमार्ग में अकेले का ही टिकिट मिलता है। आप भले ही संतुष्ट हैं, पर हमें मंजूर नहीं। फिर भी चले तो। मार्ग में मिल जाये अलग बात पर चलना अकेले ही पड़ेगा। अकेले ही नसैनी पर चढ़ता है एवं अकेले ही उतरता है। जीना में ऐसा नहीं है। जीना तो जीना है। उसमें सुरक्षा का प्रावधान होता है, वह घूमता हुआ भी, बात करता हुआ भी चढ़ जाता है। दो–तीन मिलकर भी चढ़ सकते हैं, पर नसैनी वह है जिसमें अकेले ही चढ़ता है। दो पैर होते हैं बीच–बीच में पांव रखने के लिये आड़ी लकड़ी होती है, उन पर संभल–संभलकर पांव रखना होता

है।

ऊपर–ऊपर का गुणस्थान अलग–अलग है। आप लोगों के साथ मोक्षमार्ग की बात करें तो कहाँ से करें। आप लोगों के लिये तो पाँच पैर वाला जीना रहता है। रविवार के दिन जीने का काम रखा है, जो कोई भी चला आये उसे आशीर्वाद हम दे देते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''माँग उसही उसही न हो''

29.02.2016 **प्रातः 09:30**

जिस कार्य को करना होता है उसे करके घर लौट जाते हैं, घर पर कहा जाता है। हाँ रसोई तैयार है। वो भी तैयार हो जाते हैं, ऐसा नहीं कहा जाता है तो वो समझते हैं कि और अभी टाईम है। इन सब बातों को बहुत दिन से सुन रहा है वह छोटा बालक। इन सबको बुला–बुलाकर भोजन कराया जाता है, हमारे लिये रोना पड़ता है, ऐसा पक्षपात क्यों? समाधान दिया जाता है कि तुम घर पर ही बैठे रहते हो– जब रोयेगा तो हम समझ लेते हैं कि भूख लगी है या नहीं। वह बालक कहता है– हम उसही–उसही रोयें तो माँ कहती है वो भी हम समझ लेते हैं कि ये असली का रोना है या नाटक कर रहा है। उसी प्रकार हम भी समझ लेते हैं कि आप लोगों की मांग वास्तविक मांग है या उसही–उसही तो नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''धूप आरती का कमाल''

01.03.2016 **प्रातः 09:30**

बहुत प्रार्थना के बाद, भक्ति आदि से दाम्पत्य जीवन में एक पुत्र की प्राप्ति हुयी, यह पुत्र आगे वंश परम्परा चला सकेगा। इस प्रकार उसका पालन–पोषण होने लगा। वह भी बड़ा होता गया। उसकी शिकायत रहती थी कि मेरी भावना पूर्ण नहीं कर पाते हैं जब कि माता–पिता दायित्व के साथ उसकी पूर्ति करते। एक बार वह पुत्र अधम कर रहा था। माँ ने उसे मना किया पर वह मान ही नहीं रहा था। जब इस बार पास में आया माँ ने चूल्हे से एक लकड़ी निकाली और दिखा दी उसकी तरफ। धूप आरती उतार दी। आरती नहीं धूप आरती। उस समय माँ की मुद्रा कैसी–फोटो लेने लायक। ये कौनसी देवी आ गयी। क्या माँ इस तरह की आकृति बना सकती है– नहीं। इस आकृति में भी वह शिक्षिका का काम कर रही है। इतने दिन में आप लोगों ने हो कहना सीख लिया ये मूल है।

दिव्य ज्ञान का विषय है तुम तो हो कहते चले जाओ। ये सब मेरा विषय है, तुम्हारा विषय तो मात्र स्वीकृति है। यद्यपि माँ ऐसा नहीं चाहती थी पर पाठ तो पढ़ाना ही था। बाहर से आकृति बनायी पर भीतर

से संस्कृति को कायम रखा। इसलिये बाहर से आप लोग पूजन करो, दान करो, जैसे भी करो करना है पर भीतर से राग–द्वेश, मोह–कपट को कम करना है। यह पार्ट है।

अभी एक सज्जन आये राजस्थान से (लुंहाड़िया जी) नारियल चढ़ाया। जब गुरुजी का शरीर शिथिल हो गया, उस समय ये प्रतिदिन उन्हें पकड़कर शोय आदि कराते थे, आज इन्हें लोग पकड़कर नारियल चढ़वा रहे हैं। समय का फेर है। ये दृश्य है।

आत्मा की बात करते हो पर देह की ओर ही दृष्टि है। शुभक्रिया करनी है। भले ही बन्दुक–तीर कमान लगे हैं, सेना लगी है पर शुभक्रिया तो करना होगा। बन्दुक कैसी–बारूद से भरी हुयी है– स्नेह से भरी हुयी नहीं है।

आपको बराबर देखते रहेंगे। क्या कर रहे हैं। कोई सुनवाई नहीं होगी यहाँ। सीधा कर देते हैं। हो (हाँ) कह देते हो तो फिर भी ठीक है। घर पर बारात आने को है, अभी इधर–उधर की बातें सुनने का अवसर नहीं है। धूप आरती पास में है। लेश्या अलग वस्तु है और अभिप्राय अलग वस्तु है। आत्मा में क्या भाव है, बाहर क्या भाव है। बाहर के भावों से भीतर का पता नहीं चलता है। जो विद्यार्थी गुरुजी के आशय को समझकर कार्य करता है, उसे शाबाशी मिलती है, जो नहीं समझता उसे धूप आरती दिखायी जाती है। पूजन के बाद ये 10 मिनिट का समय सब ठीक–ठाक करने का होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''कमाल का है चरखा–हतकरघा'

02.03.2016 **प्रातः 09:30**

रक्त संचार तभी संभव है, जब भीतर प्राणवायु का संचार हो। धन की उपयोगिता है पर संग्रह की नहीं संचार की आवश्यकता है। जहाँ संग्रह होता है वहाँ संचार नहीं होता। संचार होगा तभी जीवन विकासशील होगा। प्राणवायु रक्त संचार में योगदान देती है, रक्त दौड़ने लगता है। रक्त शरीर के कोने–कोने में चला जाता है। यदि रक्त का वितरण ठीक नहीं होगा तो वह कहना शुरु कर देता है मेरा ये अंग काम नहीं कर रहा। भोजन का शरीर के लिये महत्वपूर्ण स्थान है। वही भोजन भीतर जाकर रक्त आदि सप्तधातु में परिवर्तित होता है। यदि भोजन नहीं मिलता है तो हवा खाओ। शुद्ध हवा नहीं मिले तो दवा खाओ। दवा भी नहीं मिले तो गम खाओ। गम भी खाने की चीज है, इसलिये नाम रखा जाता है–बेगम। बेगम का उत्पादन कहाँ से हुआ– भीतर की उपज है तो सुख की उपज भी भीतर से ही होती है। बाहर का प्रबंधन करना ही नहीं है, मन का प्रबंधन करना है। यदि भीतर का प्रबंधन हो, भीतर का प्रदूषण दूर हो गया तो तीन लोक शांत हो जायेगा।

प्रजा की बात बाद में प्रजापति कौन है, इसे पहले देखो। जीवन क्या हे, यह समझना पहले आवश्यक है तभी जीवन की सामग्री का मूल्य है। प्रतिभास्थली की बहने आयी हुयी है, मुझे खुशी है कि कम से कम युग लौट रहा है। धर्मयुग में युग के आगे धर्म चलता है, जब कि युगधर्म है तो धर्म गौण हो

जाता है। धर्म के माध्यम से ही कर्त्तव्य किया जाता है। एक बहन ने बताया जो स्नात्कोत्तर की फाइनल की छात्रा है उसे कक्षा में मॉडल बनाने के लिये कहा गया। वो लेट से पहुँची अन्य मॉडल आ चुके थे। क्लास की अध्यापिका ने कहा ये तो पहले देना चाहिये। रक्त बढ़ाओ–रक्त बढ़ाओ कहा जाता है मन प्रफुल्लित है तो रक्त बढ़ेगा ही। अर्थ–अर्थ की बात करने वालो किसी अर्थशास्त्री को अर्थ का अर्थ नहीं आता। अर्थ के द्वारा केवल अनर्थ में ही लगे हुये हैं। उस बहन का मॉडल था गाँधी जी का चरखा। शब्द ही कर रहा है पहले चर फिर खा। पहले मेहनत कर फिर खा। आप पहले खा फिर चर करते हैं इसलिये सभी डूब रहे हैं।

चरखा–हतकरघा विश्वविद्यालय में भी पुरुस्कृत हो गया। बीना बारहा में जो युवा लोग शिक्षित है इसी कार्य में लगे हैं, जो मेहनत करता है श्रम करता है उसके रक्त का संचार स्वतः ठीक रहता है। जहाँ खून जमा नहीं कि तुरंत ऑपरेशन करो। खून का ऑपरेशन होता है कभी?कभी नहीं। इसलिये श्रम करो। श्रम करने वाले का रक्त संचार ठीक हो जायेगा एवं पाचन शक्ति सही रहेगी। दवा में कुछ नहीं रखा है। मुठ्ठी बनती है तब एकता आती है। आप सो भी रहे तो भी खून अपना काम कर रहा है। इसके रुकने का नाम ही वह चला गया। अब नहीं रहा। व्यक्ति चला गया व्यक्तित्व तो यही है।

शोध/अनुसंधान करने वाले व्यक्तित्व से व्यक्ति की ओर जाते हैं। खाते जाओ और कमाने जाओ कुछ नहीं हमें तो जो व्यक्ति संग्रह करके रखा है उसके धन की चिंता है। हमें धन की भी चिंता नहीं हमें तो उस धनी की चिंता है। कहाँ जायेगा वह बेचारा। हतकरघा–चरखा। प्राथमिक या माध्यमिक में नहीं विश्वविद्यालय में पुरुस्कृत हो रहा है। आज हमारा लड़का–हमारा लड़का कर रहे हो। पढ़के आयेगा तब ''ऐ लड़के आओ'' किससे अभिभावकों से। ये ही दशा हो रही है।

अभिभावकों से मत लड़ो यदि लड़ना है तो अपने कर्मों से लड़ो–प्रतिभावान हो। श्रम करो इससे न केवल रक्त का संचार होगा अपितु रक्त संशोधित भी होगा। चिंतन के लिये; बुद्धि के लिये भी रक्त का संशोधिकरण होना जरूरी है। रक्त शुद्ध नहीं होता तो कहता है, भैया मन नहीं लग रहा है। प्रबंधन कौर कोई वस्तु नहीं, श्रम करना ही प्रबंधन है। इंजीनियर से भी ज्यादा काम कर रहा है वह हतकरघा से। हाथ का नाम ही है कर इसलिये हाथ से कर। करोगे तो इंजीनियर से भी ज्यादा हाथ से प्राप्त हो रहा है। आज आप लोगों के कारण थोड़ा विलम्ब हो गया लेकिन कोई बात नहीं।

भो–जन= हे जन सुना, अब जिन बनो। जन बने बिना जिन नहीं बन सकता और भोजन मिले बिना जन नहीं बन सकता है। जो कोई भी सो रहे हैं उनको उठाओ नहीं, वहाँ से चल दो, अपने आप ही उठ खड़ा होगा। युग को चलाना चाहते हो तो युग के सामने चलना प्रारम्भ कर दो आपको देखकर वह भी जरूर चलेगा। चलेगा ही नहीं दौड़ेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दृष्टि हो भीतर में'

03.03.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोग बहुत दूर से आये हैं। कहाँ कितनी दूर से आये हैं। सही ठिकाना हो तो बता दें। दूर से आये हैं ये बोलते तो हैं। जो निकट का नहीं देख सकता वह दूर का क्या देखेगा। आज तो दूर–दर्शन का जमाना है। दूर का देख भी नहीं सकता। 20,000–40,000 किलोमीटर दूर जो राष्ट्र हैं, उन्हें देखने के बाद भी तृप्ति नहीं हो पायी है।

हमारे संतो ने कहा दूरदर्शन नहीं चाहिये दूर–दृष्टि चाहिये। दूर की वस्तु को देखने के लिए एक वस्तु होती है, उसका नाम है दूरबीन। पहाड़ों से नीचे का दृश्य देखा जाता है दूरबीन से, कि हम कितने ऊँचे हैं। जब नीचे से ऊपर चले जाते हैं तो बादल टकराने का अहसास होता है, ऊपर अभी और है। दूरदर्शन से विश्व के सारे राष्ट्रों को देख रहा है, पर दिशा बोध से नहीं दिशाहीन होकर विचार करता है कि मैं कहाँ–कहाँ गया। एक मानचित्र अपने मानस में लाता है, मैं यहाँ भी गया हूँ–3। चारों तरफ देख लिया नीचे ऊपर, आजु–बाजु, दिशा–विदिशा सब देख लिया पर भीतर नहीं देखा। जहाँ देखना था वहीं नहीं देखा। दर्पण मत देखों, दर्पण में देखों इसी से स्वरूप की प्राप्ति होगी।

और कुछ नहीं देखो भगवान को देखो। ये तो मूर्ति है, हाँ उनकी मुख को देख लो। भगवान की मुख देखने से भीतर देखने का सौभाग्य प्राप्त होता है। भीतर का जिसमें दिखाने की क्षमता है, उसी को दर्पण कहते हैं। आप लोग बहुत–दूर–दूर से आये, बहुत अच्छा प्रयास है, अब भगवान को देख लो। भीतर देखने का प्रयास कर लो। कई लोग बड़े–बड़े मॉल (शोरूम) बना लेते हैं, कई बड़े–बड़े विश्वविद्यालय बना लेते हैं पर आपके बीच ऐसे भी बैठे हैं (सोमपुरा जी) जो बड़े–बड़े मन्दिर बना रहे हैं। ये मन्दिर तो बना देते हैं, पर जब उसमें भगवान विराजमान होते हैं तभी वह मन्दिर नाम सार्थक होता है। यहाँ बैठे हो तो केवल वीतरागता की बात करो। भीतर देखने का प्रयास करो। दूर जाने की जरूरत नहीं, दूरदर्शन या दूरबीन की भी जरूरत नहीं और अब चश्मा की भी जरूरत नहीं बस भीतर देखना है। चश्मा क्यों लगाते हैं?बारीक से बारीक भी उससे दिख जाये पर वह चश्मा भीतर का नहीं दिखा सकता है। हाँ भीतर का देखना है तो शांत बैठ जाओ, आँखे बंद करके, हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाओ प्रभु के सामने। भीतर कोई इच्छा है तो भगवान नहीं दिखेंगे। भले ही सोने के भगवान बिठा दो। हमें यदि सोने या चाँदी की थाली दिख रही है तो भगवान नहीं दिखेंगे।

दूर से सुन रहे हो या निकट से सुन रहे हो आप जाने। हमारा ये छोटा सा वक्तव्य है। भीतर देखने पर केवल आप ही आप दिखेंगे। चश्मा में हीरे लगे हैं तो हीरे नहीं दिखेंगे अपितु नं. के अनुसार दिखेगा। भगवान को देखने पर हमारी आँखों में भगवान को देखने लायक नं. आ जाता है। क्या लिख रहे हो, जमा–खर्च करने में लगे हैं। चश्मा में एक बात और दूर का अलग एवं पास का अलग अर्थात हमारी आँखों में वह भी नं. है कि दूर की वस्तु ही दिखेगी पास की नहीं दिखेगी। संसार की दुकान ही दिखेगी। मन वचन काय से शांत बैठोगे तो बड़े बाबा दिखेंगे। दूर नहीं जाना, पास आना है, इसलिये हमारे भगवान नासा दृष्टि से धरे..... मुद्रा में बैठै हैं, जो भीतर आने को कह रही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''अपने–अपने कर्मों का फल''

04.03.2016 **प्रातः 09:30**

समय–समय पर कर्म फल देते रहते हैं। इस भव में किया हुआ भी इसी भव में फल दे सकता है और पूर्व भव में किये हुये भी इस भव में फल देता है। दोनों भव में किये हुए कर्म अपने मुख से भी फल दे सकते हैं अथवा अन्य मुख से भी फल दे सकते हैं। हाँ हमने किया और पिताजी को फल मिले ऐसा नहीं हो सकता। अपने द्वारा किया कर्म का फल भी स्वयं को ही भोगना पड़ेगा। हमने उस कर्म का संकलित कर दिया तो वह उसी रूप में फलेगा। गंदा किया हुआ कर्म तेजी में भी भोगा जा सकता है, तेजी से बंधा कर्म मंद भाव से भी भोग सकते हैं।

आपने माल खरीदा भाव तेज हो गये, शांतिनाथ भगवान से प्रार्थना करते हैं अभी भाव और बढ़े। कुछ समय बाद मंदी आ जाती है, भाव गिर जाते हैं कोई खरीदने वाला नहीं, वह सोचता है अभी भाव ओर गिर जाये जब स्थिर होंगे भाव तब खरीदेंगे। आपने कैसा आशीर्वाद दे दिया। आपने तेजी में क्यों नहीं बेचा। अब भूल से भी भाव नीचे गिरने लगे। महाराज ये मन्दी का काल कब तक चलेगा। जब तक माल बेचेंगे नहीं तब तक भाव नीचे ही गिरेगा।

जब तक सात प्रकृति में संक्रमण आदि नहीं करते तब तक धार्मिक अनुष्ठान नहीं कर सकते। करेला तो कड़वा था ही नीम चढ़ गया। एक ग्रास खाते ही उल्टी जैसा होने लगा। कर्म का उदय होता है तो कोई साथ नहीं देता। घर वाले भी अभी तक तो गरज रहे थे अब बरसने भी लगे। मतलब कर्म का फल मंदी एवं तेजी के साथ मिलता है, पर को नहीं मिलता, स्वयं को ही मिलता है। इसी चिंतन का नाम विपाक विचय धर्मध्यान है। चाहे मंदिर में रहो, दुकान पर रहो अथवा घर पर रहो 24 घण्टे यह विपाक विषय धर्म ध्यान कर सकते हैं। पुण्य कार्य यदि अच्छे भावों से किया तो फल तीव्र मिलेगा तथा पाप कार्य मंद भाव से किया तो फल कम मिलेगा।

दाना–मेथी है। नेचुरोपेथी है। कड़वी होती है। डॉक्टर ने कहा मीठा नहीं खाना है। डायबिटीज है आपको मैथी, करेला आदि खाना है। उसकी कड़वाहट कम कर सकते हैं हाँ उबालकर पानी अलग करने से कड़वाहट कम हो जायेगी। ज्यादा कड़वाहट हो तो 3–4 मुनक्का डाल सकते हैं। आपने कड़वा बोया था पर छिवारा–मुनक्का डालकर उसकी कड़वाहट कम कर सकते हैं। हमने जो कर्म बांधा था उसे संयम के माध्यम से शुभभावों के माध्यम से कम कर सकते हैं।

दो व्यक्ति में विवाद पर फाल्गुन का महीना है। होली का माहौल रहा है। शांत हो गये। जितना बरसना था उतना बरस गया। झल्ला के झल्ला। बूंदाबांदी हो तो ज्यादा देर तक होती है, मूसलाधार था शांत हो गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''अच्छे कार्य के लिये मुहूर्त मत खोजो''

06.03.2016 **मंगल प्रवेश– 09:15** **प्रातः 09:50**

कोनी जी से कल का विहार हुआ। दोपहर 02:00 बजे चल दिये। सभी लोग द्वारापेक्षा में लग गये, किधर जाना है। हमने डामर रोड छोड़कर महाराज रोड पकड़ लई। धीरे–धीरे रास्ता सकरा हो गया, पगडंडी आ गयी। वाहन सब पीछे छूट गये। हमने सोचा अब हमारा स्वराज्य हो गया। कल गर्मी भी काफी थी। रास्ते में मोटी–मोटी मोती जैसी बूँदें आना प्रारम्भ हो गयी। तेज हो गयी तो बड़ के पेड़ के नीचे खड़े हो गये। सामने घर से ग्वाला आया, पाँच–छः बार निवेदन किया हमने मना किया थोड़ी देर में ग्वालिन फिर से आयी अब दोनों अपनी कुटिया में ले गये पूरे संघ को। झट से पाद प्रक्षालन भी कर लिया। फिर जंगल के रास्ते से सकरा आ गये। बीच में एक ग्वाला अपनी गैया को ले कर जा रहा था। वह खड़े होकर हमें देखने लगा इतने में गैया का छोटा सा बछड़ा दूध पीने लगा। मुर्हूत क्यों खोजते हो। जंगल में भी मंगल हो जाता है।

इस ओर का पुण्य कुछ ज्यादा लगता है। सकरा हो गया। वहाँ ज्यादा वाद्य नहीं पर रात में देवों ने खूब वादन बजाये। विद्युत (बिजली) का भी प्रबंध था एवं वर्षा भी हुयी। तीन कार्य वादन, विद्युत एवं पानी एक साथ हुये। लोगों में उत्साह होता है तो देवों को भी शामिल होना पड़ता है। जैसे जनता इकठ्ठी हो जाती है तो नेता तो अपने आप ही आ जाते हैं। देव लोग कहते हैं हमें भी पुण्य कमाना है। पगडंडियों के माध्यम से तो आ गये। अभी मंगलाचरण हुआ है। देखो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''हो सही दिशा में
सही समय पर पुरुषार्थ''

07.03.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोग दिया सलाई से परिचित हैं। तिल्लियाँ रहती है। आप लोग जेब में रखते हैं–विस्फोटक सामग्री को। आप लोगों को विश्वास है कि वह अपने आप नहीं जलेगी, विष्फोट नहीं करेगी। कर्मों को जलाना है तो वे अपने आप जल जायेंगे ऐसा विश्वास कर रखा है जो गलत है आपको संघर्ष करना होगा तभी विस्फोट होगा। राग–द्वेष के कारण कर्म बंध को प्राप्त होते हैं। सही दिशा में सही समय पर पुरुषार्थ करने पर कर्म जलेंगे ही समय ज्यादा नहीं लगेगा।

आप लोग इतना संघर्ष कर रहे हो, रात–दिन एक कर रहे हो, उससे कर्म जलेंगे नहीं इतना करने की आवश्यकता ही नहीं, थोड़े से पुरुषार्थ से भी काम हो जायेगा। महत्वपूर्ण है सही दिशा। कर्म बंध में भी संघर्ष है एवं कर्म नष्ट करने में भी संघर्ष है, राग–द्वेष का अभाव होना जरूरी है। मेहमान के यहाँ जाओगे तो एक टखा का खर्चा नहीं पर ज्यादा दिन रहोगे तो खर्चा मांगने लगेगा। विश्वास के साथ सही दिशा में

पुरुषार्थ करना होगा। डब्बी में तिल्ली रहेगी तब तक ही ठीक है। वर्षा के समय में दोनों साईड का फास्फोरस कागज उखड़ जाता है, तिल्ली भी बरबाद हो जाती है। इसी तरह से मोक्षमार्ग में यदि सही ढंग से नहीं चलोगे तो व्यापार नहीं चलेगा। इस मार्ग में तो फोकट के ही काम होते हैं। संकल्प ले लेता है तो स्वयं ही हो जाता है।

अभी आप लोगों को खर्चा की चिंता हो रही है, आमद तो करो। आमद कम है, खर्चा ज्यादा है ये लक्षण ठीक नहीं है। कर्जा लेकर निर्वाह करने की आदत पड़ गयी है। मोक्षमार्ग में भी कर्जा लेकर चलने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता। मनुष्य जीवन ऐसा जीवन है जिसमें कम खर्च में निर्वाह हो सकता है। कर्म बंध की अपेक्षा कर्म काटने के अवसर इसी मनुष्य भव में है। विवेक एवं आस्था के साथ सही दिशा में कार्य करना होगा। एक–एक दिन कम हो रहे हैं, हमें आये तीन दिन हो गये। कैसे। जब कोनी जी से विहार हुआ वहीं से आपके दिल जुड़ गये उदाहरण–जबलपुर से सागर बस जाती है सागर पहुंचते ही जबलपुर की ओर मुंह हो जाता है, पट्टी लग जाती है सागर से जबलपुर। इसलिये अब जुट जाओ हमें ग्राहक पर विश्वास है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''मन–वचन–कार्य तीनो शुद्ध हों''

08.03.2016 **प्रातः 09:30**

सुनना नहीं किन्तु अमल में लाना है। आप लोग शुद्धि बोलते हैं, मनशुद्धि–वचन शुद्धि–कार्यशुद्धि किन्तु आज के लोग विपरीत करते हैं–तनशुद्धि–वचनशुद्धि–मनशुद्धि यह ठीक नहीं है। विशाल राष्ट्र का अनुशासन भी इन तीन शुद्धियों से चलता है। पहले नामों का नामांकन होता है, फिर उनमें पात्रों को चयनित किया जाता है। उनको चयनित करने वाला कोई और नहीं मतदान देने वाला ही चयनित करता है। चुनाव में भाग लेने वाला ही चुनता है। इसके उपरांत सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश कुछ संकल्प दिलाते हैं। वे कहते हैं, बोलो हम जो बोलेंगे वही दोहराना है, अपनी ओर से एक अक्षर भी कांट–छांट नहीं कर सकते हैं। एक–दो बार नहीं तीन बार बुलवाते हैं, ये तीन बार क्या है? ये तीन बार का मतलब है मनशुद्धि–वचनशुद्धि एवं कार्यशुद्धि। जो बुलवाया जाता है वही बोलेगा भले ही राष्ट्रपति भी क्यों न हो।

कार्यक्रम होता है, कार्यकर्ता कार्य करते हैं। आप लोग उस कार्यक्रम में पात्र बनकर भाग लेते हैं। सब होते हुये भी मैं आप लोगों से कहूँगा–आप अपने मन को पवित्र बनाइये, मनशुद्ध होगा तभी शुभ आस्तव होगा एवं अनुपात से तात्कालिक बंध के साथ क्षय भी होगा। मन को कलुशित करने वाला शत्रु हमेशा हमारे पीछे लगा ही रहता है, वह है अहंकार। रविवार के प्रवचन में एक सत्य घटना सुनाई थी जब भारत परतंत्र था तो लाल किला के सामने लाल मन्दिर बना। कैसे बना होगा उस समय वह मन्दिर परतंत्र होने के बाद भी राष्ट्रीय ध्वजा के सामने धर्मध्वजा फहराना, जो वितरागता की गाथा गा रही है, बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। ''परस्परोग्रह जीवानाम्'' ''अहिंसा परमोधर्मः'' का जयघोष हुआ राजधानी दिल्ली से।

अभिमान को निकालकर फेंक दो, जिससे मन कलुशित हो उसे दूर से ही छोड देना चाहिये। मेरा सभी से यही कहना है, अभी सामाजिक कार्यक्रम सामने आ रहा है, आप सभी अहंकार को छोड़ दें। आगे भी स्वीकार ही नहीं करना है।

सामाजिक कार्य किसी एक व्यक्ति से नहीं होते, सभी व्यक्तियों के मिलने से वह कार्य सम्पन्न होता है। व्रतों की शुद्धि के लिये नियमों परिमित का झोड.... कहा। आजीवन के लिये जो नियम लिये उनकी रक्षा के लिये समय–समय पर बहुत से नियम लेते चले जायेंगे। इसी तरह से एक–एक नियम लेते चले जाओ। नियमों का क्रम टूटे नहीं। बच्चों के लिये यह कार्यक्रम पाठशाला का काम करेगा। पाठ सीखने का कोई स्थान नहीं होता। हमने उनके जीवन से पाठ सीख लिया, उसने सबक सीख लिया। कोई पढ़ा लिखा नहीं फिर भी हमें पाठ सिखा देता है, हिंसक पशु से भी पाठ सीखते हैं हम लाल आँख दिखाते हैं वह नीली आँख दिखायेगा। हम हाथ मारने के लिये उठायेंगे वह दोनो हाथ जोड़कर बैठ जायेगा। मनुष्य सातवें नरक तक जा सकता है पर सिंह पाँचवे तक ही जायेगा।

इसलिये अपनी कषाय को छोड़ते चलें। किसी से भी टकराओ नहीं, हम तो स्वार्थी हैं बस अपना काम भर हो जाये। मुख्य तो यही है। बड़ी मेहनत करके मन्दिर बनाया, बाहर का एक पैसा नहीं लिया अब गजरथ के साथ प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। भगवान वेदी में बैठेंगे यहाँ पूजा, जाप विधान होंगे। सुबह–मध्यान्ह–शाम तीनों समय कार्यक्रम चलेगा। इसका पुण्य किसे मिलेगा, सोचो इसलिये धार्मिक कार्य की अनुमोदना करो विरोध नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''चंदन सम शीतलता पाने''

09.03.2016 **प्रातः 09:30**

अभी आप लोग अष्टद्रव्य को क्रमशः चढ़ाते हुये अनर्घ पद के हेतु अनर्घ को चढ़ाया। उसमें एक पंक्ति आयी, जिस पर ध्यान गया, बहुत अच्छी है। उसी को खोल रहा हूँ। खुली है पर आपके लिये अर्थ लगाते हैं– चंदन सम शीतलता पाने....। शीतलता पाना चाहते है। उदाहरण दिया चंदन का चंदन आपकी गरमी को मिटाये ये संभव नहीं। आपकी गर्मी कहाँ से उत्पन्न हुयी, कब से है, उसके बढ़ने के साधन क्या–क्या हैं ये सब जानना अनिवार्य है। आपका शरीर मौसम परिवर्तन को लेता है। शरीर में तापमान कम एवं ज्यादा होता है। थर्मामीटर से नापते हो। अब तापमान को संतुलन में लाने का प्रयास करते हैं। उसकी सेवा में लगते हो। अनर्घ का मतलब जो दुर्लभ है, मंहगा है। बेकार की मांग कर रहे हो, जब उसमें फर्क नहीं तो ऐसा क्यों कर रहे हो उस पैसे का और कोई उपयोग करो।

हमारा तापमान बढ़ता–घटता क्यों है। सर्दी का मौसम हो, किसी के मुख से कोई शब्द सुना वह मन के अनुकूल नहीं था, बस हृदय की गति बढ़ गयी तापमान भी बढ़ गया। सहन नहीं होता महाराज। अनर्थ कर रहे हैं। माथा काम नहीं करता। उस समय उसका पित्त माध्यम है। चित्त भड़कने पर भी पित्त नहीं

भड़कता है। गर्मी को भीतर आने नहीं देता है। सर्दी के समय वह पित्त छाती में आ जाता है, जिससे सर्दी की मार न पड़े, वर्शा में वह पित्त पैरों में होता है। चार महीने पानी सहन होता रहे। गर्मी के चार महीने वह पित्त माथे में चला जाता है, ताकि अमरकंटक जाने की आवयकता नहीं पड़े। माथा ठंडा बना रहे। हमारी तरफ मत देखो। समय कम है काम करते जाओ। आज तो समय हो गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''असली–नकली का भेद पहचाने''

10.03.2016 **प्रातः 09:30**

कुछ विशेष पत्थर होते हैं। आप उन्हें रत्न नाम से पुकारते हैं। एक राजा ने एक विदेशी जौहरी को निमंत्रण दिया। हमने सुना है स्फटिकमणी केवल सफेद ही नहीं होती, कई तरहे के रंगों में वह स्फिटिक मणी होती है। राजा ने कहा बताओ आप अपने देश से क्या–क्या लाये। उसने निकालना शुरू किया। राजा ने कहा हीरा बताओ। जब राजा ने कहा हीरा बताओ तो वह जौहरी इतना तो समझ गया कि राजा भी रत्नों के बारे में जानता है। अनगढ़ हीरा होते हुये भी उसमें पहलु निकाले जाते। सुनते हैं सहस्त्र पहुल वाला भी हीरा होता है, जैसे सहस्त्रदल कमल होता है।

जौहरी जो होता है वह ग्राहक की पहचान रखता है। जो मांग रहता है वह लेने वाला है या नहीं। माँगने से कौनसा माल मिलता है आप लोग जानते ही हैं उस जौहरी ने एक हीरा जैसा निकाला जो चमकदार एवं पहलुदार था रख दिया राजा के सामने। 5 मिनिट भी नहीं हुये राजा ने परख कर लिया की ये क्या मामला है। वह मिश्री का टुकड़ा था। विदेशी मिश्री भी होती है– देशी मिश्री की तरह। आज विदेशी मिश्री से सब परिचित हैं, देशी मिश्री को छोड़ दिया इसलिये डायबिटीज हो रही है। बनाने की प्रक्रिया एक है– गुड़–खांड–शक्कर। शक्कर में पॉलिश होती है इसलिये सफेद दिखती है। खांड पीली होती है। शक्कर में सभी गुण समाप्त हो जाते हैं गुड़ को आयुर्वेदाचार्यों ने भी गुणकारी माना है बस मात्रा अनुपात से हो। ये मक्खी बता रही है की ये मिश्री है हीरा नहीं।

काँच एवं हीरा की परख सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता है। आज सही क्या है एवं गलत क्या हे इसकी पहचान नहीं रही इसलिये ढगे जाते हैं। सम्यक्दर्शन ऐसी ही वस्तु है जिसे पहचान के अभाव में ढगे जा रहे हैं। ज्ञान नहीं है कोई चिन्ता नहीं देवशास्त्र गुरु के प्रति दृढ़ श्रद्धान होना जरूरी है। मिश्री के भी शान पर चढाकर पहलू निकालते हैं, वह विदेशी जौहरी 5 मिनिट में पहचान गया कि ये सब परखदार हैं। नकली से असली की पहचान हो गयी उसी तरह जीव की पहचान करना चाहते हैं तो पहले अजीब की पहचान करो। पानी छानकर पीते हैं क्योंकि वहाँ जीव है इसी तरह अजीव को भी पहचानो। श्वांस मात्र ले रहा है मुख से खाया–पिया नहीं जा रहा है, मुर्छा में है वह क्या त्याग करेगा। घरवाले कह रहे हैं, महाराज इसके जीवन दे दो। अब क्या हो सकता है मात्र आयु के आधार पर पता लगता है कि यह जीवन है, अजीव नहीं।

पंचायती करोगे तो फंसोगे। मोह उतर जायेगा तो दिमाग अच्छे से काम करेगा अन्यथा ए.सी. में भी लुड़कते रहेंगे। एक के ऊपर बोझ डाल दो समझ में आ जायेगा। हीरे की कोई पहचान नहीं होती, जो हीरा नहीं है उसी आधार पर असली हीरा क्या है पहचान जाते हैं। मक्खी सदैव मिश्री पर ही बैठेगी–असली हीरे पर नहीं बैठेगी। आत्मा परश्रद्धान का नाम ही सम्यग्दर्शन है। अजीव के माध्यम से ही इस पर श्रद्वान होगा। जौहरी बैठा है जीव–अजीव का भेद बताने।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''गले में हो रस्सी''

11.03.2016 **प्रातः 09:30**

गायों को चराने के लिये ग्वाला जंगल लेकर जाता है। वहाँ गाय खेत में घुस कर खा लेती इस पर उसे लठिया की मार पड़ती। अगले दिन ग्वाला ने गाय के गले में रस्सी (लम्बी) बांध दी अब गाय उस रस्सी से चारों और उगी घास खाती कोई मार नहीं पड़ती। वह गाय समझ गयी रस्सी से बांधने के बाद मार क्यों नहीं पड़ी अब वह अभ्यस्त हो गयी।

यदि गले में रस्सी हो तो मार नहीं पड़ती। इसी तरह गृहस्थों में दो प्रकार के क्षावक होते हैं एक व्रती एवं दूसरे अव्रती श्रावक। गले में रस्सी है तो वह व्रती श्रावक है। गले में रस्सी किसने बांधी। स्वयं ने बंधन स्वीकार किया। जीवन में मार न खाना पड़ा इसलिये रस्सी का बंधन स्वीकार किया, जबरदस्ती रस्सी नहीं बांधी नहीं तो आप सिर ''यूँ–यूँ'' करते। एक ऐसा भी व्यक्ति है जो जीवन में न तो रस्सी का बंधन स्वीकार करता है तथा न ही किसी के खेत में जाकर मुंह मारता है बल्कि आप लोग नमोऽस्तु– नमोऽस्तु– नमोऽस्तु कहकर ले जाते हैं, उत्कंठित रहते हैं। मार तो खाता ही नहीं है। सर्वत्र यह उपलब्ध हो ऐसा नहीं है। कर्मों के उदय के बारे में सोचते हैं तो लगता है कि ये उसके द्वारा संचालित हो सकता है। वह देना चाहता है पर दे नहीं सकता, आप लेना चाहते हैं पर ले नहीं सकते। ''ऊपर वाला पासा फेंके में इसे कहता हूँ भीतर वाला पासा फेंके बाहर चलने दाँव''।

जब इस कर्म सिद्धान्त को भूल जाते हैं तभी दूसरे पर आरोप– प्रत्यारोप लगाते हैं, उसने ऐसा किया–3 ये ही अज्ञान की कोटी में आता है। ज्ञान तो वही है कितना भी कर लो मिलना होगा तभी मिलेगा। आप बंधे हुये हैं, हम आपसे या अन्य किसी से भी बंधे हुये नहीं है। हाँ यदि हम बंधे हैं तो आगमसे बंधे हैं। ऐसा विश्वास होगा तभी हमारे भीतर जो बंधा है वह टूटेगा। आप लोग भी यदि इस रस्सी के भीतर चलोगे तो आगामी भवों में कल्याण हो सकेगा। आप सबने सुना जाकर सभी लोगों को बता देना।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''बीजत्व को करें समाप्त''

12.03.2016 **प्रातः 09:30**

कुछ दृष्टि में देखने में नहीं आता पर फल देखने में आता है। बाहर के लोग इधर आते हैं इधर के लोग उधर जाते हैं दोनों के लिये नागरिकता बताना जरूरी होता है। पता बताना जरूरी होता है। आज इस लोक में घूम रहे हैं सब के सब। किसी को अपना पता ही मालूम नहीं है। कहाँ से आये–कहाँ जाना है–क्यों जाना है, कब से आये हैं, आप कौन हैं, एक ही जवाब मिलेगा–पता नहीं। किसी से भी पूछ लो सबका ये ही हाल है।

प्रश्न असीम नहीं होता उत्तर हमेशा–हमेशा असीम हो सकता है। किसी के ऊपर बोझ डालना चाहो तो गलत होगा। इसे एक उदाहरण से समझो। संसार के बारे में सोचने वाला व्यक्ति ही वैराग्य का अनुभव कर सकता है। प्रथम भाव के बारे में कभी सोचा नहीं इधर–उधर की बातें करते रहते हो। एक फल देखा, कहाँ से आया इधर–उधर देखा कुछ नहीं दिखा। ऊपर देखा एक वृक्ष देखा उसी से से गिरा है। दिशायें दस होती हैं। सारी दिशाओं की खबर लेते हो, इस फल के बारे में भी खबर लें। बहुत सारी खबरें छापते हो, इस खबर को भी छापा करो।

वृक्ष से फल टूटकर नीचे गिरा, दूसरा कहता है इसका रंग पीला है। बाजार में जो फल मिलते हैं, उनका रंग अलग होता है। क्यों न हो वे पेड़ पर नहीं पकते बल्कि कृत्रिम रूप से पकाकर बिकते हैं। अन्य फल इसीलिये नहीं गिरे, क्योंकि वे पके नहीं हैं। वह फल सभी लोगों ने खाया। फल वृक्ष से आया वृक्ष कहाँ से आया। इसके पहले कौन आया था। वृक्ष पहले आया या बीज पहले आया। आप लोग सुन रहे हैं। हो। पागल हैं आप लोग। दूसरा कोई आपको पागल कह दे तो। वृक्ष पहले या बीज इसका कोई उत्तर नहीं। कोई पता नहीं। आपको पता हो तो आप लोग ही बताओ। सुनाने वाले को भी पता नहीं। हम इसका उत्तर ढूढ़ंने में लग जाये तो अच्छा होगा। बीज से वृक्ष या वृक्ष से बीज इसका पता नहीं होते हुये भी हम इस परम्परा को रोक सकते हैं। फल तो होगी ही इसे कैसे रोक सकते हैं? जिसमें अंकुरित होने की क्षमता विद्यमान है, इसलिये इसे कोई रोक नहीं सकता। यह कठिन अवश्य है पर असंभव नहीं। यदि बीजत्व को समाप्त कर दिया जाये तो उसे ऊगने से रोका जा सकता है।

वस्तुतः यह समझना आवश्यक है कि बीज क्या है? बीजत्व क्या है? गुरू ने कहा राग–द्वेष के द्वारा बीज उत्पन्न होता है। राग–द्वेश से जो कर्म बंधा हुआ वह उदय में आयेगा ही यही बीजत्व है। उस राग–द्वेश के निमित्त से फिर कर्म बंध होगा ही। ऐसे में कर्म समाप्त कैसे होगा। उसे समाप्त करना पड़ेगा। जब राग–द्वेश करेंगे ही नहीं तो कर्म का बंध भी नहीं होगा जब नवीन कर्म का बंध नहीं होगा तो कर्म का उदय भी नहीं होगा। स्वयं जागृत रहने पर ही ऐसा संभव है। ''अनादि संबंधे च।'' इस सूत्र में भी च का अर्थ यही है कि अनादि से संबंध होते हुये भी उसका कहीं न कहीं से प्रारम्भ होता है। एक–एक पर्याय के बारे में सोचते हैं तो।

आपने मूंगफली देखी होगी। इसको छीलकर दो फलख कर दो। चावल के ऊपर धान (छिलका) यदि हटा दे तो वह कभी उगता नहीं। ऐसे चावल हमको बनाना है जो अपने अनादि जीवन को समाप्त

कर देता है। त्याग करो आज से ही त्याग के बिना बीजत्व समाप्त नहीं हो पायेगा। कर्म के उदय में राग–द्वेश हो ही ऐसा नहीं है। यदि ऐसा ही हो तो फिर बीज को वृक्ष बनने से कोई रोक नहीं सकेगा। ये सारी प्रक्रिया इस पंचकल्याणक में देखने को मिलेगी। पाषाण से भगवान बनने की प्रक्रिया तो होगी ही। बीज का बीजत्व केसे समापत कर सकते हैं। यह इस पंचकल्याणक में देख सकेंगे। आप अपनी दुकान पर बीज बेचते हैं। बेचते रहिये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''महत्व नामकरण का''

13.03.2016 **प्रातः 09:30**

सर्वप्रथम संतान का जन्म होते ही नाम संस्कार किया जाता है। आत्मा का तो कोई नाम होता नहीं। यथा नाम तथा काम। इस बात का भी माता–पिता ध्यान रखते हैं गुणरुप ही नाम रखा जाता है। नामकरण संस्कार बहुत महत्वपूर्ण है। उसी नाम से वह जीवन पर्यन्त चलता है। वह व्यक्ति चला गया फिर भी उसके नाम से काम हुआ करते हैं। इसलिये माता–पिता बड़े सोच कर नाम रखते हैं यह हमारा पुत्र बना रहे। क्योंकि पूत कपूत तो धन संचयै, पूत सपूत तो का धन संचयै। पूत का मतलब पवित्र बना रहे। अच्छे नामकरण के साथ अच्छी भावना बनी रहती है। इसलिये नामकरण के अनुसार कुण्डली बनायी जाती है। विद्यालय में अलग एवं लाड़–प्यार में अलग नाम हुआ करता है।

आपसे हस्ताक्षर कराया जाता हे उसका मतलब है जो भी लिखा है, उसके नीचे स्थान सुरक्षित रहता है, ये लेख संपादक का है, ये लेख प्रकाशक का है आदि–आदि। उसके द्वारा ज्ञान कर लिया जाता है। शीर्षक का अर्थ गम्भीर होते हुये भी हस्ताक्षर पहचानते ही समझ लेते हैं, ये लेख उनका है तो जरूर प्रसिद्ध लेख होगा। यथा नाम तथा। इससे आगे बढ़ना चाहते हैं फिर भी हस्ताक्षर को संशय की कोटी में रखा जाता है, क्योंकि हस्ताक्षर में चिड़िया या मकोड़ा जैसे भी कर दिया जाता है। इसलिये हस्ताक्षर बिल्कुल शुद्ध रखना चाहिये।

न्यायालयों में चिड़िया नहीं मकोड़ा नहीं हमें तो अंगूठा मानेगे। ये छाप नहीं है जो भीतर है। सी.आई. डी वाले इन्हीं बातों को लेकर प्रशिक्षित किये जाते हैं। बाल्यकाल से लेकर मरण तक वहीं अंगूठा है, हस्ताक्षर सही से सही है। हाथ का अंगूठा कभी बदलता नहीं है। हाँ भाग्य के कारण बदलता है। मुद्रा इसी को बोलते हैं– उसमें दो पहलु होते हैं, एक तरफ चित्र होता है, एक तरफ लेख रहता है। पवित्र कार्य के माध्यम से, पवित्र नाम से और कुछ पवित्र करने का सोचते हैं। आज गड़बड़ हो रहा है, इसलिये ये विषय रखा। जो पहले था, बीच में था और अंत में था उसी की इतिहास में कथा होगी। भारत पहले थो, बीच में भी था और बाद में भी रहेगा। तीने बातें याद रखना नामकरण, हस्ताक्षर एवं हस्तक्षेप। हस्तक्षेप का मतलब अंग (अंगूठा) है। इस अंगूठे का बड़ा महत्व है। विद्या भी इसी से जैसे धर्नुविद्या, शिल्प भी इसी से होता है। तराजु में तौलते हैं–अंगूठे के बिना उठा नहीं सकते। अंगूठे के बिना कवल ग्रास बनाकर खा नहीं सकते। रोटी कोई खा नहीं सकता। कवल बनाकर ही खा सकते हो। पशु (गाय) रोटी खा लेती है। रोटी को पीओ

एवं दूध को खाओ। मानवीयता क्या है, इसके बारे में सोचना चाहिये, इतिहास जानना जरूरी है। प्राचीनकाल में जो लिखावट थी उसे सुरक्षित रखना आपका कर्त्तव्य है। कुण्डली काम में आती है विवाह के समय। भारत की कुण्डली क्या है उसे ध्यान में रखना चाहिये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''ज्ञान और शिक्षा का करें सदुपयोग'

14.03.2016 **प्रातः 09:30**

जब समुद्र का जल सूर्य के ताप/घाम से वाष्प बनकर ऊपर चला जाता है। इतनी मात्रा में पानी ऊपर गया, आप इसका अंदाजा नहीं लगा सकते हैं, न ही समुद्र में नीचे कितना पानी है ये भी अंदाजा नहीं लगा सकते हैं। ये भी पता नहीं कि समुद्र में नीचे पानी ज्यादा है या ऊपर पानी ज्यादा है। यदि जितनी मात्रा में वह जो पानी ऊपर गया है वह पूरा नीचे आ जाये तो क्या होगा। प्रलय हो जायेगा। प्रलय का मतलब प्रकर्ष रूप से लय इति प्रलय। इसके उपरांत धरती भी तप गयी, धरती प्यासी है। प्यास बुझाना चाहते हैं बादल। यदि बादल फट जाये तो क्या होगा। प्यासी धरती प्यासी ही रह जायेगी। इसलिये उन बादलों को धरती की तपन देखकर बूँद–बूँद कर ही नीचे आते हैं। ये धरती के पूत हैं। उसमें भी कभी–कभी श्रावण की झरी लग जाये तो अच्छी मानी जाती है। भला के भला यदि बरसा तो गड़बड़ होगा। प्रकृति बूँद–बूँद करके ही सबको तृप्त करती है।

यह उदाहरण इसलिये दिया कि हम लोग अपने कर्त्तव्य को समझें। भगवान के पास इतना ज्ञान है , जितने ज्ञेय हैं, उससे अनंत गुणा ज्ञान है। एक स्थान पर ऐसा भी लिखा कि ऐसे लोक अनंत और आ जायें तो भी वह ज्ञान वैसा ही बना रह सकता है, कोई भी बच नहीं सकता उस ज्ञान के सामने। इतने ज्ञान के धनी हैं हमारे सर्वज्ञ यदि सबको पिलाना चाहे तो हम पी नहीं सकते हैं। उनका ज्ञान हम लोगों के लिये पचने वाला है ही नहीं। कुछ बूँदे मिल जाये 2–4 उतनी पर्याप्त हो जायेगी। मोक्षमार्ग में बहुत जरूरी है ज्ञान ऐसा सरस्वती के वरदपुत्र मानते हैं। अपने आपको इसकी कोई जरूरत नहीं। गणधर देव को करुणा हुयी। आप्त ऐसी भाषा में बोलते हैं, उसे लिपीबद्ध करने की भी शक्ति नहीं है हमारे पास। गणधर परमेष्ठी ने प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करुणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग रूपी चार जग भर लिये। जैसे–जैसे एक पानी का जग, एक दूध का जग, एक छाछका जग, एक रस का जग हो। फिर परोसना प्रारम्भ किया। उसमें भी थोड़ा–थोड़ा परोसना प्रारम्भ किया। जल्दी हो जाये तो भी काम नहीं चलेगा। कितना लम्बा–चौड़ा ज्ञान होता हे, आप विदित है।

सूर्य के माध्यम से वाष्प बनता रहता है निरन्तर परन्तु कभी वह समुद्र खाली नहीं होता है। ये भी केवलीगम्य ही है। ज्ञान का उपयोग कहाँ, कितना, किसको देना है, ये सभी जानना जरूरी है। आज

शिक्षा की यही गड़बड़ी हो रही है। ये ही प्रलय हो रहा है। आर्यखण्ड में ही प्रलय होगा। ज्ञान और शिक्षा का आज दुरुपयोग हो रहा है। मात्र धन ही प्रयोजन हो गया है आज की शिक्षा का। धन वस्तुतः क्या वस्तु है, ये किसी की भी दृष्टि में नहीं आ रहा है।

समीचिन ज्ञान ही वास्तव में स्वयं ही धन है। यह जिधर ले जायेगा, वही सही होगा– आँखें भर खुली हो। काम में क्या आना चाहिये, वह नहीं आ रहा है, व्यवसायीकरण हो गया है। जब छोटा था उस समय मन्दिर जी में कोई भी शास्त्र मिलता था, उसमें मूल्य के स्थान पर लिखा रहता था –स्वाध्याय एवं सदुपयोग। आज लिखा रहता है–सर्वाधिकार सुरक्षित एवं दूसरी ओर मूल्य लिखा होता है। इसके उपरांत भी यदि आप प्रकाषन कराना चाहे तो– नहीं। सर्वाधिकार सुरक्षित है। ये कपूत है या सपूत है। इसका नाम न स्वाध्याय है न ही शिक्षा है। शिक्षा की नीति ही ऐसी है। नीति, प्रीति, रीति, भीति सब के सब गड़बड़ हो गयी है। अब तो राजनीति हो गयी है। सब जगह समझ में आ रहा है।

हमने जो दिया है उसे बांधकर रखना। एक–आध को सुना दो। सर्वज्ञ समुद्र है, गणधर–हण्डे के समान है, बड़े–बड़े आचार्य जग के समान, छोटे आचार्य धार के समान है। धार में भी सावधानी की आवश्यकता होती है। इन्होंने धक्का दिया इसलिये धार बिगड़ गयी। चौके में हम तो मौन रहते हैं आप लोगों में धक्का–मुक्का चलती रहती है। मुंह चलता रहता है उसे ही मुक्का मान लो। ये दुरुपयोग है ज्ञान का। आचार्यों के संकेतों को सुरक्षित रखना अतिआवश्यक है। जब पूर्णतः धर्म नष्ट हो जायेगा तब तो कुछ रहेगा ही नहीं। जो जानकार है उनके माध्यम से पूछताछ करके हमें ज्ञान कर लेना चाहिये। चरक आदि आचार्यों के सूत्र आज भी चिकित्सा में बहुत काम करते हैं। चिकित्सक ही यह काम कर सकते हैं, रोगी नहीं कर सकता। रोगी तो उपचार के माध्यम से या देखकर अपने आचरण में परिवर्तन लाता है एवं रथ पर आरुढ़ हो जाता है। पूर्वाचार्यों के द्वारा लिखित शास्त्र होने के बाद भी आज सही अर्थ नहीं लगाया जा रहा है। जिस काम के लिये दिया गया है वह ज्ञान उसी काम में लेना। उसी रूप उपयोग करना। अन्यत्र उपयोग नहीं करना एवं अन्य मात्रा में भी उपयोग नहीं करना। मोक्षमार्ग में उपयोग करना ही सही उपयोग माना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''जीवन टायर एवं ट्यूब की तरह'

15.03.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोग अल्प समय के लिये अपने भावों को मैं जो कर रहा हूँ उस ओर लगाने का प्रयास करें। आप लोग वाहन चलाते हैं, केसे चलता है, पहिये पर चलता है। पहिया भी तब चलता है। जब उसमें इनर। ट्यूब होती है। ट्यूब में हवा होती है। आप सब कुछ खरीद सकते हैं पर हवा भरना भी जरूरी होता है। हवा भरते हो इनर–ट्यूब में यदि ऊपर का टायर कमजोर हो तो भीतर ट्यूब फट जावेगा। यदि कम हवा भर दें तो टायर के ऊपर ठोकर लगेगी।

इस उदाहरण में भीतर की ट्यूब भाव का प्रतीक है, बाहर का टायर शरीर एवं वचन का प्रतीक है। इसलिये अपनी क्षमता देखकर दोनों को चलाने का प्रयास करे। आज टायर बिल्कुल कमजोर है फिर भी भावों का अतिशय बताते रहते हैं। टायर में परिवर्तन हो नहीं सकता वह आजीवन के लिये मिला है। हीन संहनन होने के कारण हम अपना जोर नहीं दिखा सकते हैं। जब टायर में गड़बड़ हो जाती है तो हम गैटर लगा देते हैं। गैटर सब लोगों को लगाने की जरूरत नहीं पड़ती है। ये अलग बात है कि किसी–किसी को टायर हल्का एवं ट्यूब अच्छा मिलता है तो किसी–किसी को टायर हल्का एवं ट्यूब अच्छा मिलता है। ये है कि बनती कोशिश ट्यूब को अच्छी बनाये रखे, हाँ टायर का भी ध्यान रखें।

आप सभी लोग पंगत में बैठे हैं, अपनी–अपनी जठराग्नि के अनुसार ले सकते हैं पर इच्छा की ज्वलंत समस्या है। रसनेन्द्रिय अलग है, रसना अलग है एवं रस अलग है। भीतर जो पाक होता है (अग्नि देवता) वह भी अलग है। सब उस अग्नि देवता को संतुष्ट रखें लेकिन वह रसेन्द्रिय देवी सबको वश में किये हुये है। उस देवता को कोई नहीं देख रहा है। जो आत्माराम बैठा है उसकी भावना को भी देखो। इस भव में नहीं बन पा रहे अगली पर्याय में पूरी हो, यह भावना तो आज भी कर सकते हैं। समता के साथ इस भव का उपयोग करिये। समता देवी ऐसी देवी है जो वरदान के रूप में काम करती है। आचार्य कुन्दकुन्द ने भी कहा है कि मै उस समता को नमस्कार करता हूँ जो मोक्ष का संपादन करती है। हम जो भी निमित्त मिलते हैं उन सबसे उपादान को और बलवान बनाते जाये। अभी आज जो बिंब लाये हैं, उन बिंबों को देखते है जैसे प्रतिबिम्ब झलक रहे हो। इन बिंबों में फलानाचंद, न दिखें, न ही लाल दिखे, न ही सिंघई दिखे, न ही धीमान, गरीबचंद दिखे। उसमें अपना होनकार आत्मतत्व दिखे इसलिये इसकी स्थापना की जा रही है।

हम निरालंब यात्रा में बहुत जल्दी थक जाते हैं इसलिये संतों ने हमें इस प्रकार का आलंबन लेने के लिये कहा। ऐसा न हो कि इस बिंब की स्थापना तो हो रही है पर पड़ौसी से तो 36 का आंकड़ा है। ये बाजारु नाम है। हमें उसमें 36 के स्थान पर 63 का आँकड़ा भी दिखे। इसके माध्यम से 6 का मुख 3 की ओर और 3 का मुख 6 की ओर है इसका मतलब हमारा श्रद्वान वीतरागता की ओर ही बड़े इसी भावना के साथ में सभी के लिये एवं अपने स्वयं के लिये भी कहता हूँ कि पुरुषार्थ करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दृष्टिकोण नहीं दृष्टि हो''

16.03.2016 **प्रातः 09:30**

दृष्टि एवं दृष्टिकोण में अन्तर है। इसको समझना बहुत जरूरी है। दृष्टि व्यापक है दृष्टिकोण एक पहलु है सीमित है। दृष्टिकोण नय को विषय बनाता है दृष्टि प्रमाण को।

एक कथानक से इसे समझते हैं। किताब का शीर्षक मुझे याद नहीं आ रहा है। एक हाथी एक वृक्ष के नीचे पहुँचा। इस बाजू को हरी–हरी पत्तियों को खा लिया। एक व्यक्ति ने कहा लगता है ये हाथी एक आँख वाला है। इसीलिये एक ही तरफ की पत्तियाँ खा रहा है। दृष्टिकोण इसी को कहते हैं। दृष्टिकोण में कोण का अर्थ है अंश। वर्तुल में कोण नहीं होते। 360 अंश होते हैं वर्तुल में। एक अंश भी कम नहीं होता। समग्रता को आँख से नहीं पकड़ पायेंगे। दृष्टिकोण का अर्थ होता है आंशिक गृहण। आचार्यों ने इसे नयवाद कहा। एक नय का विषय दूसरे नय के विषय से अलग है, पर एक नय–दूसरे नय का निषेध नहीं करता है। उस व्यक्ति ने एकांश से कहा इधर वाला ही खा रहा है, इसलिये हाथी एक आँख वाला है। एक विषय में स्पेशलिस्ट हो गया, अन्य में कुछ जानता ही नहीं। सर्वांगीण विकास कैसे होगा। आज की शिखा ऐसी ही हो गयी है।

आप निमंत्रण के बिना भी आये हो हम परोस देंगे पर आप अपनी जठराग्नि को तो देखना, उसका ध्यान रखना अन्यथा हमारा अच्छा भोजन बर्बाद चला जायेगा। एक पहलु के माध्यम से निर्णय लेना ठीक नहीं। एक–एक अंश से वर्तुल को पकड़े। इसके लिये धैर्य हो, बुद्धि विशाल हो। दूसरे के पास उसका क्या दृष्टिकोण है, उसे समझना साहस का काम है। दूसरे को समझे बिना निर्णय लेना अधूरा होगा। जापान एक देश है, मांसाहारी है उसका समर्थन नहीं है, पर उसके देशवासियों का देश के प्रति समर्पण अनुकरणीय है एक जगह कर्मचारी वेतन बढ़ाना चाहते थे, मालिक ने कहा अभी महीने में बता देंगे तभी कर्मचारियों ने मिलकर कहा हम भी महीने में बता देंगे। और हड़ताल कर दी। भारत की तरह हड़ताल नहीं यहाँ तो कामचोर का मतलब हड़ताल है। उन्होंने श्रम करना बंद नहीं किया। 1 माह में आर्डर आया जोड़ा चाहिये। जोड़ा धोती का होता है साड़ी का नहीं क्योंकि धोती को ओड़ करके ही काम लेते हैं। वह चप्पल का जोड़ा चाहिये। कर्मचारियों ने 1000 चप्पल केवल एक ही पांव की बना दी। दूसरे पांव की नहीं बनायी। मालिक ने कहा ये क्या किया। उस एक ही पांव की चप्पल को कौन खरीदेगा। उसको समझ में आ गया। एक दृष्टिकोण से कुछ नहीं होगा। श्रम तो किया पर एक ही तरफ से।

कोई बच्चा बोलता है तो बड़े कहते हैं ऐ बच्चा बैठ जा। अब बच्चा तो माता के सामने बच्चा ही रहेगा। वे 80 के भी होंगे ये 60 साल का बच्चा होगां वे घर छोड़ेंगे ही नहीं तो ये क्या करेगा। उन्हीं के नाम से व्यापार करेगा। फर्म का नाम बदल नहीं सकता। ये सब एकांगी दृष्टिकोण का परिणाम है। कारखाना बंद नहीं किया ये कुशलता थी की अपनी मांग को इस प्रकार रखा। हमें अपनी प्रतिज्ञा को सही पालन करना चाहिये। उसी के अनुसार हम पूर्णदृष्टि रख सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''किराये का घर/दुकान''

17.03.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोगों को ज्ञान होना चाहिये कि अपना घर एवं दुकान नहीं होते हुये भी खोलते हैं। दूसरों की दुकान किराये पर लेकर आप अपनी दुकान खोलते हैं फिर जैसा अनुबन्ध होता है महीने या 6 महीने में उसका किराया देना होता है, बिना मांगे ही। भीतर दुकान होती है तो चलती नहीं है। जैसे बजरिया से खिसककर इधर आ गये। बजरिया कोई नहीं जाता। बाहर रोड/रास्ते में भी मौके पर दुकान खोलते हैं हर व्यक्ति मौके का लाभ लेता है। इस प्रकार किराया देते हुये भी आनंद का अनुभव करता है। हम अपने पास से कुछ नहीं देते, गंगा में से एक लोटे दे देते हैं। कमाते ज्यादा हैं देते एक छोटा सा हिस्सा हैं। जिनकी अपनी दुकान है उनको तो वो भी नहीं देना पड़ता है। लेना ही लेना है।

हमारे गुरुओं ने बताया आत्मा साधना करने के लिये इस शरीर रूपी दुकान का उपयोग कर रहे है थोड़ा सा किराया इसे देते रहना चाहिये। इसी से काम चलाना है। साधना इसी के माध्यम से करना है। इसी के द्वारा आवश्यकों का पालन करते हैं। यदि शुभकार्य भी छोड़ देंगे तो निर्जरा कैसे होगी। कभी भी निर्जरा के साधन को नहीं छोड़ना है। पूजा, अभिषेक, विधान, जाप आदि से तात्कालिक पुण्य बंध के साथ पूर्व के कर्मों का क्षय भी होता है। अंत समय तक छः आवश्यक का पालन करते रहता है। शुभोपयोग से केवल बंध मानना गलत है ऐसे लोगों के पास समय भी है या नहीं देखना होगा। मात्र अपनी दुकान चलाते हैं।

अपना विज्ञापन करने के लिये इस तरह का कह रहे हैं। बाद में पश्चाताप करने की अपेक्षा अभी ही भगवान या गुरु चरणों में आ जावो। एकांत से शुभोपयोग को बंध मानना माँ जिनवानी का अपमान है। आगे भी यदि ऐसा करेंगे तो आगे भी इसी तरह का भोगना पड़ेगा। धर्म को कर्म बनाना ठीक नहीं। हर समय हम थोड़े में ही गलत भावकर लेते हैं भगवान के आयतन को परिग्रह बनाना, ग्रन्थों को परिग्रह बनाना घोर पापकर्म का बंध करना है। हमारे धर्म में भाव प्रधान होते हैं, भावों के अनुसार कर्मबंध होता है। जिसका मुख सदुपयोग की ओर वह शुभोपयोग एकांत से बंध का कभी कारण नहीं उससे निर्जरा भी होती है।

''ध्वजा का संकेत''

18.03.2016 **प्रातः 09:30**

आप सभी अल्प समय में पूरा अर्थ समझने का प्रयास करेंगे। आज अभी ध्वजारोहण हुआ। इसको ध्वज उत्तोलन या ध्वजाआरोहण मानते हैं ध्वजा ऊपर की ओर चली गयी अब गाँठ खोलना है, गाँठ बांधी भी आपने ही है। उसमें जो भरा था वह तो नीचे की ओर आया। इस बीच एक व्यक्ति ने हाथ लगाया/ध्वजा बता रही है क्या? उसी को पहचानो जो दिख नहीं रहा मात्र संकेत दे रहा है। उसको संकेत कौन दे रहा है। वह महत्वपूर्ण है। वह संकेत दे रहा है—वायु।

हवा वह दिखने में नहीं आती, पर संकेत देने में सक्षम है। ब्रह्मचारी जी ने संकेत दिया कुबेर का माल खुल गया। जिस तरफ हवा बहती है उसी तरफ वह ध्वजा जाती है। उसी से संकेत मिल जाता है। और भी संकेत के साधन होते है। उन्हें भी ध्यान रखना चाहिये। सोलह कक्षा पार की जाती है, प्रत्येक कक्षा में लिखित या शब्दों से संकेत मिलता है। बोली है वह कर्ण का विषय है, कर्ण भी नहीं मन का विषय है। मन उस ओर नहीं है तो काले अक्षर भैंस बराबर। ऐसे ही कार्य होने चाहिये जिससे विश्व प्रेरित हो, विश्व भी उससे प्रेरणा लेता रहे। भाव तरंग मानस तरंग महत्वपूर्ण है। हवा दिखती नहीं फिर भी संकेत ऐसे ही भीतर की जागृति के बिना बाहर ज्ञान नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''संयोग वियोगमय है''

24.03.2016 **प्रातः 09:30**

कल जब पंचकल्याणक पूर्ण हो गये तो ऋषभनाथ भगवान को कब मुक्ति हुयी किसी ने उसका साक्षात्कार नहीं किया। इन्द्र को भी खबर नहीं बाद में औपचारिकता करने का अवसर प्राप्त किया। इसी बीच एक व्यक्ति फूट–फूटकर रोने लगा। उस दुःख को भूल ही नहीं पा रहा था। वह उस दुःख को तभी भूल सकता है जब केवलज्ञान प्राप्त हो जाये। वह सोच रहा है अब मेरे जीवन में किसी तीर्थंकर का कल्याण मनाने का अवसर नहीं आयेगा।

संसार के सभी संयोग वियोगमय हैं संयोग को सभी अच्छा मानते है, पर वियोग किसी को इष्ट नहीं। वियोग में क्या कर सकते है रो सकते हैं। रोना आता है। चक्रवर्ती रो रहा है, उनको कौन समझाने वाला है। निर्वाण कल्याणक होने पर सब कुछ गायब हो गया। आप हँस रहे हैं? वहाँ से भगवान आ गये अब मेला खत्म पैसा हजम। आप लोग अब याद करो मात्र इतना ही कर्त्तव्य है। लुप्त हो गया परिणमन निश्चित है। सम्यकदृष्टि न हँसता है न रोता है, वह उसके परिणमन को यथावत बनाने का पुरुषार्थ करता है, आप ऐसा ही परिणाम बनाये रखें।

''सही दिशा में सही कदम''

25.03.2016 **प्रातः 09:30**

एक व्यक्ति जो अस्वस्थ था। इसके उपरांत वैद्य जी के पास गया। क्या खाते हो। कब–कब खाते हो। ये भी बताओ जो खाने योग्य नहीं है वह भी खाते हो ये भी बताओ। वैद्य जी महाराज हम तो दवाई लेने आये हैं। आप तो बस दवाई दे दो। वैध जी ने ये खुराक ले लेना ये खुराक लेना। और क्या खाना ये भी बता दो। तक्र (छाछ) के साथ ये खुराक लेना 4 खुराक हैं 4 सुबह एवं 4 शाम को लेना है। खुराक को तो छुड़वा दिया अब ये कौनसी खुराक है। औषधी ही खुराक है। पूछ लिया कहीं खुराक गड़बड़ न हो

जाये। औषधी का प्रभाव तभी पड़ता है जब अनुपात ठीक हो अर्थात जितनी मात्रा में लेना हो तथा जिस समय लेना हो तभी पड़ेगा।

आपने हमें यहाँ बैठाया है, अब आप जो चाहेंगे वो नहीं बोलेंगे अब तो जो हम बोलना चाहते हैं वही बोलेंगे। कई लोग ऐसे भी सुन रहे हैं जो खुराक नहीं लेना वही खुराक लेते हैं। इसी तरह मोक्षमार्ग में भी कदम प्रारम्भ हो चुके हैं, अब गली मत निकालो त्याग तो त्याग है। हाँ ऐसा भी नहीं कि पहले त्याग करो या बाद में त्याग करो। त्याग क्रम से ही होता हैं पहले जो ज्यादा नुकसानदायक है उसे छोड़ो। पहले औषधी नहीं छोड़ी जाती, औषधि लेकर स्वस्थ होकर फिर छोड़ी जाती है। असंयम को पहले छोड़ो। मोह को गाढ़ा करना ठीक नहीं मोह को पतला करना अच्छा है। दाल दुनी भात मत करो। दाल कम भात ज्यादा तो खाया जाता है, यदि दाल ज्यादा भात कम तो पीलो। पेट भरना है। कुछ भी कर लो कभी दाल ज्यादा भात कम। कभी भात ज्यादा दाल कम हो जाती है।

केवल सम्यग्दर्शन–सम्यग्दर्शन चिल्ला रहे हैं, चरित्र की बात नहीं करना चाहते हैं स्वाध्याय–स्वाध्याय से कुछ नहीं होगा। चाहने से मुक्ति नहीं और चाहने से भी मुक्ति नहीं और नहीं चाहने से भी मुक्ति नहीं मिलेगी। सही दिशा में सही कदम रखने से ही काम होगा। दवाई लेते रहते हैं वह अनुपात से ही काम करती है, अनुपात विवेक पर आधारित होता है। ज्यादा मात्रा में दवाई लेना हानिकारक भी हो जाता है, हमारा समय हो गया है। आप लोग तो महाराज जी सुनना हमारा काम है, संघी है हम इसलिये सुन रहे हैं लेकिन सुनना सबकी करते मन की। कैसे हो कल्याण। आगम के अनुसार ही करना। सुनने से भी हल्कापन आ जाता है। हो।

कल अंतिम दिन था। कलशारोहण भी हो गया। हिल रहा था पर अब जम गया। मेरु होता है माला में उसके आते ही पता चल जाता है कि मालापुरी हो गयी। अच्छे दुकानदान कुछ न कुछ अपने पास रख लेते, इसी प्रकार हम भी अच्छे दुकानदार है ना।

अहिंसा परमो धर्म की जय

बिहार 26.03.2016 प्रातः 06:30 पर कटंगी से 13 किमी. आहार चर्या संग्रामपुर में– रात्रि विश्राम दुर्गावती अभ्यारण्य गेस्ट हाऊस 7 किमी पर प्रातः 6 किमी. पर जबेरा में आहार चर्चा वहीं हुई।

''खिले कमल की तरह''

27.03.2016 **प्रातः 09:30**

आप सभी जानते हैं चारों ओर सरोवर में कई कमल होते हैं, वे कमल किसी का निमित्त पाकर खिल जाते हैं। सारे के सारे कमलों को खिलाने में सूर्य निमित्त है ऐसे ही एक सच्चे धर्मात्मा का हृदय कमल देव शास्त्र गुरु का समागम पाकर हृदय कमल खिल जाता है उनके निमित्त से क्यों से क्या मंथन हुआ ये तो वही जान सकते हैं पर सूर्य को देखकर खिलना स्वभाव है यही निमित्त–नैमितिक संबंध है।

इसी प्रकार जिनालयों को देखने से या जिनालयों को बनाने से लाखों लोग प्रभावित होते हैं। जब तीर्थंकर का निर्वाण हो गया तो युग के आदि में चक्रवर्ती ने भी जिनालय बनाये ताकि उनका साक्षात् दर्शन नहीं है फिर भी हम उनकी पूजा अर्चन कर सके। यह व्यवस्था आज भी निर्बाध चल रही है। मान लीजिये किसी की उम्र 50 किसी की 70 किसी की 80 वर्ष है। उम्र अलग–अलग है आना भी होता है, जाना भी होता है, पर जिन दर्शन/जिनालय के द्वारा अपने संस्कारों को जिन्दा रखते हैं। जब मुनिराज के दर्शनों का अभाव होता है, तो इन्ही मन्दिरों का आलम्बन लेता है। श्रावक।

आज सूर्य तो उदित हुआ नहीं (मौसम के कारण) फिर भी सब के कमल खिले हुये हैं। निमित्त–नैमेत्तिक संबंध इसी को कहते हैं कभी–कभी अच्छा योग मिलने पर भी प्रयोग नहीं कर पाते हैं। मारिचि का जीव आदिनाथ के समोशरण में बाहर ही निकल रहा है। अपने ढंग से यद्वा–तद्वा करने से कुछ नहीं होने वाला, कल्याण तभी होगा जब प्रभु की बात को मानोगे, गुरु की बात को मानोगे। जिस समय भावों को लगाया जाता है तभी काम बनता है। आज की व्यवस्था के कारण ऐसा हो रहा है, सब उल्टा ही दौड़ रहे हैं। चाल को सुधारना जरूरी है।

आत्मा के कर्ता नहीं। आत्मा का स्वभाव भी नहीं है। कर्तापन–भोक्तापन एवं स्वामीत्वपने से ऊपर उठो। आज चलाकर कर्ता बना जा रहा है। कषायों से बचने का यही श्रेष्ठ उपाय है। दुख धीरे–धीरे ही जाता है, एक साथ नहीं निकल सकता। शांत बैठ जाओ– सामने वाले देखते रहो। जल्दी चला जायेगा। ''हल्दी लगी न फिटकरी रंग भी चोखो आय।'' धन्य है ऐसी आत्मा जो किसी रंग से प्रभावित नहीं होती। अनंतकाल के लिये उस अंतरंग एवं बहिरंग से उस शाश्वत रंग को स्वीकार करते हैं आज अनेक प्रकार के रंग विदेशी हवा के रूप में आ गये हैं, ज्यादातर लोग उसी रंग में पूरे रंग चुके हैं, विदेशी हो चुके हैं। जब भी मोक्ष प्राप्त होगा चेतन को ही होगा जड़ को नहीं होगा। अभी तो जड़ से इतने प्रभावित है कि उसी में गाफिल हो गये हैं। भगवान ने ये नहीं कहा कि बरसने लग जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''जल तुम्हारा रंग कैसा?''

28.03.2016, चौपरा पटी **प्रातः 09:30**

प्रातः 7 किमी. चलकर शांतिनाथ भगवान के अतिशय क्षेत्र चौपरा पहुंचे जल से कई रंगों ने पूछा कि हम लोगों के तो रंग है। अंतरंग अलग बहिरंग अलग अनेक प्रकार के व्यक्ति के व्यक्ति हमें देखकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, हे जल तुम्हारा रंग कौनसा है। जल ने कहा हमारे पास तो कोई रंग नहीं और न ही किसी को रंग दे सकते हैं। न रंग है, न रंग पंचमी है। हम तो जिसके संग हो जाते हैं, वहीं हमारा रंग है। धर्म का कोई रंग नहीं। फिर भी सब उसके रंग में रंग जाते हैं, यह उसका प्रताप है।

गाँव वाले भी शहर में जाकर वहाँ के रंग में रंग जाते हैं। एक व्यक्ति दूसरा रास्ता बता रहे थे, हमें मालूम था कि कौन सा रास्ता जाना है। कितना शुद्ध वातावरण है प्रतिक्षण निर्दोषता है। संसारी प्राणी

लोक से प्रभावित नहीं है, लोभ से प्रभावित है। अपने परिणामों को शुद्ध रखने के लिये परिसर को भी शुद्ध रखना पड़ता है। गाँवों में ही यह शुद्ध वातावरण रहता है। आदिनाथ को आहार देने वाला भी ऐसे ही अन्न उपजाने वाला होगा। राजा के अन्न भण्डार में अन्न कहाँ से आया? शहर का तो पानी भी पीने लायक नहीं। गया किते से इते से ही गये शहर में बसने। यहाँ का किसान दिन में श्रम करता है एवं रात में ढोलक–मंजीरा के माध्यम से भगवान को याद करता है। राजा के पास धन भी किसान की खेती से ही आया। इसलिये हमने शहर वाला रास्ता छोड़ दिया इस तरफ से आये।

स्वतंत्र राज चलता है इधर। वह रास्ता हाइवे था। गाँव के रास्ते प्रधानमंत्री कोष से बने हैं। यहाँ के रास्ते क्षतिग्रस्त नहीं होते, हो भी कैसे गाँवों के पैसे से जो बनी हो। जल ने कहा जिसमें मिला दो वही मेरा रंग है। चाहे हल्दी में मिलाओ या लाल में मिलाओ। रंग पंचमी मना रहे हो, जल पंचमी मनाओ। रंग ही जीवन है ये कोई नहीं कहता, जल ही जीवन है सभी ऐसा कहते हैं। जल प्रबंधन होना जरूरी है। निश्चित रूप से समय पर वर्षा होती है। पहले बड़े–बड़े जलाशय बना लेते थे, वह जल कभी सूखता नहीं है।

आज सरकार बड़े–बड़े शहर के बारे में तो सोच रही है, सात्विक जीवन जीने वाले गाँवों के बारे में भी सोचना चाहिये। आहार सात्विक है, जीवनशैली सात्विक है, भगवान का भजन कर रहे हैं। शुद्ध जीवन है। प्रत्येक प्राणी का कर्त्तव्य है कि कषायों से बचें। मात्सर्य भाव भी हमें मान की ओर ले जाता है। शहर में तो ये बहुत ज्यादा होता है। कोई व्यक्ति बड़ा नहीं होता, मान्यता में बड़ा होता है। सच में प्रभु ही सबसे बड़े हैं, उनके सामने खड़े हो जाये तो हमें पता लग जायेगा। ये ज्ञात होते ही दूसरों के प्रति वैमनस्य भाव, अहंकार, अभिमान छूट जाता है।

आप लोगों ने जो शांति से श्रवण किया उसे याद रखेंगे। जल का कोई रंग नहीं होता, उसकी विशालता रहती है, कोई भी रंग ग्रहण नहीं करता। इसी तरह गाँवों में ही शुद्ध हवा मिलती है। शहर में मानसिक, शारीरिक, खान–पान सब दूषित हो गया है। शहर में ऊँचे–ऊँचे चढ जाते हें, विद्युत के माध्यम से चढ़ तो जाते हैं, फिर नीचे नहीं आ पाते। हार्ट–अटैक हो जाता है, वहीं ऊपर से ही ऊपर चले जाते हैं धरती से जुड़े रहो धरती के पुत्रो यदि धरती माँ का आश्रय छोड़ दोगे तो कोई भी रखवाला नहीं। धरती से अधर में तो वैमानिक देव ही रहते हैं आपको वैमानिक देव बनने के लिये भी धर्म से जुड़ना होगा और धर्म गाँव वाले अच्छे से कर पायेंगे। धर्म का पालन पशु–पक्षी इत्यादी भी करते हैं। श्रम करके श्रमण बने हैं उनको मन का विषय बनाओ। दिन में श्रम रात में भजन ऐसे ही मनुष्य का इस भव में जन्म लेना सार्थक है बाकी तो जी रहे हैं आप अपना जीवन सार्थक करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''संस्कृति की रक्षा हो''

29.03.2016 बनवार **प्रातः 9:30**

अतिशय क्षेत्र चौपड़ा चौबीसा से 11 किमी सगरा में रात्रि विश्राम कर प्रातः 3 किमी पर परसुआ के दर्शन करते हुये 6 किमी पर वनवार में चर्या हुयी। प्रवचन–

हमने सोचा कटंगी–संग्रामपुर के बाद इस बार नये लोगों को लाभ मिलना चाहिये अतः 28 वर्ष बाद मुख्य मार्ग छोड़कर हम गाँवों से आये। चौपड़ा के बाद इस ओर घूम गये, इतनी भारी भीड़ हो गयी। सगरा–परसुआ होते हुये बनवार आना हुआ। बड़े बाबा के चारों ओर सेना का मोर्चा है। बांदकपुर वालों ने कहा तो बांदकपुर कितने बार आ गये आप लोग भूल रहे हैं। 28 वर्ष के बाद बोल रहे हैं। यहाँ से सीधे बड़े बाबा को गये थे फिर वहीं पर चतुर्मास किये थे। आप लोगों की संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा है। आज भी बच्चों तथा आबल वृद्धों में जीवित है।

हमारा सोच है कि विशेष रूप से संस्कृति की ओर गाढ़रूप से बढ़ना चाहिये। शहरों के मोह को कम करना। पैसा तो कहीं भी जाओ आवश्यक होता है पर उतना लालच किसान को नहीं होता है जितना लालच शहर वालों को होता है। खेती बाड़ी छोड़ेगे तो संस्कृति की रक्षा। अहिंसा की रक्षा नहीं कर पाओगे, जो प्राचीन काल से चला आ रहा है, उसका संरक्षण गाँव के संरक्षण से ही होगा। गाँव–गाँव देखने से यह स्पष्ट हो गया, थोड़ा बहुत अंतर तो पड़ता है (चर्चा में गाँव में भी दो मोबाइल टॉवर खड़े हो गया ऐसा कहा था।) आप लोगों को उसी को ध्यान में रखते हुये पूर्वजों के प्रति आस्था रखें। धर्म धार्मिक के बिना नहीं होता (न धर्मी धर्म के बिना) लक्ष्मी भी धर्म के बिना नहीं आती। लक्ष्मी कहती है धर्म जहाँ नहीं वहाँ जाकर मैं क्या करूंगी। आप लोग जैसे धन चाहते हैं वैसे धर्म भी पसन्द करना चाहिये। किसी के प्रलोभन में आकर धर्म को नहीं छोड़ना नहीं है। यहाँ भी गजरथ चल चुका है। जब हाथी जुत चुका है, तो बैल तो जुतना ही चाहिये। बैल रहेंगे तो किसान भी रहेंगे। प्राचीन मार्ग को सुरक्षित रखना चाहिये। कहाँ से इतनी संख्या में आ गये ऊपर से आ गये क्या? हम हीं नहीं आप लोगों को भी बड़े बाबा की परिक्रमा करना चाहिये। इससे सब लोगों का मेल मिलाप बढ़ेगा। चौपड़ा में रुकने का आग्रह सगरा में आहार का आग्रह हुआ सब को समझौता करते हुये समझाकर आये हैं फिर देख लेंगे। शिक्षा का रोजगार से न जोड़े।

पूर्व में जो रोजगार के साधन थे उनको नहीं भूलना चाहिये। पूरक बनकर कार्य करना चाहिये। एक–दूसरे के पूरक/अनुग्रह/सहयोग/ उपकार करने से ही काम चलेगा तथा इसे धर्म का प्रभाव बढ़ जाता है। एक–एक बूँद जब मिलती है तब धारा बनती है, उसी धारा से नहीं एवं बहुत सी नदियाँ मिल जाती हैं तो समुद्र बन जाता है। जैसे पूर्व में थे उसी प्रकार मार्ग में आगे बढ़ते जाओ। उसे भूल जाओगे तो पैर और कमजोर हो जायेंगे। आपको हाथ भी एवं पाँव भी दोनों मजबूत बनाना है। गाँवों में जो संख्या कम हो रही है, उसको रोकना जरूरी है। बच्चे लोग कह रहे थे– ''हमें भूल न जाना'' तुम बड़े बाबा को भूल जाओगे क्या? याद रखना।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''उर्ध्वगति स्वभावी आत्मा''

31.03.2016 कुण्डलपुर **प्रातः 09:30**

धरती की ओर देखते हैं तो चारों ओर इन्द्रिय विषयों एवं कषायों की ओर ही दृष्टि जाती है। पहाड़ की ओर देखने पर ये सारी सामग्री धीरे–धीरे कम होती जाती है। पहाड़ पर भी जब शिखर पर पहुँच जाते हैं, तो सभी गायब ही हो जाते हैं मात्र शुभ आकाश ही आकाश दिखता है। आत्मा नीचे की जैसी नहीं यह हमें विश्वास हो जाता है। संसारी प्राणी की दृष्टि सदैव नीचे की ओर ही झुकती है, ऊपर तो केवल बड़े बाबा दिखते हैं। सारी की सारी जनता ऊपर जाती है, थोड़ा सा समय हुआ नहीं कि तुरंत नीचे आ जाती है। नीचे आने की आदत है।

उसी संसारी प्राणी के संस्कार एक–एक घण्टे के जो आज पड़ रहे हैं एक दिन 24 घण्टे भी ध्यान कर सकता है। आप जितना प्रबन्ध करेंगे धार्मिक वातावरण उतना ही कम होता चला जायेगा। (कैमरे से रिकार्डिंग होने पर) एक फोल्डर पढ़ने में आया, सब जगह लागू हो जायेगा वह फोल्डर। परहेज किसका करना है यह आपको देखना है। व्यवस्था आप ही लोगों ने की है ये ठीक है पर चकाचौंध साथ में लेकर जायेंगे तो इससे प्रयोजन सिद्ध होने वाला नहीं है।

वित्त का यदि सदुपयोग करना चाहिये तो इस ओर ध्यान देना चाहिये। अब आप लोग पुराने हो गये हो, थोड़ा बहुत बदलाव तो होना ही चाहिये, अभी तो हमें आप लोगों में कोई बदलाव नजर नहीं आ रहा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''पुण्य का भोग–पाप का कारण''

01.04.2016 **आदिनाथ जयंती** **प्रातः 09:30**

(ऊपर पहाड़ पर प्रवचन)

कल नहीं परसों यहाँ आना हुआ, एक दिन में ही कुण्डलपुर क्षेत्र पर साहस्त्रकूट जिनालय की रचना का मांगलिक कार्यक्रम की रूपरेखा बन गयी। इसमें कोई संदेह नहीं समय एवं क्षेत्र दोनों को किसी भी कार्य के होने में स्वीकार किये हैं। काल/समय तो अपनी गति से चल ही रहा है, क्षत्र यहाँ का आप सब को मालूम है। यहाँ की जनता का पुण्य है, जो इस प्रकार की नई योजना इतनी जल्दी सामने आ गयी। जनता जितनी पवित्र भावों में डूबेगी उतने ही मांगलिक कार्य होते रहेंगे। भाव तो होते रहते हैं पर संसार को बढ़ाने वाले, पंचेन्द्रिय विषयों को पुष्ट करने वाले ही अधिक होते हैं। 'परे मोक्ष हेतु' कहा। आर्त एवं रौद्रध्यान तो बने ही रहते हैं

यह एक ऐसा क्षेत्र जिसकी विशुद्धि से धर्म–शुक्ल ध्यान के भाव होते हैं यह बहुत दुलर्भतम क्षण है। चुटकी बजाते–बजाते निकल जाता है यह समय किन्तु दुर्लभतम इसलिये कहा कि सागरोपम आयु तक

वह भाव फल देने की क्षमता रखते हैं ''नर काया को सुरपति तरसे'' सौधर्म इन्द्र भी इस मनुष्य भव के लिये तरसता है। आप लोग ऊपर जाने की भावना रखते हो, ऊपर तो जाना ही है वहाँ जाकर असंयमी बनोगे यहाँ हो तब तक संयम के साथ पुण्य को गाढ़ा कर सकते हो। पुण्य को रखोगे तो पुण्य बढ़ेगा ही इसमें हानि नहीं है बस पुण्य के योग में जो विषयों की उपलब्धि होती है उनके प्रति हमेशा हेय बुद्धि–उपेक्षाभाव– निरिहवृत्ति बने रहे तो वह पुण्य कोई भी हानिकारक नहीं है।

पुराण पुण्य पुरुष कहते हैं। पुण्य जिनका विकासोन्मुखी रहता है। जैसे–जैसे ऊपर बढ़ते जायेंगे पुण्य बहुत गाढ़ा होता जायेगा। सम्यक्दृष्टि का पुण्य तो गुणितक्रम से बढ़ता ही जायेगा एवं प्रतिक्षण पाप की निर्जरा होती है। बस पाप की निर्जरा करते चले जाओ। पाप से बचने का सदैव भाव रखो। काम करते जाओ, भाव काम करने का होता है तो जरूर काम होगा। आज आदिनाथ भगवान के जन्म कल्याणक पर आज बड़ा काम हाथ में लिया है। कुण्डलपुर क्षेत्र का तो उद्धार हो रहा है, आप लोग भी अपना उद्धार करो। मानस्तंभ तो था ही आज सहस्त्रकूट जिनालय की घोषणा हो गयी। 15–16 आना में सहस्त्रकूट जिनालय एवं ऊपर मानस्तंभ होगा। आप लोगों को लगेगा ही नहीं कब चढ़े और कब उतर गये। बस तर गये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''सफलता की कुंजी''

04.04.2016 **प्रातः 09:30**

चातुर्मास का समय था। बड़े बाबा के दर्शन के लिये लोग जाते हैं। एक–एक सीढ़ी चढ़ रहे हैं। ऊपर से धारा बह रही है, सब ऊपर से नीचे की ओर ही बह रहे हैं। तालाब में उस विषम परिस्थिति में भी एक मछली ऐसी मिली जो नीचे से ऊपर की ओर बार–बार आ रही है। आप लोग कहते हैं– पुरुषार्थ नहीं होता–पुरुषार्थ नहीं होता, हद हो गयी। ये सब नाटक है। उस मछली को किसने आशीर्वाद दिया, उसके तो पैर भी नहीं होते फिर भी पुरुषार्थ में कमी नहीं।

धारा को मत देखों नीचे से ऊपर या ऊपर से नीचे बह रही है। रोने वाला पुरुषार्थ नहीं करता जो पुरुषार्थ करता है तभी कहीं जाकर आत्मा को प्राप्त किया जा सकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दिशाबोध देना या लेना''

05.04.2016 **प्रातः 09:30**

लोगों को ऐसा लगता है कि कोई मांगता है तो देना चाहिये। परन्तु वास्तव में मोक्षमार्ग में देना या लेना संभव ही नहीं है। हाँ मोक्षमार्ग में यदि कोई देना चाहता है तो दिशाबोध दिया जाता है, और दिशा बोध ही लिया जाता है। प्रभु हमें दिशा बोध दे देते हैं हम उनसे दिशा बोध ले लेते हैं। उनका कहना है कि संसारी प्राणी की दशा रेशम के कीड़े की भांति बहुत खराब होती है। वह कीड़ा पाला जाता है, उसके योग्य खुराक दी जाती है, वह पत्तों आदि को खा लेता है। खाने के उपरांत वह लार छोड़ता है, उस लार में वह अपने आपको बंद करता जाता है। अब उस जाल में न वह हिल सकता है न डुल सकता है, न श्वास ले सकता है। अब उसको पालने वाला उसे गरम पानी में डाल देता है। यह कार्यक्रम चलता रहता है। लार नहीं छोड़ता तो गरम पानी में डाला जाता। लार के कारण ऐसा हुआ। कोषाकार कीड़ा कहा जाता है उसे। इसी प्रकार संसारी प्राणी राग–द्वेश छोड़ते रहते हैं अर्थात करते रहते हैं, इससे कर्मों का बंध होता रहता है। यह कार्यक्रम निरंतर चलता रहता है।

यदि आप इससे दूर होना चाहते हैं तो राग–द्वेष से बचना बहुत जरूरी है जिसे अनंतकाल से करते आये हैं। भगवान हमें दिशाबोध दे रहे हैं, राग–द्वेष नहीं होगा तो नया बंध नहीं होगा अपितु बंधा हुआ भी चला जायेगा। अभी आर्शीवाद मांगा, आर्शीवाचन भी मांगा हमने आर्शीवाद भी दे दिया एवं आशिर्वचन भी दे दिया है। अब विषय पूर्ण हो गया। जीवन को समाप्त कर रहे हो। दिशा बोध दे दियां ज्ञात होने के उपरांत भी यदि आप उसे पालन नहीं करेंगे तो भाई–बन्धु, सगे–संबंधी कोई काम नहीं आ सकता। मान्यता को बदलना जरूरी है, आसान नहीं है, पर असंभव भी नहीं है। चारों तरफ भटकन ही भटकन है।

नरक वाले नारकी नहीं बन सकते, देव भी नहीं बन सकते, मनुष्य/तिर्यंच बन सकते हैं। मनुष्य एवं तिर्यंच चारों गति में भेजा जा सकता है। आप देख लो आपकी कुबत कितनी है। कुबत तो बहुत है पर हम उसका अनुमान नहीं लगा पा रहे हैं। सही बताओ। जो मिला है वह बड़े बाबा के चरणों में समर्पित कर दो, सबको बताना चाहते हो तो बता देना। रेशम के कीड़े का उदाहरण याद रखना। हम राग–द्वेष के माध्यम से फंसते चले जाते हैं अपनी आत्मा को बंधन में/वेदना में डालते हैं अज्ञान के कारण अनंतकाल से ऐसा ही चल रहा है। सभी को ज्ञान हो ऐसी भावना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''देवशास्त्र गुरु रूपी जामन''

06.04.2016 **प्रातः 09:30**

इस संसार में सभी वस्तुओं का प्रभाव देखने में आता है, जल का प्रभाव पड़ता है, हवा का प्रभाव पड़ता है, वातावरण का प्रभाव पड़ता है, शब्दों का भी प्रभाव देखने में आता है। अपने पास जो भाव है उनका भी प्रभाव देखते हैं। विशेष द्रव्य–क्षेत्र में जाने पर विशेष प्रभाव पड़ता है। दूध से दही जमाना है पहले दूध को तपाना होगा फिर जमाना पड़ता है तब दही होगा।

पर 10 किग्रा दूध में 5 किग्रा लीटर जामन डालने से नहीं अपितु अनुपात से ही जामन डालना होगा। 10 किग्रा दूध तरल था जामन डालते ही अब जमने लगा। मीठापन कुछ खट्टापन में बदलने लगा। स्पर्श–रस–रूप–गंध सभी 10–15 घण्टों में परिवर्तित हो गये। अनादिकाल से यही व्यवस्था है। यदि सच्चे देवशास्त्र गुरुरूपी जामन मिल जाये तो इस संसारी प्राणी का क्या हो हाँ अपना मन मिले तभी काम होगा यदि दूध को मन नहीं मिलेगा तो तीनकाल में जम नहीं सकता है। हमें दूध का मोह छोड़ना होगा। मोह महातम पियो अनादि भूल आपकी भरमत व्याधि.....। दूध के मोह ममत्व को छोड़ दें, जामन को स्वीकार करें और प्रार्थना करें कि हे भगवान हमारा दूध जम जाये–जम जाय बीच में गड़बड़ न हो जाय।

इतनी क्षमता है उस जामन में जो 10 किग्रा दूध को भी जमा देता है। पुरुषार्थ विधिवत् करो तो क्यों नहीं प्राप्त होगा। जिन्होंने अपने जीवन को जमा लिया है हम भी उनके पास में रहेंगे तो अवश्य जम जायेंगे। पहले हमने सोचा नहीं। अन्यत्र तो सोच लेते हों, जिस विषय में सोचना चाहिये उसमें सोचते नहीं इससे जो धन हाथ में था वह भी चला जाता है। समझधार होते हुये आपने दूध भी छोड़ दिया, अब क्या करें। एक दिन घोटाला हो गया, दूसरे लोग यह कह देते हैं अरे तुमने तो दूध खराब कर दिया, इस प्रकार कुछ होता नहीं। उन्हें क्या पता कि दही कैसे जमता है। वह 12 घण्टे लेता है। विधिवत सब काम करो तो यह बात बन सकती है। दुनिया की बात को गौण करो तभी विधिवत् यह होगा। एक बार जामन डल गया अब दूध तो नहीं रहेगा, उसे विधिवत रखोगे तो दही तो बनेगा ही। इस शरीर में आत्मतत्त्व होते हुये भी हमने मंथन इस प्रकार से नहीं किया, दूसरे ढंग या दूसरी प्रकार से ही किया। हम मुनि तो बन गये। जब भी मुक्ति मिलेगी इसी रास्ते से मिलेगी, उसका अर्न्तजगत भिन्न हो जाता है, उसका चिंतन, उसकी चाल–ढाल सब बदल जाती है। अविरत दशा में ये सब नहीं होता। अब कई प्रकार की परिस्थिति आती है, पर वह संकल्प–साधना आदि से अपना निर्वाह करता रहता है। बीच में कोई आकर कुछ कह भी देता है तो सुन लेता है, करता अपने अनुसार ही है। जब बार–बार कोई कहकर बाध्य भी करेगा तो उस समय अपना संकल्प उसे बता देगा।

जामन का उदाहरण दिया जब तक जमेगा नहीं तब तक मंथन नहीं कर सकते। दूध का कभी मंथन नहीं होता, दही का ही मंथन होता हे उसी से नवनीत की प्राप्ति होगी। जिस दिशा में धारणा बनाते हैं अब साहस, धैर्य, विश्वास रखकर उसी दिशा में प्रतिसमय पुरुषार्थ करते रहना तभी सफलता मिलेगी। किसी को एक भव में ही अथवा किसी को ज्यादा भव भी लग सकते हैं हम भी अवधिज्ञानी या केवलज्ञानी से पूछेंगे। कहाँ से आये ऐसा पूछने पर एक छोटा बच्चा दमोह से आये। कुछ लोग पता नहीं। जब पता नहीं तो उसको क्या रखना जिससे पता मिलना है उसका पता रखो। मात्र बड़े बाबा का पता रखो। हम क्यों चिंता करें। जब आप बड़े बाबा की चिंता नहीं करते तो हम आपकी क्यों चिंता करें। आप भी पूछ सकते हो (लोगों द्वारा कि बड़े बाबा से आपकी क्या बात होती है)। उन्होंने जो बताया उसे दूसरे को बताने की जरूरत नहीं।

बर्तन भी देख लो कि कैसा है। दूध तो बहुत अच्छा है, बर्तन पर भी आधारित है, भीतर भी हाथ डालो। आप लोग अपने–अपने संभालो हम अपने बर्तन को संभालेंगे। आगे जामन के माध्यम से अपना–अपना दूध जमाओ।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''ज्ञानी के छिन मांही''

07.04.2016 **प्रातः 09:30**

एक पिंजड़ा है उसी पिंजड़े में एक तोता है, वह भीतर चैन के साथ बैठा रहता है। उसका मालिक उसे समय–समय पर दूध पानी–फल आदि देता रहता है, वह खाने में मस्त रहता है, उस तोते का एक साथी जो बाहर था उसे बार–बार आकर अपनी भाषा में कहता है। अरे! तुम तो आजादी का अनुभव नहीं कर पा रहे हो, वह भीतर वाला तोता कहता है कि तुम अपनी इस आजादी के इतने गाने क्यों गा रहे हो। तुम मेरे ही पीछे क्यों पड़े हो तथा तुम बार–बार आकर के मेरे बारे में क्यों चिंता करते हो। असल में जो बाहर वाला है वह उसी में अटका हुआ है। भीतर रहने वाला अपनी प्रतीक्षा कर रहा है। आपको इन दोनों तोतों के माध्यम से चिंतन करना है। जिसने छोड़ दिया फिर भी उसी के पीछे पड़ा है या एक वह अनुभव जिससे छोड़ा नहीं जा रहा है फिर भी आनंद का अनुभव कर रहा है। ज्ञान के छिनमांही...। हम स्वतंत्र होते हुये भी समझ नहीं पा रहे हैं। देह को पिंजड़ा समझ ही नहीं पा रहे हैं। श्रमण होने के उपरांत भी समझना कठिन है। केवल आस्रव–संवर का नाम रटने मात्र से कुछ नहीं होता है। बाहर वाला तोता भीतर वाले तोते की ओर ही दृष्टि लगाये हुये है। ज्ञानी सोचता है मेरा था ही क्या जो मैने छोड़ा है। अनंतबार शरीर छोड़ा है एवं अनंत बार शरीर ग्रहण किया है। इस रसायन की प्रक्रिया को समझना अनिवार्य है।

बाहर का तोता बंधा है, भीतर का तोता स्वतंत्र है। इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। इसको ज्ञान एवं अज्ञान दशा के साथ गठित करना चाहिये। जहाँ रह रहे हो उसे देखकर चलो अन्यथा बंधन और 10 गुना बढ़ जायेगा। भूमिका–विवक्षा को कभी गौण नहीं करना चाहिये। आप लोग इन दो तोतों को जरूर याद रखेंगे। बाहर वाला ज्यादा बंधन को हो सकता है।

''अनादि संबंधे च'' अनादिकाल से तेजस–कार्माण शरीर जुड़ा है। 'च' का मतलब उसकी भी स्थिति–अनुभाग होता है, इसका अध्ययन करते हुये पुरुषार्थ करना चाहिये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''कषायाग्नि से बचें''

08.04.2016 **प्रातः 09:30**

अग्नि का स्वभाव जलाना होता है, उष्णता उसके स्वभाव में है। जल का स्वभाग शीतल होता है, किन्तु जब अग्नि का संयोग जल को मिलता है तो अग्नि जल को तपा देती है। जल षीतल स्वभाव को छोड़कर के उश्ण स्वभाव वाला हो जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अग्नि जलाती है, ईंधन नहीं। जलाने के लिये भी जलने की क्षमता चाहिये, तभी वह जला सकता है। जल अब गरम हो गया–अंगुली डालेंगे तो जल जायेगी। उसी गरम जल को यदि अग्नि पर डालेंगे तो अग्नि बुझ जायेगी किन्तु यदि उस अग्नि को ईंधन मिल गया तो वह जल जायेगा। अग्नि उस जल को जला नहीं सकती स्वयं बुझ गयी। कषाय के कारण हमारी आत्मा जल जाती है। क्षमा, आर्जव आदि भाव नहीं रख पाती। जब भगवान की भक्ति करते हैं उस समय कषाय का अभाव तो नहीं होता पर उस भक्ति भावना से कर्मों को जला दिया

जाता है। कषाय छूटी नहीं—कषाय होते हुये भी भक्ति में वह शक्ति है जो हमारे कर्म जलाने में सक्षम है। प्रभु के प्रति अनुराग रखकर अज्ञान दषा में बांधे कर्मों को जलाने का कर्म कर सकते हैं। जो व्यक्ति जितनी अधिक भक्ति करेगा उसके उतने अधिक कर्म नष्ट होंगे बस युक्ति ठीक हो। हमारे भगवान कुछ देते नहीं, हम चाहते भी नहीं बस हमारे कर्मों के क्षय के कारण हो यही भावना रखते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''आँखें बंद करूं या खोलूँ''

09.04.2016 **प्रातः 09:30**

हमने सोचा आज रविवार कैसे आ गया। रविवार मतलब भीड़। रविवार एक दिन बाद में आने वाला है, आज शनिवार है। आकुलता सब जगह रहती है, भक्ति में भी वो आकर बैठे उससे पहले अपनी जगह रोककर बैठते हैं। फिर उनके सामने ही नाचने लगे। ये भक्त है भक्ति में लगे हैं, हम जो चाहते हैं वो कर रहा है, ऐसा करने से कर्म की निर्जरा ज्यादा होती है। समवशरण में ऐसी आकुलता नहीं होती है। ये सोच—विचार की बात है। उनके चारों दिशा में मुख दिखते हैं, चतुर्मुखी भावों से कल्पना करो। सब लोग भगवान की भक्ति करते हैं किन्तु यदि व्यवस्थित काम करें तो कितनी गुणित क्रम से प्रभावना होगी। उधम न करके मात्र भक्ति करें तो इसमें बहुत रहस्य छिपा है। भगवान की भक्ति में ही ये रहस्य है। आकुलता नहीं होना चाहिये।

यह समझ में आ जाये तो बहुत बड़ा काम कर सकती है। सौधर्म इन्द्र भी सोचता है कि धरती के वासी मेरे से तो बहुत आगे है, इतना ही नहीं एक पूजन करने वाला मेंढक भी भावना से मेरे से भी आगे निकल गया।

जो बंधन है उसे तोड़ने का उपक्रम यही भक्ति है। देवता लोग भी संयम मार्गणा के महत्व को समझते है। अतः जिस ओर आकुलता होनी चाहिये उस ओर भी थोड़ी आकुलता करें। संयम के प्रति आकुलता हो।

आप जाप कर रहे हैं। आँख बंद करके या खोल करके। भजन सुना रहे थे—आँखें बंद करूँ या खोलूँ बस दर्शन दे देना। आपको दर्शन देना ही होगा ये प्रतिज्ञा है हमारी। खोलने से नहीं दिख रहा है तो बंद कर लो और अच्छे से दिखेगा। बड़े बाबा के यहाँ मेला तो ऐसा ही चलेगा। जब जागे तभी सवेरा। हमें अपने भावों की ओर देखना है। अभी तो हालत ऐसी है कि नाच न जाने—आँगन टेड़ा। आलोचना नहीं कर रहा, पर अभी सही भक्ति करना आता ही नहीं है फिर भी आप लोग सराहनीय है कि भक्ति कर रहे हैं

आप लोग चतुर भक्त हैं सपरिवार अड़ोस—पड़ोस के सभी पूरा दमोह आ जाये तो और अच्छा है। निमंत्रण देना पड़ता है। यदि बिना निमंत्रण के देव आ जाये तो और अच्छा है। आप लोग भी कह देते हो कोई प्रबन्ध की चिन्ता मत करियो बस व्यवस्था साथ मे ले आइयो। सब मिलकर एक साथ पूजन करते हैं तो विधान का रूप धारण कर लेता है। वही पूजा रहती है लेकिन विशेषता आ जाती है इन 8—10 दिनों

में। स्वयं पूजन करते हो उसमें उल्लास/उत्साह का भाव रहना चाहिये। दूसरो पूजा करे तो उसे भी अच्छा बताना चाहिये; हम भी आप लोगों की पूजा देखकर एक कार्योत्सर्ग कर लेते हैं। ये बहुत अच्छा है। सम्यकदृष्टि को तो और–और आनंद आना चाहिये। ज्ञान के माध्यम से देखोगे तो और अधिक स्पष्ट दर्शन होंगे, श्रद्धान के आधार पर अतिज्ञान का विशय अमूर्त होता है। ज्ञान सम्यक् है, भगवान अमूर्त है। भगवान दिखे या न दिखे हमारो श्रद्धान तो होगा ही। भावों के द्वारा वेतन बढ़ता है। हमेशा भावों को उत्कृष्ट की ओर ले जाना चाहिये। बच्चों को भी ऐसा ही सिखाना चाहिये।

अनेक व्यक्तियों को सुन–सुनकर भी बात समझ में आ जाती है। श्रद्वान का विषय है। सिद्ध परमेष्ठी के भी दर्शन हो जाते हैं– आँखें बंद करूँ या खोलूं बस दर्शन दे देना। दर्शन दे देना नहीं दर्शन ले लेना।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''अगरबत्ती की खुशबु''

10.04.2016 **प्रातः 09:30**

आज रविवार है, फिर भी ध्यान केन्द्रित करें। आपने चंदन को घिसकर ललाट पर लगा लिया, आपको शीतलता उससे मिली। इस शीतलता का अनुभव आप तक रहा, किन्तु गंध तो कई व्यक्ति ले रहे हैं ऐसा तो है नहीं कि ऐ गंध सुंघो नहीं अब उस चंदन को आपने जल में घोल दिया आते–जाते लोग उसकी सुगंध लेने लगे। धार्मिक दृष्टि से इसका वितरण और अधिक कर सकते हैं। एक अगरबत्ती ली एक बड़े भवन के कोने में उसे लगा दी उसका फैलाव पूरे में हो गये। भवन का प्रत्येक व्यक्ति को वह सुगन्ध रोम–रोम में जाकर अपना प्रभाव दिखा रही है। इसको बोलते हैं अविभागी प्रतिच्छेदो का विस्तार। शक्ति इतनी रहती है किन्तु उसका उपयोग नहीं कर सकते हैं। आचार्य कहते हैं हम भक्ति के बल से अपने अविभागी प्रतिच्छेदों को इतना फैलायें कि ऊपर के देव भी नाचते हुये यहाँ तक आ जायें। आप लोग कंजूस हो अपनी खुशबु स्वयं ही लेना चाहते हो। अब इसे उदारता के साथ फैलाने का प्रयास करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''णमोकार मंत्र है स्वाध्याय–ध्यान''

11.04.2016 **प्रातः 09:30**

ध्यान के माध्यम से कर्मों की निर्जरा होती है। इसलिये ध्यान का निषेध नहीं किया है। शिष्य ने कहा फिर ग्रन्थ में केवल ध्यान का ही वर्णन करना चाहिये। गुरु ने कहा ध्यान बहुत गरिष्ठ है। और जो गरिष्ठ होता है उसे हर कोई पचा नहीं सकता है। आप लोग सुन रहे हो हाँ इसलिये दूध में पानी मिलाकर लेते हैं। अथवा पानी में दूध मिलाकर लेते हैं। ध्यान बहुत गरिष्ठ है, उसी–उसी को खा नहीं सकते हैं। घी पौष्टिक होता है, पाचक भी है एवं स्वास्थ्यवर्धक भी है पर फिर भी मात्र घी ही घी नहीं खा सकते हैं

पहलवान से पूछा इतना बलिष्ठ शरीर कैसे बना–घी खाने से। मात्र घी से नहीं घी के पदार्थ खाने से ऐसा शरीर बनां इसी तरह मोक्षमार्ग में भी मात्र ध्यान ही नहीं ध्यान के साथ और भी पदार्थ जरूरी है।

श्रावकों की अपेक्षा ध्यान की अपेक्षा दान करना, पूजा करना, स्वाध्याय करना आदि भी बताया है। पहलवान की जठराग्नि तेज होते हुये भी केवल घी ही घी नहीं पचा सकता। इसी तरह मोक्षमार्ग में ध्यान–ध्यान की रट लगाने वाला कब आर्तध्यान कर लेगा पता नहीं। कृत्रिक उपयोग न करने वालों के लिये केवल ध्यान मोक्षमार्ग का कारण नहीं बताया।

चरित्र के प्रकरण को बताते हुये आचार्य उमास्वामी महाराज ने गुप्ति–समीति आदि को भी बताया। कुछ लोग स्वाध्याय को ही मुख्य–कुछ लोग पूजा को ही मुख्य कहते हैं दोनों ही ठीक नहीं। कुछ लोग जाप करते हैं, जाप में ध्यान भी होता है, स्वाध्याय भी होता है, भक्ति भी होती है। हां णमोकार मंत्र का जाप भी स्वाध्याय हम नहीं आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है। वो लिख रहे है जो जपादि अरहंताणं..... जो अरहंत भगवान को जानता है कैसे जानेगा– देव दर्शन करता है। देवदर्शन में भी स्वाध्याय हो रहा है। जो नहीं मानता हमारे पास ले आना, ज्यादा समय लगेगा मात्र 5 मिनिट में चिकित्सा कर देंगे। दत्वे ही गुण पूज्जतेहि...। केवली श्रुतकेवली के पादमूल में सम्यग्दर्शन होता है। पंच परमेष्ठी के आराधना से क्षायिक सम्यक्दर्शन होता है। स्वास्ध्याय को मात्र किताब तक सीमित नहीं रखना चाहिये बहुमुखी आयाम होना चाहिये समय आपके पास है ही नहीं हमारे पास तो संयम रहता ही नहीं। यदि कोई समय मांगता है तो मै कहता हूँ यदि 1 घण्टा चाहिये तो पहले में 2 घण्टा दे दो हम उसमें से 1 घण्टा दे देंगे।

आचार्यों की बात याद रखना उन्होंने यही उपक्रम दिया है। स्वाध्याय करो पर पर पूजन दर्शन भक्ति भी करो। ध्यान भी करो जाप भी करो। मंत्र चिंतन आदि के माध्यम से भी कर्म निर्जरा होती है। स्वाध्याय प्रेमियो सुनो श्रावक का क्या कर्त्तव्य है उन सबका प्रयोग यथायोग्य करना चाहिये। केवल घी–घी नहीं खाइयो। रोटी में ऊपर लगाकर अधिक मात्रा में खा सकते हैं, स्वाध्याय के माध्यम से कर्म निर्जरा तभी होगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''क्षमता का करें विकास''

12.04.2016 **प्रातः 09:30**

हम ये जानते हैं कि दर्पण है, दर्पण के सामने अनेक प्रकार के पदार्थ दिख रहे हैं, सारे के सारे पदार्थ इसमें झलक रहे हैं। पदार्थ–पदार्थ में रहते हुये भी दर्पण–दर्पण में रहते हुए भी इस प्रकार की झलकन है। दर्पण में कोई बाधा नहीं हो रही है, पदार्थ में भी कोई गड़बड़ी (कमी–वेसी) नहीं हो रही है। छोटा–बड़ा पदार्थ यहाँ–वहाँ नहीं हो रहा है, दर्पण में भी कोई विकार नहीं होता है।

इसी प्रकार केवली भगवान है, उनके इर्द–गिर्द जीव रह रहे हैं, फिर उनमें किसी प्रकार का व्यवधान नहीं हो रहा है, व्यवधान क्यों नहीं हो रहे हैं ये बहुत बड़ा प्रश्न है। हम लोग एक–दूसरे है व्यवधातित

(बाधित) हैं। होते हैं। बहुत सारे प्रश्न होते हुये भी उनके पास शांति है, हमें उनके पास जाने से हमें अशान्ति होती है। अपनी मान्यता ही हमने ऐसी बना रखी है, इस कारण आकुलता होती रहती है। महाराज ऐसी कौनसी साधना है जो प्रभु की भांति हम भी बिना आकुलता के रह पायें। आप भी कर सकते हैं उन जैसी साधना। समझ में सब आता है, बस थोड़ा सोच–विचारकर करो। आपके घर में मेहमान आ जाते हैं आपको अच्छा लगता है। बारात आ जाये तो वह भी अच्छी लगती है। पर वह बारात 2 दिन या 2 घण्टे के लिये और ज्यादा समय के लिये रह जाये तो सिर दर्द बन जाते हैं। 2 दिन कुछ नहीं हुआ अब सिर में दर्द होने लगा इसलिये बाराती आने चाहिये पर मेहमान बनकर नहीं। मेहमान से ज्यादा मूल्य है बारात का फिर भी थोड़ी देर के लिये ही अच्छी लगती। दामाद आदि भी नियन्त्रण में रहते हैं उस बारात के आगे। मुख्य भी हो या सामान्य भी हो उनके सामने हमेशा बारात बनी रहती है, फिर भी सिर दर्द नहीं ये साधना का फल है।

उनके सिर है या नहीं। उनके ज्ञान में सब–कुछ (द्रव्य/पर्याय, मुख्य–गौण) झलक रहा है, इसको बोलते हैं वीतरागता/हमारे प्रभु वीतराग हैं, यह प्रमाण है। आप लोग भक्त कहलाते हो, सहनशीलता आनी चाहिये। उनके पास अनंत शक्ति है, भक्त के पास थोड़ी बहुत युक्ति तो होना ही चाहिये। हम आये हैं। समय से सब काम होगा आकुलता करने से काम नहीं होता समय पर सब होता रहता है। विशेष व्यक्ति के बाराती बनकर आये हो, तीन लोक के नाथ के बाराती, सामान्य तो हो नहीं पहचानो अपनी शक्ति को। प्रभु का क्या महत्व है, विज्ञापन के रूप में आपको बताते रहना चाहिये। हम तो वीतरागी के भक्त हैं। अपनी सोच अपने विचारों में यह धारा रखेंगे तो इन विचारों से भी आप द्वारा प्रभावना हो जाती ह। धीरे–धीरे सीखते चले जाओ एक समय ऐसा होता है जब स्वभाव का ज्ञान हो जाता है। प्रभु की क्षमता को पहचानो, उनकी विशालता एवं उनकी उदारता की जानो जब हम ये जान जाते हैं तो धीरे–धीरे अपनी शक्ति को जाग्रत कर सकते हैं। अभी वह शक्ति सोई हुयी है, इसीलिये हम कहते हैं, ''वंदे तद् गुण लब्धये''। ज्ञान हमारे पास है तो क्षमता भी हमारे पास है, उस क्षमता को विकसित करने की आवश्यकता है। विज्ञान में भी इसे घटित कर सकते हैं–औषध की क्षमता होती है रोग को दूर करने की, इसी तरह रोगी में भी क्षमता है रोग को सहन करने की। खाते जाओ–खाते जाओ डॉक्टर ये ही कहता है मेरी दवा खाते जाओ। ये गलत है।

औषध की मात्रा कम करो तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं। औषध को भोजन की तरह खा रहे हैं क्या ठीक होंगे एक छोटे बच्चे की तरह खाते जा रहे हैं। जैसे बच्चा जैसे–तैसे खा लेता है मुंह–हाथ सब में छपा रहा है आत तो बड़े हो पूंछपांछ कर बाहर जाओ अन्यथा लोग हसेंगे। धीरे–धीरे ही क्षमता आती है, प्रयोग करने से ही क्षमता बढ़ती है। एक विज्ञान का विद्यार्थी प्रयोगशाला में जाकर प्रयोग करता है। वही पढ़कर एवं सुनकर भी पढ़ाई करता है। प्रयोग जिसमें किया उसमें शत–प्रतिशत नम्बर लाता है जबकि सुनने वाले विषय में 33 नं. से तो चालु होता है।

प्रयोगशाला में विद्यार्थी को कुछ दिक्कत (कठिनाई) होती है पढ़ने–सुनने में कोइ दिक्कत नहीं होती है। पढ़ाई का समय अधिकतम 45 से 50 मिनिट रहता है जब कि प्रयोगशाला में 2–4 घण्टे क्या ज्यादा भी

लग जाते हैं। विद्यालय के विद्यार्थी होते हुये भी प्रयोगशाला के प्रयोगार्थी बने। जल्दी न करियो। छोटे–बच्चों को जल्दी छोड़ना पड़ता है, बड़े बच्चों को यदि बाहर ताला भी लगा दे तो वे घण्टो भीतर ही भीतर प्रयोगशाला में अपना काम करते रहेंगे। इसी तरह पुराने भक्तों को काम करने रहना चाहिये प्रयोगधर्मी बनना चाहिये सभी को।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''एक्शन नहीं डाइरेक्शन देखें''

13.04.2016 **प्रातः 09:30**

सब लोगों की तरफ से यही कहा जाता है–महाराज चाहते हुये भी हमारा मन नहीं मानता है। यह पूरे विश्व की समस्या है। देव–दानव, मनुष्य–तिर्यंच, पशु–पक्षी सभी गतियों में चाहे पढ़ा हो या अपढ़ हो सबकी यह समस्या है। विश्व में रहकर समस्या है–समाधान हम कैसे दें?

ये मान्यता के ऊपर है। आप लोग मानने के लिये तैयार हो जाये तो इस समस्या का समाधन हो सकता है। मैं मानूं समस्या आपकी समाधान हो ऐसा तीन काल में संभव है ही नहीं। आपके घर में भी यदि दो भाई हैं तो जो मानेगा उसी की समस्या ठीक हो सकती है। यह कतई संभव नहीं की माने कोई और फल किसी दूसरे को मिले। मन नहीं मानता है तो समस्या खड़ी ही रहेगी। हर बात को तो आप मनवाने में लग जाते हैं। उदाहरण बताते हैं, एक व्यक्ति ऊपर बैठा है मचान के ऊपर। बैठे–बैठे मनोरंजन के रूप में कुत्ते के ऊपर एक पत्थर (कंकड़) फेंक दिया। ज्यों ही पत्थर दूर गया कुत्ते ने उसे देखा वह पत्थर की ओर लपका। ऊपर बैठे व्यक्ति ने 2–4 पत्थर ओर मारे कुत्ता उनको पकड़ने दौड़ा।

इसके उपरांत एक शेर आया। उसने सोचा ये बड़ा कुत्ता है, ऐसा ही करता होगा। उसको भी पत्थर मार दिया। वह पत्थर की ओर नहीं देखा। उसने युं–युं (इधर–उधर) देखा। वह ऊपर मचान पर ऐसा मानो नीचे गिरने वाला है। उसने (शेर) ऊपर की ओर देखा वह व्यक्ति अब तो ये ऊपर आ जायेगा। वह भी तिर्यंच, यह भी तिर्यंच है। वह श्वान पत्थर की ओर देखता है यह शेर पत्थर कहाँ से आया उस ओर देखता है, पत्थर की ओर नहीं देखता है। वह डायरेक्शन (दिशा) को देखता है, आप एक्शन (एक्सन) को देख रहे हैं। भारतीय संस्कृति एवं विदेशी संस्कृति में यही मूल अंतर है। भारत वाले भी अब विदेश की ओर देखने लगे हैं अपनी संस्कृति भूल रहे हैं।

श्वान की भांति पत्थर को पकड़ने के लिये दौड़ रहे हैं। मूल की ओर देखें। डायरेक्टशन को देखें। किस तरफ से यह आया उसी ओर ध्यान दें। दुःख–सुख आदि की अनुभूति करते रहते हो। सुख की अनुभूति हो तो हमने किया, रात के 12 बजे भी कोई पूछे तो यही जवाब मिलेगा की हमने किया। यदि काम बिगड़ गया तो तुमने किया। हमने कितना परिश्रम किया तुमने तो गुड़–गोबर कर दिया। मटियामेट कर दिया। दोनों बात है पर इस तरह का विभाजन क्यों? सावधानी से देख लो।

ध्वनि को पकड़ना चाहिये प्रतिध्वनि को नहीं पकड़ना चाहिये। ध्वनि कहीं से भी निकले प्रतिध्वनि

टकराकर ही आयेगी। आप लोग आकाशवाणी सुनते हैं। आकाश में वाणी नहीं होती। हाँ आकाशवाणी से प्रसारित की जाती है। एक–एक शब्द स्टेशन से प्रतिध्वनि के रूप में प्रसारित हो रहे हैं। आकाशवाणी ऐसा सुनने में आता है। वाणी ठीक है, फिर आकाश क्यों लगाया और कोई ध्वनि नहीं आकाश में मात्र यही ध्वनि इसलिये ऐसा लगाया।

आप लोग जिस निमित्त से मिलता है, उस पर ही टूट जाते हो। अच्छा हुआ तो हमारे लड़के ने किया बुरा हुआ तो पड़ोस के लड़के ने किया। ये धारणा बना ली है, यही गलत धारणा है। भगवान की वाणी मानकर/आगम की बात मानकर जो सही श्रद्धान रखता है वही सम्यक्दृष्टि होता है। मुझे सुख–दुख मिलेगा अपने कर्मों के उदय से मिलेगा। दूसरा मेरा कुछ भी नहीं कर सकता। ये जो दिख रहा है, सारी की सारी नाटक मंडली है। हम तुम्हें ऐसा कर देंगे। ध्वनि इधर से आ रही है। अभिव्यक्ति हाथ–पाँव की कर रहा है। हम गाफिल हो रहे हैं। दुःख का मुख्य कारण यही है। अपनी की गयी गलती या भूल को याद नहीं करेंगे।

ज्ञानी भी गाफिल हो जाता है। मन मानता ही नहीं। अभी तक तो मन की बात मानते रहे। मन की बात तो रात के 12 बजे भी मान लेता है। वह कहे की सोना नहीं तो अब सोयेगा नहीं। उसके हरेक इशारे का पालन करता रहता है। मन का नौकर है या मन नौकर है सोचने की बात है।

सेठ जी आप नौकर हैं कोई ऐसा कहे तो कैसा लगेगा। आप नौकर से भी गये बीते हैं छोटी–छोटी बात को मानने के लिये नौकरी करने के लिये तैयार हो जाते हैं। मोक्षमार्ग में कृपाकर ऐसा व्यक्ति न आये। आ भी जायेगा तो वह फैल हो जायेगा। बहुत जल्दी पलट जाता है वह मन। बोलते हैं न कि मनःस्थिति ठीक नहीं इधर कैसे आ गये आप लोग बड़े बाबा के पास। यहाँ तो कोई स्टेशन भी नहीं है। मन को वश में करने के लिये आये हैं। आचार्य श्री मन के वशीभूत होकर आये हैं ऐसा तो नहीं है।

दवाई है तो हमारे पास है उस मन को वश में करने के लिये। आप लोग उसका पालन करेंगे तो गारन्टी से रोग ठीक हो सकता है। सब कुछ छोड़ना होगां अनुपात से नहीं छोड़ना होगा। आपके पास जितना है वह सब कुछ त्यागेंगे तभी आनंद का अनुभव होगा। आप यदि तैयार भी हो गये तो घर वाले तैयार नहीं होंगे। मेरी वजह से ही सब काम हो रहे हैं यही मिथ्या भान्ति है। जिसका मन बिगड़ जाता है, वह पागल कहलाता है तथा जो मन को वश में कर लेता है वह महामना कहलाता है। आप लोग उदाहरण याद रखना श्वान एवं शेर का। हम लोगों की बात नहीं कही महाराज ने मन की बात कही थी। पागल होना पड़ता है, दुनिया के पागलपन से दूर होने के लिये, तैयार हो तो देख लो।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दहाड़ो सिंह की तरह''

14.04.2016 **प्रातः 09:30**

आप लोग जानते हैं जंगल का राजा/पशुओं का राजा शेर हुआ करता है। सिंह के मात्र दहाड़ने से ही पूरा जंगल क्षुब्द हो जाता है। सब लोग अपने–अपने में लुक–छिप जाते हैं। यह सिंह का अपना प्रभुत्व रहता है। एक वह सिंह था जो जंगल में ऐसा कार्य करता था जो अनुचित था। एक बार उस सिंह ने ऐसा कार्य कर दिया तानाशाही। दादागिरी बुंदेलखण्ड में चौधराहट कहते हैं।

जंगल के अन्य सभी साथियों ने कहा जवाब तो देना चाहिये। शुभस्य शीघ्रं। वहाँ एक बड़ा समूह था जंगली भैंसों का। उनकी टोली चल पड़ी। 50 से भी अधिक में थे चार रास्ते बना लिये उन्होंने। एक–एक टोली चारों ओर से आकर उसे घेर लिया। राजा माना जाने वाला वह शेर घिर गया। राजा का सब सम्मान करते हैं पर वह तानाशाह जो हो गया था। युक्ति तो थी उसके पास, जिस पेड़ के नीचे वह बैठा था उसी पेड़ पर चढ़ गया। चारों ओर देखता है, सब ओर से आक्रमण है। सबकी आँखें लाल, रात में तो चमकती ही थी दिन में भी चमक रही हैं। चौधरी सोचता है कब तक चिपका रहूंगा, अब सारी चौधराहट समाप्त हो गयी, वे घण्टों तक नीचे बैठे रहे। चित्र देखा था मैने एक पुस्तक में। ऐसी स्थिति में ताकत वाला भी हार जाता है।

जंगल में राजा के साथ रहते हैं, एकता का ऐसा प्रवाह था, थोड़ी भी गड़बड़ी कर दी तो जवाब मिलेगा। वह छलांग लगाकर भाग गया, ये लोग भी पीछे–पीछे भाग रहे थे। संसार में जब स्वभाव का भूल जाते हैं तो हार ही हार है। आप लोग सिंह तो हैं, पर अपने स्वभाव को भूले हुये हैं। अपनी चौधराहट को कम कर दो। आत्मा को वैभव, आत्मा की शक्ति आत्मा के अस्तित्व को पहचानो जो सबसे भिन्न है। सब द्रव्य अपने–अपने में है पर ये आतमराम से ही पहचान सकते हैं। पर घबराहट हो रही है सिंह की पर्याय में भी। अरे दहाड़ लगाना था, भूल गया अपनी आत्मा को। बहुत हो गया राज कमी तिर्यंच वन मनुष्य पर कभी मनुष्य बन तिर्यंच पर। प्रतिशोध की ही भावना रहती है। यदि सुरक्षा ही हो दूसरों को तो आपको सुरक्षा मिलती है। सिंह तो कमजोर होता है, हाथी के सामने आकर वह इधर–उधर देखता है उसकी सूंड़ से घबराता है। युक्ति से वह उस पर बैठकर सिर को फाड़ देता है। सूंड़ तो उसकी जेसीबी जैसी होती है, उसको चलाने वाला व्यक्ति भी होशियार होता है।

आत्मा को भूलने के कारण ऐसा हो रहा है। मोह राजा बनकर बैठा है जबकि मोह आत्मशक्ति से तो बहुत कमजोर होता है। प्रत्येक क्षण ऐसी दयनीय दशा में फंसा हुआ है। नरकों में भी। तिर्यंचों में भी ऐसी ही दशा होती है। एक–दूसरे से मोह की प्रतिस्पर्धा के कारण दुःखी हो रहा है। अब यह सोचना है कि पूर्व में किया गया पुण्य का कुछ उदय में आया है। ऊपर उठने का/ जानने का कुछ साधन उपलब्ध हो सका है, वह ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान है। हमारी दशा भौतिक/आर्थिक दृष्टि से अच्छी होने पर भी सम्यग्ज्ञान के अभाव में हम संभाल नहीं पायेंगे।

यदि देवशास्त्र गुरू के चरणों में भी आ जायेंगे तो भी सम्यग्ज्ञान एवं सही आचरण के अभाव में कुछ नहीं हो पायेगा। बेचारा तो है ही बड़ी दयनीय दशा है। हमने ऐसे–ऐसे कर्म बांधे हैं जो दया नहीं करेंगे, क्योंकि वो जड़ है। मोहनीय कर्म पर दया कर दे वो भी नहीं कर सकते क्योंकि उसके पास सम्यग्ज्ञान नहीं है। जो अपने ज्ञान को सही रखता है वही वश में कर सकता है। जो शराब पीता है वही गहलभाव में

आता है। शराब अपने आप गले तक नहीं आती। यदि संकल्प ले लो तो जो कर्म अज्ञान दशा में बांधे है वहीं ज्ञान दशा में दूर हो जाते हैं। फेंक सकते हैं उस शराब को थूंक सकते हो। संकल्प लेने पर ऐसा होता है। आप लोग सुन रहे हो–हव। अब तो सब बोलने लगे–हव। राजस्थान वाले भी बोलने लगे। उठ–बैठ, इते–उते की बातें छोड़ो।

साहस करे अपनी पर्याय की सुधली है। उस आतमराम की शक्ति पर आस्था/श्रद्धान करें। वह कहीं भी चले जायें आपके काम में आयेगी, मिट नहीं सकती। हम उस शक्ति को नहीं पहचानने से ही वैभव/आनंद से वंचित हैं। हम सिंह नहीं नरसिंह बने। नरसिंह का अपना वैभव है उसे बाद में बतायेंगे। आज इतना ही। कम समय में ये ऐसा औषध है जो एक गोली ही पर्याप्त है। आधी गोली भी तोड़कर दी जाती है। हाईडोज है हमारा इस समय का उपदेश।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दवाई नहीं औषध लो''

15.04.2016 **प्रातः 09:15**

इस वक्त कम समय में महत्वपूर्ण बात को संक्षेप करके आप तक देता हूँ। रविवार को तो विस्तार से मिल जाता है। आप लोगों के पास समय नहीं है और हमारे पास तो समय होता ही नहीं है। जो बहुत समय में होनेवाला काम यदि कम समय में हो सके तो कर लेना चाहिये।

आप लोग परिचित होंगे गाँवों में एक भीलवाँ नाम का पदार्थ जो काला–काला होता है। एसिड होता है, जो जलाने की क्षमता रखता है। गाँवों में जहाँ वैद्य/डॉक्टर लोग नहीं पहुंच पाते–वहाँ भीलवाँ रामबाण औषधी की तरह काम करता है। राम का वाण नहीं– रामबाण का मतलब अचूक औषधी है। बच्चो या अन्य किसी को जब इमली/खटाई खाने से या पानी पीने से खांसी लग जाती है तो बस भीलवाँ ले आओ। इसे खा नहीं सकते अपितु जहाँ कहीं भी लग जाये तो जला देता है। उसे भीतर पहुँचाना है पर कैसे? शक्कर या गुड़ के बीच में इसे तपाकर एक या दो बूँद टपका देते हैं। बस वो 2 बूँद उस मीठे के बीच में लेकर शरीर में पहुंच जाती है। खाते ही जो खांसी थी समाप्त हो जाती है। अब शरीर में तिल्ली, लिवर, अमाशय आदि–आदि अनेक प्रकार की संरचना है, जहाँ कभी धूप भी नहीं पहुंचती, उन कोमल अंगों को वह औषधी कभी क्षति नहीं पहुंचाती है।

''दवाई वही होती है जो विकृति को दूर करे एवं संस्कृति को सुरक्षित रखें।'' आप लोग इस बात को याद रखना है। वह लड़का छोटा है सुकुमाल है, किन्तु वह दवाई रामबाण औषध के काम आती है। 1–2 बूँद ले ली उतने में ही सब ठीकठाक हो जाता है। इसके उपरांत भी पुण्य–पाप काम करते हैं। इसका मतलब है भगवान की भकित करने से पाप का ही क्षय होता है, जो लोग पुण्य का क्षय भी कहते हैं उनको भीलवाँ का परिचय कराओ। भगवान की भक्ति से ऐसा पुण्य संचय होता है उस भक्ति से असंख्यातगुणी निर्जरा होती है। ग्रन्थों में लिखा है सम्यग्दृष्टि को अच्छे–अच्छे क्वालिटी का ही पुण्य बंध जब तक मुक्ति नहीं मिलेगी तब तक होता है।

आपका सुनने का कर्त्तव्य है, हमारा सुनाने का काम है। विश्वास करने का आपका काम है। हमें तो वेतन मिल ही रहा है। भक्ति से पाप का क्षय एवं अक्षयपुण्य का संग्रह होता है। आप लोग देशी दवाई पर विश्वास नहीं रखते। जो रोग को दबा दे वह दवाई है, हमारे पास औषध होती है वह शोधित कर देती है। हमारे पास वैद्य जी लोग आते हैं, नुस्खे होते हैं जो दोनों तरफ से काम करते है।। (पाप का क्षय–पुण्य का संग्रह) बंध होते हुये भी पाप का क्षय कर देता है। पथ्यरूप में लेने से शक्ति आती है। आलस्य दूर हो जाता है। पुण्य के उदय में ही अच्छे कार्य कर सकते हैं। अतः पुण्य का हेय नहीं समझना चाहिये, हाँ पुण्य के उदय में जो सामग्री मिलती है, उसके प्रति निरिहता रहनी चाहिये। पाँच मिनिट हम वर्षों की खांसी दूर कर देते हैं। जो नहीं आ पाये उनको भी बता देना। हमारा भीलवाँ का उदाहरण याद रखना।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''विश्वास का हो अहसास''

16.04.2016 **प्रातः 09:15**

हम जिसको उपेक्षित करते हैं, कालान्तर में क्या तत्काल में फल देखने को मिलते हैं। जिसकी उपेक्षा की थी उसका परिचय एहसास होता है। कभी–कभी अहसास के अभाव में विश्वास है या नहीं ऐसा भी ज्ञात होता है। जब अहसास होता है तो सामने देखने में आता है। ये तो भूमिका हुई। अब उदाहरण से समझ में अच्छी तरह आ जायेगा।

माँ अपना काम कर रही है, लड़का उसको कोई काम नहीं है, वह बाधा डाल रहा है, मनोरंजन कर रहा है। माँ जानती है कि ये मनोरंजन कर रहा है या ज्यादा मनोरंजन कर रहा है। वह बार–बार दीपक की ओर जा रहा है, माँ से कुछ माँग रहा है, माँ कहती है हम दे देंगे, समय पर दे देंगे। पर उस लड़के को विश्वास नहीं है। अहसास करो। जो व्यक्ति देने की क्षमता नहीं रखता उस पर विश्वास कैसे करें। अब वह माँ की आँख में धूल डालकर अर्थात उसके इधर–उधर देखते ही लपकर दीपक को पकड़ लिया। ''विश्वास को अहसास के रूप में परिवर्तन करना अनिवार्य है।'' अब माँ कहती है (चिढ़ाकर) ले–ले बेटा ले–ले बेटा। वह लड़का सोचता है– वह भयानक चीज है दिखती तो अच्छी है। उसे हाथ नहीं लगाते हैं, हाँ उससे रसोई बना सकते हैं। फिर भी विश्वास करना जल्दी नहीं करना अन्यथा गड़बड़ ही होगा।

जो दिखता नहीं उस पर विश्वास करना कठिन होता है। भविष्य में है उस पर विश्वास करना चाहिये। जो अनुभवी है उन पर विश्वास करो। हाँ विश्वास करने हेतु विश्वसनीय हो। भले ही जो अनुभवी है अंगुठा छाप ही क्यों न हो आप बहुत पढ़े लिखे क्यों न हो पर विश्वास करना जरूरी है।

जिस क्षेत्र में जाना है उस क्षेत्र का उसको वर्षों का अनुभव है, अब वह पढ़ा लिखा हो या न हो, उसे मानन चाहिये। विश्वास उस पर करना होगा, मोक्षमार्ग में ऐसा ही होता है। ये तो बहुत टेड़ा काम है, हमने सीधा कब कहा। बहुत कठिनाई से विश्वास हो पाता है। अब वो लड़का बार–बार कहेगा ये देखो ये अनुभव है। आप लोग श्रद्धान के स्थान पर श्रद्धान रखो जब तक श्रद्धान न हो तो कहो ''ऐ इते बैठ जा''।

अनुभव प्राप्त करना है तो करो। आत्मा में अनंत ज्ञान है पर ध्यान रखना दीपक के द्वारा अंगुलियाँ जल सकती है। जिन्होंने अनुभव से ऐसा जान लिया है उनके प्रति समर्पित हो कर चलो।

आज का युग मात्र वर्तमान में देख रहा है। अतीत का पता नहीं अनागत का भी पता नहीं है। एक बीता हुआ कल है, एक आने वाला कल है इनका ध्यान न रख केवल वर्तमान को देखने वाले के जीवन में कलकल है। भविष्य के विषय में पता नहीं, अतीत के बारे में तो ज्ञान है नहीं वो लापता है, पता तो आज का है। अंगुली जलेगी—अब दूसरों को कहते फिरो। एक व्यक्ति विश्वास नहीं कर रहा है, दूसरा व्यक्ति अनुभव कर रहा है। विश्वास के लिये भी विश्वास दिलाना जरूरी है। स्वयं पहले विश्वास को जीतो। ज्ञान एवं मान इसमें व्यवधान उपस्थित कर देते हैं। आज इतना ही। आप स्वयं लाइन में नहीं तो आपके लड़के—बच्चे कैसे लाइन में होंगे। हम इस चक्कर में पड़ना नहीं चाहते। आरती/अग्नि को छूना नहीं है इसमें राज छिपा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''पारणा से महत्वपूर्ण धारणा''

17.04.2016 **प्रातः 09:15**

एक व्यक्ति बिल्कुल स्वस्थ, नाड़ी की धड़कन, श्वांस आदि ठीक है। शरीर—वचन—मन सभी स्वामित है। वह अपने ही घर की एक मंजिल को पार करता हुआ जा रहा है। कितनी मंजिल उसे मालूम है। ऊपर—ऊपर जाने पर श्वांस/वायु ताजा मिल रहे हैं। जाता—जाता ऊपर जाकर खड़ा होने का स्थान बनाकर खड़ा होकर निहारता है प्राकृतिक दृश्य को। इसी बीच ऐसा अहसास हुआ कि उसको किसी ने धक्का दे दिया। कौन व्यक्ति दिया पता नहीं आपको तो धक्का नहीं लग रहा। वह नीचे की ओर लुड़क गया, वह नीचे आकर गिर गया। बचने का कोई सवाल ही नहीं क्योंकि ऊँचाई काफी थी। नाड़ी आदि सब बंद हो चुकी थी वह मर चुका था।

किस अवयव को धक्का लगने से इसका मरण हुआ। शरीर का कोई भी पार्ट क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। एक पार्ट जिसे मन/हार्ट बोलते हैं, उसमें भी क्षति नहीं पहुँची, उसमें धारणा ये हो गयी कि अब मैं बच नहीं सकता। गया। धारणा के माध्यम से जाना। आपका शरीर जो पोद्गलिक है, विचार से धारणा से आयु की उदीरणा की एवं अन्तमुहूर्त में ही काम तमाम हो गया। इसलिये आप लोग शरीर के साथ—साथ हमेशा मानसिक संतुलन बनाये रखो। ये सबसे महत्वपूर्ण है। आयु को प्राण भी कहते हैं। शरीर को मोटा बनाये ये महत्वपूर्ण नहीं महत्वपूर्ण यह है कि आप अपनी अवधारणा सही बनाये रखें। तरह—तरह की ताजा—ताजा तरकारियाँ होती है, उनहीं की तरह ताजा—ताजा अवधारणा बनाये रखो। अपने शरीर को नहीं आयु कर्म की उदीरणा को बचाना जरूरी है। पारणा के पूर्व धारणा होती है, धारणा पक्की रहती है तो सही बात है कि पारणा भी पक्की होगी। धारणा के कारण वह तत्व अपने आप आते ही रहते हैं। अपने आपको कम न आँको शक्ति अपार है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''बिन मर्यादा विश्वास कैसा''

18.04.2016 **प्रातः 09:30**

हम लोग प्रायः कर श्रद्वान उस पर ही करते है जिसमें सुख निहित है। केवल विश्वास मात्र से काम नहीं होता–पुरुषार्थ भी आवश्यक है। सामने वाले ने विश्वास दिलाया–यह मान्यता पर आधारित है। अब शेष समीचिन पुरुषार्थ भी अपेक्षित है तभी विश्वास कर सकते हैं। इसे उदाहरण लेकर समझते हैं।

किसान ने अपने बेटे से कहा। ये बीज है, इसे बोया जाता है, 4–5 महीने में यह फलता है और हजारों गुना हो जाता है। उसे पिताजी पर पूरा विश्वास था। बीज लिया और बो दिया। विश्वास था फिर भी 4–5 बार उस बीच को निकालकर देखने की चेष्टा की जो बोया था। कैसी प्रक्रिया होती है यह जिज्ञासा थी। पिताजी को मालूम पड़ा तो कहा जाओ बीज अंकुरित हुआ कि नहीं, जैसा होता है बेटा पहले ही कह देता है ये काम तो हमने पहले ही कर दिया है। उस कृषक–पुत्र ने कहा मैं तो दिन में 2–3 बार देखता हूँ अभी नहीं हुआ। किसान ने कहा कि हमें क्या मालूम था कि तुम इस प्रकार का लड़कपन करते हो, बहुत गहरी बात है इसमें।

विश्वास तो था पर ठीक से क्रियान्वयन नहीं जानता था। देखोगे तो वह बीज तीन काल में अंकुरित नहीं होगा। जब भी उगेगा वह अपनी मर्यादा में ही होगा। यह मर्यादा ही हमें चारित्र की ओर आकृष्ट करती है। पिताजी का अनुभव है, यह विश्वास होना चाहिये, मर्यादा चरित्र को पुष्ट करती है। इसे हवा नहीं लगनी चाहिये। मिट्टी का ऊपर का आवरण हो, बीज भीतर हो, मिट्टी गीली हो, ऊपर धूप हो तब जाकर हजारों की फसल लेकर आने वाला वह पौधा खड़ा हो जाता है। जो श्रद्वान–श्रद्वान चिल्ला रहा है, उसके सामने यह प्रश्न खड़ा हो जाता है, बीज तो बोया नहीं देख और रहा है। आज तत्व ज्ञान मात्र शिविरों तक सीमित हो गया है। उसके विश्वास के सामने दूसरों को विश्वास करने में धैर्य निर्धारण करना पड़ेगा। आपके विश्वास के बारे में थोड़ा सा संकोच सा लगता है। ये बात अपने बच्चों के सामने कहोगे तो क्या प्रभाव पड़ेगा। मर्यादा के अभाव में दोनों के ऊपर ही प्रभाव पड़ रहा है। केवल श्रद्वान के भरोसे हम कभी भी सफल नहीं होंगे। मर्यादा का ध्यान रखना मोक्षमार्ग में जरूरी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''पूर्णमासी का चन्द्रमा''

19.04.2016 **प्रातः 09:15**

एक वर्ष में 12 पूर्णिमा एवं 12 अमावस्या आती है। जिस पक्ष के अंत में अमावस्या आती है वह बदी पक्ष कहलाता है। जिसमें पूर्णिमा वह शुक्ल पक्ष कहलाता है। अब शुक्ल पक्ष की बात को लेकर चलते हैं। अमावस्या के दूसरे दिने से शुक्लपक्ष लगता है, चन्द्रमा उदय को प्राप्त होता है। एक–एक कला को पूर्ण करते चला जाता है, पूर्णिमा को पूर्ण चाँदनी होती है। एक–एक पँखुड़ी के माध्यम से कमल खिलता जाता है। चन्द्रमा एक–एक दिन में अपनी कलाओं को खोलता जाता है, एक पक्ष होने पर संपूर्ण कलायें खोल देता है, सफेद–झक रहती है। रात में बच्चे लोग भी उस चांदनी में खेलते हैं। पहले दिन भी कला है और

पक्ष के बाद भी कला है पर जब पूर्णिमा पर पूर्णता प्राप्त करता है तभी समुद्र उमड़ता है। यदि चंद्रमा से ही उमड़े तो पहले ही दिन भी उमड़ना चाहिये।

शुक्लपक्ष होकर के भी पूर्णिमा के दिन पूरी पँखुड़ियाँ खुलती है। तभी समुद्र में उछाल आता है। विकास होते हुये भी अपूर्ण चाँदनी समुद्र में उछाल का कारण नहीं बनती है। ये सब में इसलिये कह रहा था कि स्वाध्याय प्रेमियों की धारणा गलत बन जाती है या धारणा को गलत बना लेते हैं। जो केवलज्ञान का आस्वाद होता है वह पूर्ण ज्ञान होने पर ही होता है, शेष ज्ञानों का आस्वाद केवल ज्ञान की भाँति नहीं होता है। इस उदाहरण से आप सभी को जागृत कराया है। उद्घाटित होना एवं उसे पूर्ण ज्ञान के रूप में मान लेना ठीक नहीं है। मध्यस्थ अवस्था में स्वानुभूति प्रत्यक्ष होते हुये भी वह इस केवलज्ञान की तरह होता है– यह गलत बात है। अन्यथा समुद्र में उछाल क्यों नहीं आता है। एकम् को एकम् कहेंगे पूर्णिमा तो नहीं कहेंगे। दूज को दूज की तरह चन्द्रमा होता है। मुसलमानों के यहाँ दूज के चंद्रमा का ही महत्व है, क्योंकि एकम् को उस चन्द्रमा की कला इतनी छोटी की वह स्पष्ट नहीं दिखता है।

दूज का चँद्रमा भी सब लोगों को नहीं दिखता है किसी स्थान विशेष में किसी को दिख गया तो ईद मानाना प्रारम्भ करते हैं। अतः पूर्णिमा का चंद्रमा ही समुद्र में उछाल ला सकता है, यह आगम में कहा गया है, घर के आगम में नहीं कहा गया है। हम ऐसे ही ''हव'' नहीं कहेंगे, इससे आपके सम्यक्ज्ञान में दोष लगेगा। इसी सम्यग्ज्ञान को निर्दोष बनाने वाले आगम का ही समर्थन करना चाहिये।

एक उदाहरण से और समझ सकते हो इस पूरे के पूरे प्रकरण को। सुना है–आयुर्वेद ग्रन्थों में पढ़ा भी है कि पूर्णिमा के दिन अमृत की वर्षा होती है। शुक्लपक्ष में 15 दिन होते हैं पर शेष दिनों में क्यों नहीं इसलिये यह बात सिद्ध है वह अमृत बरसाने की शक्ति भी पूर्ण चन्द्रमा के पास ही है। अन्य दिन में नहीं। उस सुधांशु इसीलिये कहा है।

विशेष– आचार्य श्री ने जयधवला जी पढ़ाते समय विशेषार्थ में बिल्कुल गलत लिख दिया पं. फूलचन्द्रजी ने। उसी बात का खुलासा वीरसेन महाराज जी ने मूलसूत्रों में अच्छे से कर दिया बस विक्षा से अर्घ लगाने वाले कभी भटक नहीं सकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''विश्वास करो मिलेगी मुक्ति''

20.04.2016 **प्रातः 09:15**

दो साथी सुबह–सुबह घूमने के लिये निकल गये, घूमते–घूमते रास्ता भूल गये। गर्मी के दिन थे। एक साथी बोला हम आगे नहीं जा सकते गर्मी का समय है, गर्मी बढ़ेगी, ठिकाना है नहीं। दूसरा बोला मान लो थोड़ा तो चलो मेरी बात पर विश्वास तो करो। पहले वाला बोला कोई भी तो नहीं मिल रहा है। अरे परीक्षा होती है तो कक्षा में प्रवेश के बाद ही परीक्षा होती है। आज कोई भी अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरे को सहयोग देना नहीं चाहता।

इतने में एक तीसरा व्यक्ति उधर सामने से आने लगा। जंगल भयानक है फिर भी चलो कोई तो आया वो अकेला है हम दो हैं। पूछा कैसे–क्या है तो उसने कहा यहाँ सामने पास में नदी है, आप थोड़ा चलेंगे तो उस तक पहुँच जायेंगे। वह चला गया जब किसी पर विश्वास होता है तो उसके शब्द सुनकर भी कंठ गीला हो जाता है, अर्थात किसी पर भरोसा करके कंठ गीला बनाया जा सकता है।

इसी प्रकार मुक्ति का मार्ग अभी नहीं मिला किन्तु विश्वास करेंगे तो मुक्ति अवश्य मिल जायेगी। अनंत काल से भटकते आये हैं तो मुक्ति कैसे मिलेगी। विश्वास करने से। जो भी पार उतरे हैं वे विश्वास द्वारा ही पार उतरे हैं। अनुभव के बिना भी विश्वास करना होता है। अनुभव के साथ विश्वास होता ही है पर विश्वास के साथ अनुभव हो भी सकता है और नहीं भी। मोक्षमार्ग में हाथ पकड़कर नहीं चलना होता है। भगवान के भरोसे ही एक–एक कदम बढ़ाना होता है। जब तक घट में प्राण है तब तक भरोसा करते जाओ इसी से असंख्य गुणीकर्म निर्जरा होगी। इस विश्वास को कोई लूट भी नहीं सकता। कष्ट के कारण हमारी आँखों में पानी नहीं आना चाहिये, बल्कि अज्ञान के द्वारा जो हमने कर्मों का बंधन किया उस पर पश्चाताप होना चाहिये। वर्तमान में इस विश्वास द्वारा ही हम उन कर्मों को दूर करने का पुरुषार्थ कर सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''निद्रा देवी हो वश में''

21.04.2016 **प्रातः 09:15**

कुछ स्थानों पर निद्रा की उपयोगिता नहीं बताई। वे कौन–कौन से स्थान हैं देवगति में निद्रा का उदय नहीं होता है। तिर्यन्च एवं मनुष्यों में ही निद्रा देवी आती है। नरकों में भी निद्रा नहीं आती है। देवों एवं नरकों में निद्रा क्यों नहीं ये प्रश्न उठता है। निद्रा के कारण सुखानुभूति में कमी होती है जब कि देवगति में प्रकृष्ट रूप के साथ सुख का भोग होता है।

आप लोगों को निद्रा नहीं आये तो सिरदर्द हो जायेगा। सुख की नींद नहीं आ रही है तो आप कहते हैं–चलो यहाँ से। नींद के द्वारा भी सुख होता है। नरकों में एक सेकेण्ड भी निद्रा नहीं आती। गर्मी–सर्दी की बहुत वेदना रहती है। एक घण्टा भी नींद न आये तो आप लोग–तुम्हारी वजह से नींद नहीं आ रही है। वेदना में भी ध्यान लग जाता है। अभी तो 10 बजा है वो भी ध्यान है रात का 10 बजा। हां अभी लग नहीं रही है। आप लोग सुन रहे हो–हव।

हम अपने परिणामों से ही दूर है। इसे बोलते हैं सर्वघाति प्रकृति। कोई भी निद्रा देशघाति नहीं है। चक्षु आदि चार दर्शनावरण की प्रकृतियाँ देशधाति हैं पर पाँचों निद्रायें तो सर्वधाति ही है। इसके उदय में कुछ भी ध्यान नहीं होगा। इसलिये ध्यान करते समय निद्रा मत लेओ। ध्यान निर्जरा का कारण है, परन्तु निद्रा आ गयी तो एक भी नंबर नहीं मिलेगा। पूरा का पूरा चौपट कर देती है यह। नरकों में निद्रा नहीं आती क्योंकि दुःख पूर्ण भोगना है, स्वर्गों में सुखपूर्ण भोगना है। यहाँ के सेठ–साहूकार **''नींद नहीं आवत है''** बड़ी–बड़ी गादी पर भी लुड़का दो तो भी नींद नहीं और पड़ोस में जमीन पर वह मजदूर सुख की नींद

सो रहा है। इन साहब की दुकान है और वे संतोष के साथ रहते हैं।

आये हुये कर्मों में न सुख का, न दुःख का अनुभव करते हैं ऐसी रासायनिक प्रक्रिया होती है, इस प्रकार के कर्म का उदय रहता है। सर्वघाति है, एक झपकी भी आयेगी वह उस ओर से ध्यान हटाकर सतर्क हो जाता है। जो निद्रा नहीं लेता वह असंख्यात गुणी निर्जरा करता है। 18 दोषों में एक निद्रा को भी लिया है, जिनको बैठा रखा है उनको उठा दो क्योंकि उनके पास निद्रा है। भगवान के पास निद्रा हो नहीं सकती। इसी तरह सम्यग्दर्शन की तुलना अज्ञान के साथ करना भी बड़ी निद्रा है।

माला, मंच और माइक ये तीन मकार हैं। कहाँ से बोलने लग जाते हैं–पता ही नहीं आगम के आधार पर ही बोले। चिंता भी 18 दोषों में से एक है हम तो निश्चिंत हैं। जो निश्चिंत हैं, घर–गृहस्थी की चिंता नहीं करते हैं वो भगवान बन गये। आपमें किसी को पेट की चिंता है, किसी को पेटी की चिंता है। पेट की चिंता 2 रोटी से पूरी हो सकती है पर पेटी की चिंता हमें सात समंदर के पर ले जाती है। रात–दिन एक कर देता है अर्थात सो नहीं पताा है, सम्यग्दृष्टि इस तरह की चिंता से दूर रहता है। 24 घण्टा जो चिंता पीछे पड़ी है उससे मुझे दूर होना है। अज्ञान को दूर करके सम्यग्ज्ञान का उपयोग कर लेना चाहिये। इस प्रकार असंख्यात गुणी निर्जरा कैसे होती है इसे ज्ञात कराया। आलस्य को छोड़कर निद्रा पर विजय प्राप्त करें।

अच्छे–अच्छे डॉक्टर, वैज्ञानिक, इंजीनियर आदि इस निद्रा के वश में हो जाते हैं, हम इतने दूर से आये हैं, फिर भी सो रहे हैं हमें समय मिलता नहीं फिर भी कहते हैं हमें सोने दो। नींद एक ऐसी चीज है न लज्जा आती है, खाट पाँच पैर की भी हो तो भी चला लेते हैं। ''नींद न देखें टूटी खाट, भूख न देखे झूठो भात, प्यास न देखे धोबीघाट।''

हमारी बात ठीक निकल गयी। अच्छे–अच्छे व्यक्ति भी अपनी मर्यादा छोड़ देते हैं, कहीं भी लुड़क जाते हैं। धोबी का घाट नहीं गंगा का घाट है यह। इस निद्रा के उदय में सब मर्यादा नष्ट हो जाती है। नारकी जीव भी निद्रा नहीं लेते, ज्यादा नींद न लेकर थोड़े में रात में अपना काम निकाल लें। दिन में तो सोना ही नहीं चाहिये। तत्त्व चिंतन करते हुये, जाप करते हुये थोड़े समय के लिये विश्राम के साथ नींद लेकर पूरा कर लेना चाहिये। नरक में 1 घण्टा भी 1000 वर्षों की वेदना करा देता है।

कर्मों पर नियन्त्रण कुछ समय के लिये हो सकता है, पूरा तो नहीं हो सकता। ज्ञान से इस प्रकार का चिंतन करते रहो। ये ही धर्म ध्यान है। कर्म परिणामों को छोड़ भाव परिणमन को पुरुषार्थ द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं, ये ही कर्म निर्जरा के कारण हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''त्याग करें पुराने संस्कारों का''

22.04.2016 **प्रातः 09:15**

आप लोगों को ज्ञात होगा कि हाथ की अंजुली में पानी लेते हैं तो हम एक बूंद भी नहीं छोड़ना चाहते हैं फिर भी सारी की सारी अंतुली खाली हो जाती है। कपड़े के ऊपर इससे भी विलक्षण दृष्टि सामने आती है, जब उस पर पानी डालते हैं तो पानी छनता नहीं है, क्योंकि कपड़े के भीतर से पानी जा नहीं पा रहा कारण है कि वह कपड़ा नया है, कोरा है। दुकान से कपड़ा लाये मांड़ से युक्त है। जिस प्रकार ऐसे नये कपड़े से पानी भीतर नहीं जाता, उसी प्रकार जिनके संस्कार नहीं गये हैं, उनके लिये भी कुछ सुना दे तो ऊपर–ऊपर ही रहेगा। जाता ही नहीं भीतर नया–नया है।

तीसरा उदाहरण और दे दूँ। राजस्थान में हमने देखा कपड़े की ही बाल्टी होती है, मोटे कपड़े से बनी रहती है। ऊपर से थोड़ा बहुत छलक जाये पर बाकी ज्यों का त्यों उस बाल्टी में बना रहता है, कपड़े की संरचना ही ऐसी है। एक ओर उदाहरण–हाँ आपको भी अच्छा लग रहा है, मुझको भी अच्छा लग रहा है। एक घड़ू है। गुंड बोलते हैं इधर। पानी रखा हुआ है, उस पर कपड़ा ऐसे बांध दिया है, उसे ओंधा लटका दिया। एक घण्टा हुआ नहीं की ठण्डा–ठण्डा पानी मिल जाता है।

हमने भी सोचा कैसा भी ग्राहक क्यों न आये उसे ब्रह्मचर्य से बांध देते हैं फिर उल्टा लटका देते हैं। सब ठीक हो जाता कैसे भी कर्म बांध लेते हैं, गुरूओं का समागम से उसमें परिवर्तन ला सकते हैं। एक उदाहरण से और सजग करना चाहते हैं – एक घी का घड़ा है। घी रखते–रखते वह चिकना हो गया, उस पर एक भी पानी की बूंद टिकेगी ही नहीं क्योंकि चिकट–चिकट हो गयी। ऐसे भी ग्राहक आते हैं चिकट स्वभाव वाले कुछ भी प्रभाव ही नहीं पड़ता है। आप इनमें कौन से है स्वयं देखें।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''ध्यान रूपी पीन से करें प्रकाश''

23.04.2016 **प्रातः 09:15**

दुनिया में दो प्रकार की शक्ति है–एक पुदगल की शक्ति और दूसरा आत्मा की शक्ति। ये दोनों शक्तियाँ आपस में संघर्ष करती रहती है। इसमें से यदि छूटना चाहे तो छूट सकते हैं। धक्कमधक्का तो चलता ही रहेगा। उदाहरण से समझें। गैस बत्ती होती है, उसमें अग्नि के साथ वायु का भी प्रभाव रहता है, तेल के माध्यम से बत्ती प्रभाव दिखाती है। बत्ती चालू हो गई किन्तु बीच में जाकर बंद हो गई। अरे! ये क्या हुआ?कुछ नहीं हुआ। एक बत्ती थी उसमें तार लगा था सुई से भी पतला उससे यूंकर दिया। एकदम से प्रकाश हो गया।

यह काम अंगुली से नहीं हो सकता। सुई से भी बारीक रहता है। तेल भी था, हवा भी थी सब कुछ था, ये होता है संघर्ष। पूरी शक्ति लगानी पड़ती है, अंत–अंत में भी फैल हो जाते हैं। ध्यानरूपी पीन से ही

प्रकाश हो पाता है। देख लो सब मिलकर नहीं अपना–अपना करना होगा। अकेले–अकेले होना पड़ेगा तब जाके काम होगा (बड़े बाबा महामस्तकाभिषेक हेतु पाटनी जी–प्रभात जी, राजा पंकज आदि) आप पहले बैठक बुला लो तब देख लेंगे। कमेटी ने श्रीफल चढ़ाया। कौन सी कमेटी बना दी। पीन की जरूरत पड़ेगी, इसलिये पहले सोच लो मोक्षमार्ग में कभी भी, कहीं भी, कोई भी कर्म अटक सकता है। ऊपर जाकर फिर नीचे आना पड़ता है। बहुत व्यवस्था करनी पड़ती है तब जाकर फोर्स पहुँचता है।

कठिन कार्य है, पर आनंद भी उतना ही है, एक बार होने के उपरांत संघर्ष की बात ही नहीं है। इतना फोर्स के साथ रहता है, न ही तेल दिखता है न ही हवा केवल मेन्टल दिखता है। कपड़ा जैसा होता है वह मेन्टल–जलने पर प्रकाश देता है, हाथ नहीं लगा सकते हैं। छेद हो गया तो गया काम से। गड़बड़ न हो जाये इसलिये पहले मेन्टल को सुरक्षित रखा जाता है। कच्चा रहने पर प्रकाश नहीं, फुग्गा जैसा रहता है। ऐसे ही कर्म पहले जलाया जाता है, तभी आत्मा काम करती है। बिना सोचे कुछ नहीं होता ध्यान लगाना पड़ेगा। न कूलर है न वुलर है बस बड़े बाबा मिलेंगे। हम तो उनके हैं। देख लो आप लोग। इतना सूक्ष्म कार्य है– थोड़ा सा कचरा आ जाये तो हटने को तैयार नहीं गले में आकर अटक जाये तो क्या जीवन होता है, यह मालूम पड़ जायेगा। आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है इसकी रट लगाने से कुछ नहीं होगा। मोक्षमार्ग में मोह मार्ग पर चोट लगाने से ही मालूम पड़ता है।

छोड़ना चाहते हैं पर छोड़ नहीं पाते हैं। मोह पर चोट लगाते हैं तब मालूम पड़ेगा की चोट कितनी भारी है। छूट न जाये जब छोड़ने के लिये बैठे हो तो सोच क्यों रहे हो। मोह तो जैसे भी छूट सके वैसे ही छोड़ो। बंधपूर्वक ही मोक्ष है। बंधन को तोड़ो ऐसे कि जिससे पुनः नहीं जुड़े तभी काम होगा।

कमर कस के तैयार हो जाओ। कमर कसने का मतलब जानते हो। अरे जो कमर कस लेता है वह गिरता नहीं है। जैसे ग्रामीण लोग जब खेत में काम करने को तैयार होते हैं तो अपनी कमर कस लेते हैं, उस कार्य को तन–मन–धन से समर्पित भाव से करते हैं। ये मोक्षमार्ग मार्ग है मोहमार्ग नहीं। इस मोह को ही छोड़ा जाता है तभी मोक्षमार्ग प्राप्त होता है। छोड़ नहीं पाते तो इस मोह को कमजोर बनाया जाता है। आप लोग भी अभी ऐसा ही कर लो जो बलजोर है उसे कमजोर कर दो तथा जो कमजोर है उसे बलजोर कर दो। ऐसा करेंगे कभी मोक्षमार्ग की ओर बढ़ सकेंगे अन्यथा मोहमार्ग को तो निरन्तर बढ़ा ही रहे हैं। पीन का हमारा उदाहरण याद रखना, ज्यादा खर्चीला तो है नहीं ध्यान से सुनोगे तभी यह पीन रहेगा। सबका पीन अलग–अलग रहेगा। सामूहिक रूप से इतना बता दिया बाकी अलग से चर्चा कर लेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''दवाई नहीं–परहेज जरूरी''

25.04.2016 **प्रातः 09:20**

भगवान को याद करते हैं उस समय जिसे याद नहीं करना वो भी आते हैं, ये ही प्रश्न है न। ये प्रश्न नहीं समस्या है। तो हम क्या करें आचार्यों ने कहा–जिसे याद करना है वह तो ध्यान में आये नहीं और जिसे याद नहीं करना है वह यदि ध्यान में आयेगा तो आर्तध्यान/रौद्रध्यान का कारण अवश्य बनेगा। दोबारा बोलूं। जिसको याद न करो वह यदि आयेगा तो जरूर आर्तध्यान करायेगा। इसलिये कहा जाता है कि भगवान को याद करो।

अब क्या करें कि अन्य याद न आये, जेसे भगवान को याद किया। खाने–पीने की याद आ गयी अथवा पंचेन्द्रिय विषयों की याद आ गयी। भगवान भी ज्ञान का विषय बने एवं पंचेन्द्रिय विषय से कर्म का बंध ही होगा। विष को याद करने से विष ही चढ़ेगा। धर्मध्यान करने से विष दूर होगा। पंचेन्द्रिय विषय यदि इष्ट नहीं तो कुछ भी याद करो हमारा कोई भी विरोध नहीं। **''जं किंचिव चिंतंतो, णिरीक्ति हवे जदा साहू, लद्धूणय एमत्तं, तदा हु तं तसस णिच्छयं झाणं।''** यह गाथा द्रव्यसंग्रह में आती है। जो कोई भी चिंतन करो पर उसके प्रति निरीह वृत्ति रखो। डॉक्टर के पास जाते हो, डॉक्टर दवाई बाद में देता है पहले परहेज कराता है। परहेज क्यों करते हो। परहेज सदैव रोग की मुक्ति में कारण होता है।

संसारी प्राणी मन का चाकर/गुलाम है। उसे कहा जाता है तुम उसे याद मत करो। वह वहीं याद करता रहेगा। इष्ट–अनिष्ट की कल्पना होती रहती है। ध्यान में जो इष्ट है उसे ही याद करें। रोग से मुक्ति चाहते हो तो उसे याद करना छोड़ दो। याद न करो इसका मतलब उसकी इष्टता को छोड़ दो। भगवान को याद करने से बंध होता है, ऐसा एकान्त से नहीं मानता। बंध के साथ हमारा स्वरूप भी याद आता है। स्वरूप वाले को ही बार–बार याद रखना है। जो कुछ भी चिंतन करते है उसमें इष्ट–अनिष्ट की कल्पना नहीं करना।

गृहस्थ अवस्था में आत्मा की बात के लिये परमात्मा की बात कही है, ध्यान की बात की गयी है। भगवान के दर्शन को, उनके याद करने को मात्र क्रियाकाण्ड नहीं मानना उससे तो असंख्यात गुणी निर्जरा होती है। रोग को दूर करने के लिए दवाई के साथ रोग के कारण से परहेज रखना चाहिये। जो दे रहा है उस पर विश्वास होना चाहिये। भोजन भी यदि विष होने लगे तो उससे भी परहेज करना चाहिये।

जो आपका हित चाहता है वह विषयों में जबरदस्ती घुसेड़ेगा नहीं। जो हितेषी है वह आपको कभी भी गैर लाइन नहीं करेगा, आप भले ही ऑनलाइन बने रहो। आपको बार–बार संभालेगा तभी तो वह आपका सच्चा बंधु है। ऊपर–ऊपर से मान लेओ किन्तु भीतर से नहीं मानेंगे अर्थात उसई–उसई तो उसका परिणाम भी उसई–उसई आयेगा।

सांसारिक विषयों की मान्यता गलत है। जो वितरणी बने उनका हम ध्यान क्यों करते हैं, इसलिये की उन्होंने परहेज रखा, हमें भी परहेज का उपदेश देते हैं। भगवान की दवाई का ध्यान रखो। दवाई तो खूब खाओ और परहेज रखो नहीं तो इससे नुकसान किसका होगा, विचारणीय है। पंचेन्द्रिय विषयों का सदा परहेज रखेंगे तो मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी दवा आप सभी पर 10 मिनिट में लागू हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''सुनाना नहीं सुनना–धर्म श्रवण''

26.04.2016 **प्रातः 09:20**

देवगति में अनेक प्रकार के देवों के विषय में वर्णन आता है। उनमें कल्पवासी देवों में सोलह स्वर्गों का तथा उनसे ऊपर कल्पातीत के बारे में वर्णन मिलता है। हमें सोचना चाहिये की बाहरी से भीतरी परिणाम का महत्व कितना ज्यादा होता है। कल्पातीत को भी दो भागों में 9 ग्रेवेयक एवं दूसरा पाँच अनुत्तर तथा पाँच अनुदिश के रूप में बाँटते हैं।

पाँच अनुदिश तथा पाँच अनुत्तर में सम्यग्दर्शिट ही उत्त्पन्न होते हैं। ग्रेवेयक में सम्यग्दृष्टि ही रहे ऐसा नहीं मिथ्यादृष्टि भी होते हैं। हाँ लेकिन सोलह स्वर्गों से ऊपर सब अहमिन्द्र कहलाते हैं अहम् इव इन्द्र अर्थात मै ही मेरा इन्द्र हूँ/ स्वामी हूँ। मेरा स्वामी दूसरा कोई नहीं हो सकता। किसी को गरज हो वह जाता हो ऐसा भी नहीं है, क्योंकि जो जायेगा वह छोटा और जिसके पास गया वह कहेगा मेरे पास वह आया था। उन ग्रैवयकों में सम्यक्दर्शन का कारण क्या कहा–जाति–स्मरण एवं धर्मश्रवण। एक बार गुरुजी ने इस विषय पर बताया कि कौन धर्मश्रवण करायेगा वहाँ। सब के सब तो अहमिन्द्र है। आप अपने तक ही रखो। धर्म श्रवण के लिये दो व्यक्ति तो चाहिये, अन्यथा हम धर्म श्रवण किसे करायेंगे।

धर्म श्रवण कहा– धर्म श्रवण्य नहीं कहा। र.क्षा. मे **''धर्मामृतं सतृभणः श्रवणभयां पिबतु पायेदेद्वान्यान्''** अर्थात स्वयं पीये तथा अन्य को भी पिलायें पर्वों के दिनों में। किन्तु वहाँ ग्रैवेयक में ऐसी व्यवस्था नहीं, वहाँ पर धर्म श्रवण संबंधी कैसा होता है तो उत्तर है एक देव अपने विमान में पाठ कर रहा है, राजा राणा छत्रपति, हाथिन पर असवार..... दूसरे विमान वाला व्यक्ति सुन लिया, सुनाया नहीं, सुनने में आ गया इसके माध्यम से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति बताई। (प्रतिभास्थली की बहनों द्वारा आचार्य श्री यह तो आज हमने पहली बार सुना)। सुनाने की बात नहीं सुनने की बात है। बारह भावना। सोलह कारण भावना का चिंतन–पाठ कर रहा है। स्वाध्याय वहाँ पर भी होता है, इतने काल तक क्या करेंगे वहाँ कोई दुकान तो है नहीं। इस तरह सम्यग्दर्शन का कारण धर्म श्रवण बताया–धर्म श्रावण्य नहीं। मुझे सुनाओ इस प्रकार की बात भी नहीं आवे।

वे लोग समवशरण में भी नहीं आते। आना–जाना सोलह स्वर्गों तक ही लगा है, अतः इससे ऊपर वाले देव अपने–अपने विमान अर्थात अपनी–अपनी सीमा में ही रहते हैं। दूसरे से बाते करें ऐसा भी नहीं है, बस अपना स्वाध्याय, धर्म–पाठ करते हैं। वह पाठ भी दूसरों के लिये कषाय उपशमित में कारण बन जाता है। वहाँ कषाय बिल्कुल नहीं के बराबर अर्थात नथिंग नहीं बराबर का मतलब है तो लेकिन उसका अस्तित्व पकड़ में नहीं आता। स्वयं कषाय मन्द करके बैठेंगे तब ऐसा होगा।

आप लोग भोजन करेंगे, लेकिन विरुद्ध भोजन करेंगे, दवाई खायेंगे फिर 24 घण्टे कई बाते सुनाई आप लोग मतलब की बात सुनते हैं। स्वयं को सुनाने से बहुत अच्छा लगता है। दक्षिण में स्वाध्याय का मंगलाचरण ओंकार बिन्दु संयुक्त होता है, उसमें अंत में आता है वक्तायः श्रोतायः सावधानतया श्रुण्वन्तु। स्वयं भी सावधान होकर सुनो। चाहे वह पण्डित जी हो या चाहे मुनिमहाराज जी हो तो क्या हो गया स्वयं पहले सुनो। ताली क्यों बजायी हम प्रायः करके सुनाते हैं स्वयं के भाव सुन नहीं पाते हैं, इसलिये बाद में

पश्चाताप हो जाता है। आवेश में आकर किसी ने कहा, वहाँ पर कोई आवेश नहीं है। धर्मध्यान का उद्देश्य कोई सुन लेगा तो उसे भी अच्छा लगेगा। करा नहीं रहा है, स्वयं कर रहा है। एकान्त में बैठकर उच्चारण–पूर्वक पाठ कर रहे हैं– आप आनंद का अनुभव करेंगे। जटिल विषय हो तो एकान्त में बैठो, स्वयं ही उसका हल मिल जायेगा। दूसरा सुनेगा तो जो आनंद आपलूट रहे हो उसे भी मिलेगा। एक बीच में दीवार ही तो है। धीरे–धीरे बोल लिया।

''सर्वेषां सुखं भवतु'' सभी निरोगी हो। आपने किसी से आवेश में कुछ कह दिया अब आप मनसे, वचन से, काम से कहो कि मैं क्षमा चाहता हूँ कोई सुने या न सुने। दूसरा जिससे खटपट हुई उस तक प्रभाव अवश्य पड़ेगा। सुनाना नहीं–स्वयं उच्चारण पूर्वक करें। खम्मामी सव्व जीवाणं...। दूसरों के सामने जाकर रोओ नहीं, भगवान के सामने जाकर रो सकते हैं आप आँखें बद भी कर लो तो भी वह तो सर्वज्ञ है आपको देख ही रहे हैं आप कहीं भी जाकर बैठोगे तो भगवान तो आपको विषय बना ही लेंगे।

''अन्तो–अन्तो द्रष्झामी..... ''सुनाना नहीं है पर हम जो पाठ करते हैं, उसका प्रभाव दूसरे अहमिन्द्रों पर पड़ सकता है और वह मिथ्यात्व को छोड़कर सम्यक्दर्शन भी ग्रहण कर सकता है। कोई भी क्रिया स्व एवं पर के प्रति अवश्य उत्तरदायी होती है। कषाय के आवेग में यदि हम कोई क्रिया कर रहे हैं तो दूसरा उससे प्रभावित नहीं होगा। हमारी तरंगे तभी प्रभावित कर पायेंगी जब हम आवेश में न हो। जैसे फोन की घण्टी बज रही है, पर आवाज। कोलाहल की कल–कल में वह उस फोन को नहीं उठा पायेगा। आपे में होंगे तभी उस ध्वनि को सुन सकते हो। वह ध्वनि आप तक आ सकती है। भावों के द्वारा प्रेषित भाव ही प्रभावित करते हैं उसी तरह अहमिन्द्र के द्वारा दूसरे अहमिन्द्र प्रभावित होते हैं। यह गुरूजी का वाक्य है। आप लोग नया बता रहे हैं। आप लोगों का पुण्य का उदय और मेरा भी बहुत तेज पुण्य का उदय होगा तभी तो नयी बात याद आयी। दोहराते हुये सुना रहे हो तो उसका प्रभाव दूसरे पर भी अवश्य पड़ेगा। कम समय में भी लाभ ले सकते हैं।

तीर्थंकरों के समोशरण में जा सकते हैं यहाँ बैठे–बैठे भी किन्तु ऐसे भाव तक नहीं करते हैं क्षायिक सम्यग्दर्शन है फिर भी। भागमभाग शरीर के द्वारा आप लोग ही करते हैं, बिना शरीर के परिणामें से/ भावों से भी अपनी भावना प्रेषित कर सकते हैं। यहाँ बैठे–बैठे ही समवशरण में प्रवेश कर सकते हैं ।

अहिंसा परमो धर्म की जय

''आदर्श जीवन–प्रतिभा विज्ञान''

27.04.2016 **प्रातः 09:15**

ग्रन्थों के माध्यम से हमें ज्ञात होता है कि ऊपरीम स्वर्गों में एक के बाद एक विमान होते हैं एवं ऊपर–ऊपर व्यवस्था भी अलग–अलग होती है। कल जो विषय लिया था आज उससे अलग है।

स्वर्गों में देवों की जितनी आयु (उम्र) होती है उतने पक्ष में श्वांस एवं जितनी आयु उतने ही हजार वर्षों में आहार होता है। असंयम तो वहाँ सदैव बना ही रहता है, ऐसी सुविधा भी उनके पास जब चाहे अमृत का स्वाद ले सकते हैं, कहीं आना–जाना नहीं है, पानी छानना नहीं है। पीना भी नहीं है। फिर भी वे लोग जितनी आयु है उतने हजार वर्ष बाद आहार लेते हैं, जैसे 5 सागर की आयु है तो 5 हजार वर्ष में आहार एवं 5 पक्ष में श्वांस, 33 सागर की आयु वाले 33 पक्ष बाद श्वांस लेते हैं। श्वांस लेना एवं छोड़ना में भी परिश्रम है, नहीं लेते हैं तो घबराहट होती है। उन्हें मरने का डर नहीं होता । बीच में श्वांस क्यों नहीं अथवा बीच में आहार भी नहीं लेते हैं इसका कारण यह है कि कषाय मंदता के कारण भोगाभिलाषा मरी जैसी रहती है। मंदी जैसी रहना–बोलते है न इनकी तो भूख मरी जैसी है–लगती ही नहीं। अरे भैया! इनकी भूख मर सी गयी है। आगम में संज्ञाओं की मंदता के कारण उतनी उदीप्त नहीं जितनी मनुष्य–तिर्यम्यों में रहती है।

आप लोग दिन में सो जाना, रात में भी सो जाना, क्या सोचते हो वे लोग सोते नहीं पर रहेगा असंयम ही। संयम मनुष्य रख सकते हैं वहाँ असंयम ही है पर इस मामले में तो संयम जैसा नजर आ रहा है। यह कषायों की मंदता का ही कारण है। जिनमें प्रत्यक्ष रहता है, उनमें आकुलता का होना नहीं पाया जाता है, इन देवों में वो नहीं। जैसे–जैसे ऊपर जाते हैं, परिगृह तो हीन एवं सुख अधिक–अधिक होता जाता है। सुख के समस्त साधन होने के बाद भी आने–जाने (आवागमन) का भाव ही नहीं रहता है। परिगृह की मात्रा, मात्र आदि कषाय, भूख–प्यास आदि का मात्रा कम हो जाती है।

आने–जाने के बारे में भी विकल्प कम होना चाहिये। सुन रहे हो या नहीं। इन दिनों में यहाँ क्यों आ गये (प्रतिभा मण्डल की ओर इशारा) होली है। कई लोग अवकाश प्राप्त हो जाये तो गर्मी में कश्मीर आदि चले जाते हैं ये आवागमन की आकुलता है। जब असंयमी में कमी आती है तो संयमी में तो और कमी आना चाहिये। प्रतिमा तो बढ़ाना चाहते हो, जिसे बढ़ाना है वो नहीं बढ़ा रहे हो। जाना–आना कम कर दो। ऐशोआराम में भी कमी कर दो। ऊपर–ऊपर की कक्षा की ओर देख रहे हो। महाराज मेरी पाँच प्रतिमा है, मेरी सात प्रतिमा है और शुद्धि बोल नहीं रहा है। सब कुछ कर रहे हो, शुद्धि तो बोल दो। विवेक भी रखना चाहिये। प्रत्येक क्रिया के साथ विशेष रूप से विवेक रखना चाहिये। कौन से पद में कौन सी क्षमता है उसका ध्यान रखो। जितने नियन्त्रण रखेंगे द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव पर उतनी ही कर्म निर्जरा अधिक होगी। लाभ–हानि तो देखा करो।

जिससे ज्यादा लाभ हो वही उपादेय है, इतनी कषाय मंद रहती है। ऊपर के स्वर्गों में रहने वाले देवों की जाने–आने की भावना रहती ही नहीं। जब कि पूर्व भव में वे मनुष्य होते हैं, मनुष्य में भी महाव्रती होते हैं। सोलह से ऊपर केवल मुनि ही जाते हैं, भले ही मिथ्यादृष्टि हो। टॉप टेन नं. कितना ग्रेड के माध्यम से

उनमें अर्थात मिथ्यादृष्टि भी टॉप टेन में आ जाता है। सबकी एक ही चर्चा है। अभिमान नहीं करना। सही अहमिन्द्र है। सबकी कषायों में मंदता होती है। खाना–पीना आदि सभी तो समान है।

श्वाच्छोश्वास भी वहाँ कम लेना पड़ता है। इसी प्रकार जानने के बारें में आकुलता कम होती है। शंका ज्यादा करना होशियारी या विद्वता का परिचय नहीं है। इधर–उधर की चर्चा छेड़ना ही नहीं चाहिये, क्योंकि ये अनर्थ दण्ड में आता है। दूसरी प्रतिमा में ही आ जाता है–अनर्थ दण्ड। महाराज जी वो प्रतिमा पुरानी हो गई अब नई दे दो। इसी तरह उसी जानने को सही जानना मानता हूँ जिसके द्वारा जन्म–मृत्यु की निर्जरा हो। उसी को जानने का प्रयास करो। ज्यादा मन के ऊपर जोर देना भी हिंसा का प्रतीक है। ज्यादा सोचना भी हिंसा है। **''प्रमत्तयोगात्तप्राणण्यपरोपण हिंसा''**। ज्यादा सोचने अथवा ज्यादा बोलने से श्रम होता है, ज्यादा भोजन करने से भी श्रम होता है, आँतों पर भार पड़ता है। मान लो मोटर साइकिल खरीद ली पेट्रोल भी है, नई कम्पनी से खरीदी है, रोड भी अच्छी है, चलाना प्रारम्भ कर दिया। बस उसमें ब्रेक लगाना भूल गया। क्या होगा। कम्पनी ने तो गारंटी ली है, कुछ नहीं होगा। उसी प्रकार हमारा कहना है, वायु का दुरुपयोग मत करो। आयु का प्राण कहा, मन–वचन–काय एवं पाँच इन्द्रियाँ भी प्राण है।

लाइट नहीं है तो लाइट जलाकर स्वाध्याय कर रहे हैं, चष्मा अलग से लगा रखा है। आम्नाय आदि भी स्वाध्याय है। भोजन नहीं करते हो तो पूजन भी बंद कर दो। फिर महाराज हम क्या करें– णमोकार महामंत्र की माला फेरो। पंचपरमेश्ठी का स्मरण करो। इसमें स्वाध्याय भी हो जाता है और पूजा भी हो जाती है। न पूजर्याथास्नवितरागो.... जिसमें संवर एवं निर्जरा हो वही कार्य करो। आ. समन्तभद्र स्वामी ने र.क्षा. में उपवास के दिन क्या करें और क्या न करे का वर्णन करते हुये कहा कि स्नानांजन.... अर्थात स्नान का भी उस दिन त्याग करें। कम श्रम से ज्यादा फल ले लेना चाहिये।

वेतन पूरा ही क्यों यदि डबल मिलें तो और अच्छा है। उन दिनों विचारों में निर्मलता ज्यादा लाने का प्रयास करना चाहिये। इस प्रकार जो कार्य योग्य नहीं है उनका तो त्याग सम्पूर्ण रूप से कर देना चाहिये एवं जो योग्य है उसमें भी कम–कम करते जायेंगे। वो लोग (देव) भोजन के बीच नाश्ता नहीं करते, ये नाश्ता की व्यवस्था मनुष्य जीवन में ही है। वहाँ बीच में कभी इस प्रकार का होता ही नहीं है न ही मिलता है। ये मनुष्य ही ऐसा प्राणी जो अनियन्त्रित है। प्राणी कहने से बुरा तो नहीं लगा। प्राणों पर आधारित होने से प्राणी है। इस मनुष्य को ही ज्यादा सुनाना पड़ता है, वे लोग एक बार में समझ जाते हैं। हम क्या–क्या कर सकते हैं। बस यही छोटा सा वक्तव्य है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

कर्म का फल भोगना होगा

28.04.16 **प्रातः 09:15**

आगम में प्रसंग आता है। पूर्व जीवन में क्या था और इस जीवन में क्या है। धर्मश्रवण–जाति स्मरण आदि के माध्यम से ज्ञात हो जाता है। इससे न केवल सम्यक्दर्शन होता है अपितु पूरा का पूरा जीवन ही परिवर्तित हो जाता है। रावण के जीव को संबोधन करने सीता का जीव गया। करुणा की भावना, दया का भाव होने पर ऐसा होता है। यहाँ बार–बार समझाने पर भी कुछ नहीं होता है और वहाँ एक बार समझाने में ही समझ में आ जाता है। क्या है ये सब। वे अच्छे से जानते हैं कि किया हुआ कर्म उदय में आता है।

अपने विमान में वह प्रतिन्द्र बना देव सोचता है, चलो इस जीव पर करूणा/दशा की जावे/जाति स्मरण भी है वहाँ धर्मश्रवण भी है। प्रयास क्या किया जाता है, उसे विमान में बैठा दिया गया अब उसे यहाँ से उठाकर ले चलो। एक बार इसी तरह सीता को विमान में बैठाकर ले जाया गया था, आज रावण को अच्छे से बाँधकर ले जाया जाना थां वहाँ रावण पास हो गया था आज यहाँ प्रतिन्द्र फैल हो गया। वह क्षेत्र से क्षेत्रान्तर को लेकर गया किन्तु यह नरक गति से गत्यान्तर ले जाने की बात है, कोई भी इसे स्वीकार नहीं करेगा। दया में भी सीमा तो होना चाहिये। ऐसा हमने सुना था आप लोगों ने भी पद्मपुराण में पढ़ा होगा।

जैसा गले में पाश बांधते हैं उसी प्रकार सब जगह से बांध दिया। ज्ञान का प्रयोग करने से ऐसा होता है। दोनों तैयार है। वह तो स्वयं तैयार है दूसरा कोई होता तो वह कुछ कहता पर ये दोनों जानते थे कि हमने जो किया है उसे हमें ही भोगना पड़ेगा। अभी नरक में वह वैक्रियक शरीर है, रावण का औदारिक शरीर था। रावण अब सोच रहा है अब मेरा कर्म इसमें काम नहीं कर सकता है। यह तो वज्र की लकीर के समान है। सोचने की बात यह है कि प्रतिन्द्र के जीवन को यह बंध क्यों नहीं हुआ। अब पिघलेगा। इसलिये दया से आर्द्र है। सामने वाला तैयार भी है। यह भी तैयार है पर फिर भी रक्षा नहीं कर सकता है।

धर्म श्रवण का भी भाव है पर कर्म के आगे कोई भी कुछ नहीं कर सकता है। केवली भगवान के पास भी अनंत चतुष्टय है पर कर्म की शक्ति को समाप्त करने की ताकत उनके पास भी नहीं है। अनन्त वीर्य की शक्ति है और कर्म ऐसे जो जली रस्सी के रूप में फिर भी रस्सी तो रस्सी है चाहे जली हो अथवा नहीं हो। एक सेकेण्ड भी आयु को बढ़ाने या घटाने की शक्ति उनके पास नहीं है। कर्म की निर्जरा परिणामों के द्वारा होती है।

ये पक्की बात है कि प्रतिन्द्र के जीव में करुणा तो थी पर वह यह नहीं समझ पाया कि कर्म को इस प्रकार बांध कर ले जाने की शक्ति मेरे पास नहीं है। जब रावण ने उठाया था तो कोई भी ऐसा कर्म उसके सामने नहीं आया जो उसका प्रतिकार कर सके। देव लोग आकर उसकी रक्षा कर सकते थे, छुड़ा सकते थे। देवों में शापानुग्रह की शक्ति होती है, क्यों नहीं किया। एक सीमा तक ही सहयोग/उपकार अथवा अनुगृह हो सकता है। जिसके ऊपर होना है उसका कर्म होना जरूरी है फिर भी उसकी एक सीमा होती है। उदाहरण मिलता है–चक्रवर्ती का चक्र हमेशा काम करता है वेरी पर किन्तु कभी–कभी काम नहीं भी करता है। परिक्रमा भी लगा सकता है। चक्र कह दे कि मैं तो सामने वाले का हूँ (व्यंग्य) जिसका तेज पुण्य

होगा उसी के अनुसार कार्य होगा।

भरत चक्रवर्ती का पुण्य कमजोर पड़ गया और बाहुबली का पुण्य बलजोर हो गया। रावण को सहयोग करने पर भी काम हो नहीं रहा है। महाराज। रोओ नहीं। रोओगे तो और अधिक कर्म बंध होगा। कमजोर को सब दबा देते हैं। बलजोर को कोई नहीं दबा सकता। जब कर्म का उदय कमजोर रहे उसी समय कुछ हद तक काम कर सकते हैं

वह प्रतिन्द्र का जीव मोह के कारण नीचे की पृथ्वी में जाने के उपरान्त भी वज्र से भी अधिक कठोर मोम की भांति पिघल गया। दो बार मेने पढ़ा तब समझ में आया कि कर्म के आगे कोई की भी नहीं चलती है। आप लोग भजन में गाते हैं– (सब लोग बोलने लगे) आप लोग याद रखना अपने से ही। तुम सज्जन बन जाओ तुम ही निकाल लो। कर्म ने किया तो वह सज्जन कैसे हाँ भोगते समय सज्जन बनकर भोग सकता है। शिकायत मत करो। शिकायत करने से ही सज्जनता नहीं रहती।

हे भगवान्! आप नहीं देख रहे क्या? आप नहीं सुन रहे क्या? मैने आपको अपने हृदय में बैठाया है। यहाँ आक्रमण हो रहा है। अब क्या करें भगवान हमें छोड़ दो। क्या करे भगवान आपने रखा उसी रूप में रखो। दुनिया के काम करने के लिये भगवान को रखा क्या? भगवान क्या–क्या करे। आपका पाप यदि बड़ा है तो पुण्य उसे कैसे दूर कर पायेगा। जाति स्मरण के माध्यम से दोनों को समझ में आ गया। दोनों चाहते तो थे पर समझ में यह आ गया कि कारण क्या है। किये हुये कर्म को भोगना पड़ेगा। श्रद्धान होते हुये भी कार्य हो ऐसा नहीं है। दोनों के पास वैक्रियक शरीर है, पर वैसी वेदना नहीं थी। काम नहीं हुआ तब समझ में आ गया कि कारण क्या है। आगम के इन प्रसंगों से अपने विश्वास को दृढ़ करना होता है। विश्वास दृढ़ होने से आत्म संतुष्टि होती है। सीमा के अनुसार ही कार्य होता है। सौधर्म इन्द्र या प्रतिरुद्र आदि यहाँ से वहाँ तक पहुँच गये किन्तु काम नहीं हुआ। जाति स्मरण से अतीत का एवं धर्म श्रवण से वर्तमान का पता चलने के बाद भी काम हो ऐसा नहीं है, कर्म की सत्ता महत्वपूर्ण है।

अहिंसा परमो धर्म की जय

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	24/11/2015	धन की नहीं धर्म की बात करो		1
2.	25/11/2015	काल बिना कुछ नहीं	रहली	1
3.	26/11/2015	तापत्रय से बचें	गढ़ाकोटा	1
4.	28/11/2015	जो चाहो सो पाओ	गढ़ाकोटा	2
5.	29/11/2015	देव करते है नमन	गढ़ाकोटा	2
6.	01/12/2015	भावना दूसरों के कल्याण की	गढ़ाकोटा	2
7.	02/12/2015	क्षयोपशम या क्षायिक	गढ़ाकोटा	3
8.	03/12/2015	कारण बिना कार्य कैसे	गढ़ाकोटा	3
9.	05/12/2015	विवाह संस्कार कैसे हो	गढ़ाकोटा	4
10.	07/12/2015	आओ करें क्षमा	गढ़ाकोटा	5
11.	09/12/2015	लकड़ी या कंकड	रहली	6
12.	10/12/2015	नीचे गिराता है निदान	रहली	6
13.	11/12/2015	कुँए का पानी	रहली	7
14.	12/12/2015	दूध और घी की अनुभूति	रहली	8
15.	14/12/2015	फेरी-फेरे काटने वाली	रहली	8
16.	20/12/2015	रविवारीय प्रवचन	रहली	8
17.	22/12/2015	तुमरे बिन मेरा कोई नहीं	रहली	11
18.	23/12/2015	हमको क्या - इनको हमारा ध्यान है	रहली	11
19.	24/12/2015	जिसका ओर न छोर	रहली	12
20.	25/12/2015	बाहर के नहीं भीतर के अतिशय को देखो	पटनागंज (रहली)	13
21.	26/12/2015	चित्र-चित्त को भटकाता है	रहली	14
22.	27/12/2015	आवों चलें ग्राम की ओर	मुहली	14
23.	28/12/2015	आहार ही औषधी	सिंहपुरी	15
24.	29/12/2015	फतेह हो गयी	तारादेही	16
25.	30/12/2015	तिगडम है दुःखदायी	तारादेही	17
26.	31/12/2015	भगवान को देख सकते हैं - दिखा नहीं सकते	तारादेही	18
27.	01/01/2016	मोक्ष स्वयं में महा है - महामोक्षफल क्यों	तारादेही	19

28.	02/01/2016	दर्पणवत् स्वभाव हो मेरा	तारादेही	20
29.	03/01/2016	वीतरागता का लड्डू	तारादेही	20
30.	04/01/2016	दान करे कैसे	तारादेही	21
31.	05/01/2016	त्याग और तपस्या की महानता	तारादेही	22
32.	06/01/2016	जब जागे तभी सवेरा	तारादेही	23
33.	07/01/2016	सुन्दर भाव ही धर्म पुरुषार्थ	तारादेही	24
34.	08/01/2016	मोह रुपी खग्रास ने घेरा आत्मा को	तारादेही	25
35.	09/01/2016	संगति का असर	तारादेही	26
36.	10/01/2016	चलें भेद से अभेद की ओर	तारादेही	26
37.	11/01/2016	कैसी हो हमारी दृष्टि	तारादेही	27
38.	12/01/2016	फेर दो	तारादेही	28
39.	13/01/2016	चिंता नहीं चिंतन करें	तारादेही	29
40.	14/01/2016	वीतरागता की सुगंध	तारादेही	29
41.	15/01/2016	स्थायी है सफेद रंग	तारादेही	30
42.	22/01/2016	चिपको मत उड़ो	तारादेही	31
43.	23/01/2016	करें उगते सूरज को प्रणाम	तारादेही	31
44.	24/01/2016	टांके का पानी	तारादेही	32
45.	25/01/2016	बादल का त्याग	तेंदूखेड़ा	33
46.	26/01/2016	शरीर को नहीं शरीरी को देखें	तेंदूखेड़ा	33
47.	27/01/2016	संस्कार बचायें पूर्वजों के	तेंदूखेड़ा	34
48.	28/01/2016	क्षुधा की शांति कैसे?	तेंदूखेड़ा	36
49.	31/01/2016	लज्जावान हो हर प्राणी	तेंदूखेड़ा	37
50.	01/02/2016	शरीर को नहीं आत्मा को देखें	तेंदूखेड़ा	37
51.	08/02/2016	भावों की महानता	तेंदूखेड़ा	38
52.	09/02/2016	एकता में एकतान है	तेंदूखेड़ा	39
53.	10/02/2016	सुगंध कहाँ	तेंदूखेड़ा	39
54.	19/02/2016	मन बना लिया	तेंदूखेड़ा	40
55.	23/02/2016	आओ जीते परिषह	तेंदूखेड़ा	40
56.	25/02/2016	स्पर्धा करो मोह कम में	कोनी जी	41

57.	26/02/2016	आवो मांजे भावों को	कोनी जी	42
58.	27/02/2016	आम से शिक्षा	कोनी जी	43
59.	28/02/2016	जीने से चलना नहीं, नसैनी से चढ़ना	कोनी जी	43
60.	29/02/2016	माँग उसही उसही न हो	कोनी जी	44
61.	01/03/2016	धूप आरती का कमाल	कोनी जी	44
62.	02/03/2016	कमाल का है चरखा-हतकरघा	कोनी जी	45
63.	03/03/2016	दृष्टि हो भीतर में	कोनी जी	47
64.	04/03/2016	अपने-अपने कर्मों का फल	कोनी जी	48
65.	06/03/2016	अच्छे कार्य के लिये मुहूर्त मत खोजो	कटंगी	49
66.	07/03/2016	सो सही दिशा में सही समय पर पुरुषार्थ	कटंगी	49
67.	08/03/2016	मन-वचन-कार्य तीनों शुद्ध हों	कटंगी	50
68.	09/03/2016	चंदन सम शीतलता पाने	कटंगी	51
69.	10/03/2016	असली-नकली का भेद पहचाने	कटंगी	52
70.	11/02/2016	गले में हो रस्सी	कटंगी	53
71.	12/03/2016	बीजत्व को करें समाप्त	कटंगी	54
72.	13/03/2016	महत्व नामकरण का	कटंगी	55
73.	14/03/2016	ज्ञान और शिक्षा का करें सदुपयोग	कटंगी	56
74.	15/03/2016	जीवन टायर एवं ट्यूब की तरह	कटंगी	58
75.	16/03/2016	दृष्टिकोण नहीं दृष्टि हो	कटंगी	59
76.	17/03/2016	किराये का घर/दुकान	कटंगी	60
77.	18/03/2016	ध्वजा का संकेत	कटंगी	60
78.	24/03/2016	संयोग वियोगमय है	कटंगी	61
79.	25/03/2016	सही दिशा में सही कदम	कटंगी	61
80.	27/03/2016	खिले कमल की तरह	जबेरा	62
81.	28/03/2016	जल तुम्हारा रंग कैसा?	चौपड़ा	63
82.	29/03/2016	संस्कृति की रक्षा हो	वनबार	65
83.	31/03/2016	उर्ध्वगति स्वभावी आत्मा	कुण्डलपुर	66
84.	01/04/2016	पुण्य का भोग - पाप का कारण	कुण्डलपुर	66
85.	04/04/2016	सफलता की कुंजी	कुण्डलपुर	67

86.	05/04/2016	दिशाबोध देना या लेना	कुण्डलपुर	68
87.	06/04/2016	देवशास्त्र गुरु रूपी जामन	कुण्डलपुर	68
88.	07/04/2016	ज्ञानी के छिन मांही	कुण्डलपुर	70
89.	08/04/2016	कषायाग्नि से बचें	कुण्डलपुर	70
90.	09/04/2016	आँखें बंद करूं या खोलूँ	कुण्डलपुर	71
91.	10/04/2016	अगरबत्ती की खुशबू	कुण्डलपुर	72
92.	11/04/2016	णमोकार मंत्र है स्वाध्याय-ध्यान	कुण्डलपुर	72
93.	12/04/2016	क्षमता का करें विकास	कुण्डलपुर	73
94.	13/04/2016	एक्शन नहीं डाइरेक्शन देखें	कुण्डलपुर	75
95.	14/04/2016	दहाड़ो सिंह की तरह	कुण्डलपुर	77
96.	15/04/2016	दवाई नहीं औषध लो	कुण्डलपुर	78
97.	16/04/2016	विश्वास का हो अहसास	कुण्डलपुर	79
98.	17/04/2016	पारणा से महत्वपूर्ण धारणा	कुण्डलपुर	80
99.	18/04/2016	बिन मर्यादा विश्वास कैसा	कुण्डलपुर	81
100.	19/04/2016	पूर्णमासी का चन्द्रमा	कुण्डलपुर	81
101.	20/04/2016	विश्वास करो मिलेगी मुक्ति	कुण्डलपुर	82
102.	21/04/2016	निद्रा देवी हो वश में	कुण्डलपुर	83
103.	22/04/2016	त्याग करें पुराने संस्कारों का	कुण्डलपुर	85
104.	23/04/2016	ध्यान रूपी पीन से करें प्रकाश	कुण्डलपुर	85
105.	25/04/2016	दवाई नहीं – परहेज जरूरी	कुण्डलपुर	87
106.	26/04/2016	सुनाना नहीं सुनना-धर्म श्रवण	कुण्डलपुर	88
107.	27/04/2016	आदर्श जीवन – प्रतिमा विज्ञान	कुण्डलपुर	90
108.	28/04/2016	कर्म का फल भोगना होगा	कुण्डलपुर	92